Printed by
PUNDIT KRISHNA GOPAL MISHRA
at the
B. L. PRESS
1-2, Machuabazar Street, Calcutta. Except pp. 1—62
Printed by Ramdhin Singh at the Vishvavinode Press, Azimganj.
AND
Published by V. J. JOSHI, Hony. Manager,
Jaina Vividha Sahitya Shastra Mala Office, Benares City.

जैन-विविध-साहित्य-शास्त्रमाला [८]

जैन लेख संग्रह।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त।

प्रथम खण्ड।

संग्रह कर्त्ता

पूरणचन्द नाहर, एम. ए., बि. एल.,

वकील, हाईकोर्ट; रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक सोसायटी बेंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार-उड़िसा आदि के मेंबर; विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता

वीरसंवत् २४४४

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही हैं। विशेषतः जैनियोंके सिलसिलेवार इतिहासके अभाव में इन्हों के लेखों का संग्रह वहुत ही आवश्यक है। इतिहास का वहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो वात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक वना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को वहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी वात है कि आज कल वहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टि भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूं, ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का वहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखनेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्गरेजी जर्नल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी घुस पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहां के लेख देखे विना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि इसका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूं। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूं, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण वहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से शीघ्र नष्ट हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित वातें लिखी रहती हैः—

१ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
३ । कुक्षिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।
५ । आचार्योंके नाम, शिष्यों के नाम, पट्टावली ।
६ । देश, नगर, ग्रामों के नाम । ७ । कारिगरों के, खोदनेवालों के नाम ।
८ । राजाओं के, मंत्रियोंके नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

उपरोक्त विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी भी सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संवत, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुज्ञ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरीतिसे पाया नहीं जाता है:—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि "ओसवाल" ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उपवंश [४] ऊकेश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओसवाल। लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक 'ओसवाल' हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्यों के नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें बिलकुल नहीं है। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसी बहुतसी कठिनाइयां मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नहीं गया है।

यह "लेख संग्रह" संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुज्ञ पाठक समझ सकते हैं; "नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।" अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और२ आचार्य, मुनि, विद्वान और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहांके जैन लेखों को प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना।

कलकत्ता
ई० स० १९१५

निवेदक—
पूरणचन्द नाहर।

सूचीपत्र ।

पत्रांक

अजिमगंज [मुर्शिदाबाद]

सुमतिनाथजीका मन्दिर १
पद्मप्रभुजीका ,, ... ३
नेमिनाथजीका ,, ... ४
चिंतामणिजीका ,, ... ५
संभवनाथजीका ,, ... ६,२१
शांतिनाथजीका ,, ... ७
सांवलीयाजीका ,, ... ८
राय बुधसिंहजी का घर दे० ... ... ९

बालूचर [मुर्शिदाबाद]

आदिनाथजीका मन्दिर ८
विमलनाथजीका ,, ... १०
संभवनाथजीका ,, ... १२
सांवलीयाजीका ,, ... १५
दादाजीकास्थान १७
रायधनपतसिंहजीका घर दे० ... ... १४
किरतचन्दजीका घर दे० ... ... १५

कठगोला [मुर्शिदाबाद]

आदिनाथजीका मन्दिर १७

महिमापुर [मुर्शिदाबाद]

जगत्शेठजीका मन्दिर १८

कासिमबाजार [मुर्शिदाबाद]

नमिनाथजीका मंदिर १९

दस्तुरहाट [मुर्शिदाबाद]

जीर्ण मन्दिर २१

पत्रांक

कलकत्ता

धर्मनाथ स्वामीका मंदिर ... ... [illegible]
महावीर स्वामीका ,, ... [illegible]
चंद्रप्रभुजीका ,, ... [illegible]
शीतलनाथजीका ,, ... [illegible]
माधोलालजीका घर दे० (कलकत्ता) ... [illegible]
माधोलालजीका घर दे० (मुर्शिदाबाद) ,,
जीवनदासजीका घर दे० ... ... ३१
पन्नालालजीका घर दे० ... ... [illegible]
आदिनाथजीका देरासर ... ... [illegible]

चंपापुरी [भागलपुर]

वासुपूज्यजीका मंदिर ... ... [illegible]

नाथनगर (भागलपुर)

[illegible]जीका घर देरासर ... ... [illegible]

भागलपुर

वासुपूज्यजीका मंदिर ... ... [illegible]

काकंदी [विहार]

सुविधिनाथजीका मंदिर ... ... [illegible]

क्षत्रिय कुंड [विहार]

महावीर स्वामीजीका मंदिर ... ... ,,

गुणाया [विहार]

श्रीमहावीरजीका मंदिर ... ... [illegible]

पावापुरी [विहार]

समवसरण ... ... [illegible]
जलमंदिर ... ... ,,
गांव मंदिर ... ... [illegible]

	पत्रांक
विहार	
मथियान महल्लाका मन्दिर	५२
चंद्रप्रभुजीका ,, ...	५४
आदिनाथजीका ,, ...	५५
राजगृह	
पार्श्वनाथजीका मंदिर	५८
विपुलगिरि	६४
रत्नगिरि	६५
उदयगिरि	६६
स्वर्णगिरि	६७
वैभार गिरि	,,
कुंडलपुर	
आदिनाथजीका मंदिर	७०
पटना	
पार्श्वनाथजीका मंदिर	७१
दादावाड़ी	८२
स्थूलभद्रजीका मंदिर	८२
शेठ सुदर्शनजीका ,, ...	८३
समेत शिखर	
ऋजुवालुका	८४
मधुवन	,,
टोंकके चरणों पर	८६
तेजपुर [आसाम]	
रायमेघराजजी का मंदिर	९३
म्युनिक [जर्मनी]	
जादुघर	९६

	पत्रांक
चिकागो [अमेरीका]	
डॉ० कुमार स्वामी	९६
इङ्गलेन्ड	
मे० लुवार्ड	,,
जयपुर [राजपूताना]	
व्यापारीओंके पासकी मूर्त्ति पर ...	९७
अजमेर [राजपूताना]	
वारली गाव से प्राप्त पत्थर	,,
बनारस [काशी]	
सुतटोला का मंदिर	९८
बहूजीका ,, ...	९९
पटनीटोलेका ,, ...	,,
चुन्नीजीका ,, ...	,,
रामचन्द्रजीका ,, ...	१००
प्रतापसिंहजीका ,, ...	१०२
कुशलाजीका ,, ...	१०१
सिंहपुरी [बनारस]	
कुशलाजीका मंदिर	१०३
मिर्जापुर	
पंचायती मंदिर	,,
धनसुखदासजीका ,, ...	१०५
दिल्ली	
चेलपूरीका मंदिर	१०६
नवघरेका ,, ...	१०९
चिरेखानेका ,, ...	११४
छोटे दादाजीका ,, ...	११७
हजारीमलजीका घर दे०	१२१



पत्रांक

अजमेर।

गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर १२४
सम्भवनाथजी का ,, ... १२७
दादाजीकी छत्री ,, ... १३३

जयपुर।

यति श्यामलालजीके पास मूर्त्तियों पर १३४
यति किशनचन्दजीके पास मूर्त्तियों पर १३५

जोधपुर।

महावीर स्वामीजीका मन्दिर १३६
केसरीयानाथजीका ,, ... १४१
मुनिसुव्रत स्वामीजीका ,, ... १४२
धर्मनाथजीका ,, ... १४४

दिनाजपुर।

चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर १४६

धुलेवा रिखभदेव (मेवाड)

केसरीयानाथजीका मन्दिर १४८
दादाजीकी छत्री १५१
पगलीयाजी ... ... ,,

पालीताणा (काठियावाड)

मोतीसुखीयाजीका मन्दिर १५२
शेठ नरसिंह केशवजीका ,, ... १५३
शेठ नरसिंह नाथाका ,, ... १५४
शेठ कस्तुरचन्दजीका ,, ... ,,
गोडी पार्श्वनाथजीका ,, ... १५५
यति करमचन्द हेमचन्दका ,, ... १५८
बड़ा मन्दिर (गांवमें) ,, ... ,,
दिगंबरीका पञ्चायती ,, ... १६०

पत्रांक

[illegible] पर्वत।

साकरचन्द प्रेमचन्दकी टुंक ... ... [illegible]
प्रेमाभाई हेमाभाईकी ,, ... [illegible]
प्रेमचन्द मोदीकी ,, ... ,,
शेठ बालाभाईकी ,, ... [illegible]
शेठ मोतीशाकी ,, ... [illegible]
मूल (आदिश्वरकी) ,, ... ,,

राणकपुर।

आदिनाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]

सादडी।

पार्श्वनाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]

नाकोडा।

जैनमन्दिर ... ... ,,

बालोतरा।

शीतलनाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]
केसरीयानाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]

वाडमेड़।

बड़ा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ... ... [illegible]
यति इन्द्रचन्दजीका उपाश्रय ... ... [illegible]
गोडीजीका ,, ... ,,

मेडता।

आदिनाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]
पार्श्वनाथजीका मन्दिर ... ... [illegible]
वासुपूज्यस्वामीजीका ,, ... [illegible]
धर्मनाथजीका ,, ... ,,
आदिश्वरजीका नया ,, ... [illegible]

	पत्रांक
चिन्तामणिपार्श्वनाथका ,, ...	१८७
कडुलाजीका ,, ...	१८६
महावीरजीका ,, ...	,,
तपगच्छका उपाश्रय	१९१

ओसिया।

महावीर स्वामीका मन्दिर	१९२
सचियाय माताका ,, ...	१९८
डुंगरीके चरण पर	१९९

पाली।

नौलखा मन्दिर	,,
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	२०४
लोढारो वासका ,, ...	२०५
शान्तिनाथजीका ,, ...	,,
सोमनाथजीका ,, ...	,,

नाडोल।

आदिनाथजीका मन्दिर	२०६
ताम्र शासनमें	२०८

नाडलाई।

आदिनाथजीका मन्दिर	२१२
नेमिनाथजीका ,, ...	२१७

कोट सोलंकी।

जैन मन्दिर	२१८

घाणेराव।

जैन मन्दिर	,,

घेलार।

आदिनाथजीका मन्दिर	२१९

फलोदी।

बड़ा जैन मन्दिर	२२१

	पत्रांक

केकिंद।

पार्श्वनाथजीका मन्दिर	२२३

सेवाडी।

महावीरजीका मन्दिर	२२६

सांडेराव।

शान्तिनाथजीका मन्दिर	२२८

नाना।

जैन मन्दिर	२२९

छालराई।

जैन मन्दिर	२३१

हठुंदी

महावीरजीका मन्दिर	,,
माताजीका ,, ...	२३३
खण्डहरमें मिला हुआ पत्थर पर	२३४

जालोर।

महावीरजीका मन्दिर	२४१
चौमुखजीका ,, ...	२४३
तोपखानामें	२२८

हरजी।

जैन मन्दिर	२४२

जूना।

जैन मन्दिर	२४४

जूना वेढा।

जैन मन्दिर	२४५

नगर गांव।

जैन मन्दिर	२४७

	पत्रांक
सांचोर	
जैन मंदिर	२४८
रत्नपुर	
जैन मंदिर	२४८
विलाडा	
जैन मंदिर	२५०
बोहिया (मारवाड़)	
जैन मंदिर	२५०
कोटार [गोड़वाड़]	
जैन मन्दिर	२५१
किराडू	
कुमारपालका जीर्ण मन्दिर	२५१
सुंधा पहाड़ी	
जैन मन्दिर	२५३
घटियाला	
जैन मन्दिर	२५६
पिंडवाडा	
जैन मन्दिर	२६२
वीरवाडा	
जैन मन्दिर	२६५
वसंतगढ़	
जैन मन्दिर	२६५
पालडी	
जैन मन्दिर	२६५
कालाजर	
जैन मन्दिर	२६६
कामद्रा	
जैन मंदिर	२६६
उथमा	
जैन मन्दिर	२६६

	पत्रांक
वचीणा	
जैन मन्दिर	[illegible]
छाज-नीतोडा	
जैन मन्दिर	[illegible]
नोदिया	
जैन मंदिर	[illegible]
कोटरा	
जैन मंदिर	[illegible]
वरमाण	
जैन मन्दिर	[illegible]
लोटाना	
जैन मन्दिर	[illegible]
माकरोरा	
जैन मन्दिर	[illegible]
धवली	
जैन मंदिर	[illegible]
सीवेरा	
जैन मंदिर	[illegible]
जीरावल पार्श्वनाथ	
जैन मंदिर	[illegible]
अंजारा पार्श्वनाथ	
जैन मंदिर	[illegible]
कापडा पार्श्वनाथ	
जैन मन्दिर	[illegible]
सलवर	
जैन मंदिर	[illegible]
पटना म्युजियम	
पाषाणके मूर्ती पर	[illegible]

प्रतिष्ठा स्थान ।

	लेखांक
अजमेर … … … …	५६६
अजिमगञ्ज (मुर्शिदाबाद) …	८५।७६।१४२
अतरी … … … …	४७
अलवर … … … …	१०००
अघार … … … …	५३२
अहमदाबाद …	६६।७१।११२।३५६।३६०।३७२।३८२ ४४४।५२६
अहिल्लाणी … …	४४८
आगरा …	२९५।३०७।३०६।३१०।३११ ३२२।४२३।५०६
आमेण … …	१२५
आरामपुर … …	३२७
आवरणी … …	७६८
आसलपुर … …	८५६
इडर … …	६२७
इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) … …	५२६
उदयगिरि (राजगृह) …	२५३।२५४।२५५
उदयपुर … …	६४५।७४४
उन्नतनगर … …	६८७
उपकेश (ओसिया) … …	१३४
उमापुर … …	४८९
ऋजुवालुका … …	३३६
कड़ी … …	२५
कमलमेर … …	४८३
कर्पटहेटक … …	६८१
कलकत्ता … …	८७
कलधर्मा …	६७४।६७५।६७६

	लेखांक
कलागर (कालाजर)… …	६५६
काकंदी … …	१३२
काकर … …	४८१
कायद्रा … …	४७१
कालधरी … …	६४
कालुपुर … …	६६७
कास्मावजार (मुर्शिदाबाद) …	८१।८४
फीराट कूप … …	६४२
कोठारा … …	६५२
कोरटा … …	१०६
खहेडा … …	८९६
खुदीमपुर … …	२२१
गणवाड़ा … …	६४७
गंधार …	३९१।६०८।६५३।७६६
गुनशिला …	१७७।१७८।१७९।१८७
गुब्बर ग्राम (वड़गांव) … …	२३१
ग्रेहली … …	३
गोरखुंया … …	५५४
गोलकुंडा … …	७५२
गोलीया … …	४७६
चंपकदुर्ग … …	८५०
चंपकनर … …	४०४
चंपानगर … …	१४२।१६५
चंपापुरी …	१३७।१४६।१५८
चिमणीया … …	५१०
चुंपरा ग्राम … …	१२४
जयनगर … …	१६३
जल्पाद … …	२०९
जवाच … …	१६

	लेखांक
जाणांधारा	२८३
जालोर	८३७।६०५
झावरनगर	७१५
जावालीपुर	८६६।६०७
जीरावला पार्श्वनाथ	६७३।६७६
जीर्णदुर्ग	६०७
जैनगर	५१६
जोधपुर	६१२।८२८।८३८
झूंझणू	१२१
डिंडिला ग्राम	९६६
ढेढेया	५६८
तिज़ारा	४२१
दंतराई	७४
दधालीया	४६६
दिल्लि	५२७
दिवसा	६२४
द्विपयन्दर	१३०
देवक पत्तन	६६६।६७०
धंधूका	६
धमडका (कच्छ)	१२२
धांदू	४२३
धार	६२१
धुलेवा	६२७।६५६
नडुल ...	८३७।८३६।८४५।८६२
नड्डूल	६४२।६४३
नडूल डागिका ...	८४१।८५२।८५६।८५७
नडुलाइ ...	८५४।८५५।८५६।८५८
नाडलाई	८४७
नन्दकुलवती	८५२

	लेखांक
नन्दियाक (नोदिया)	[illegible]
नल	[illegible]
नलीतपुर	[illegible]
नागपुर	[illegible]
नाणा	[illegible]
नापलीया	[illegible]
पत्तन ...	[illegible]
पाटण	[illegible]
पल्लिका ...	[illegible]
पाल्लिका	[illegible]
पाली ...	[illegible]
पल्यपद्र	[illegible]
पाटलिपुत्र	[illegible]
पाटलिपुर ...	[illegible]
पाडली	[illegible]
पाडलीपुर	[illegible]
पडलीपुर	[illegible]
पटना	[illegible]
पाटडलि (पानड़ी)	[illegible]
पाटडी	[illegible]
पानविहार	[illegible]
पावापुरी	[illegible]
पींडरवाड़ा ...	[illegible]
पींडवाड़ा ...	[illegible]
प्रयाग	[illegible]
फलवर्द्धिका	[illegible]

लेखांक

बम्बई ३७७, ३७४
बरागाम २१७
बहादूरपुर ४८५
बाबुविब ६३९
बालुचर (मुर्शिदावाद) ... ३१, ३२, ४५, ४६, ३३८
बाहडमेर ६७८
बीकानेर १३८
बीलाडा ९२७
चूवृयाणा १११
बेगमपुर (पटना) ३२२, ३३३
भट्टनगर ५०
भरतपुर ६६२
भाणावट ७७१
भारठा ६६८
भिन्नमाल ५५१
भिल्लमाल ६५७
भुडपद्र ६३८
मेया १०४
मंडपदुर्ग ११८
मंडपाचल ७०७
मंडोवर ६४५
मंडुपे ४२०
मनेर ३२१
माफ्रोडा ६७७
माडपा २४१
मानंदपुर १६६

लेखांक

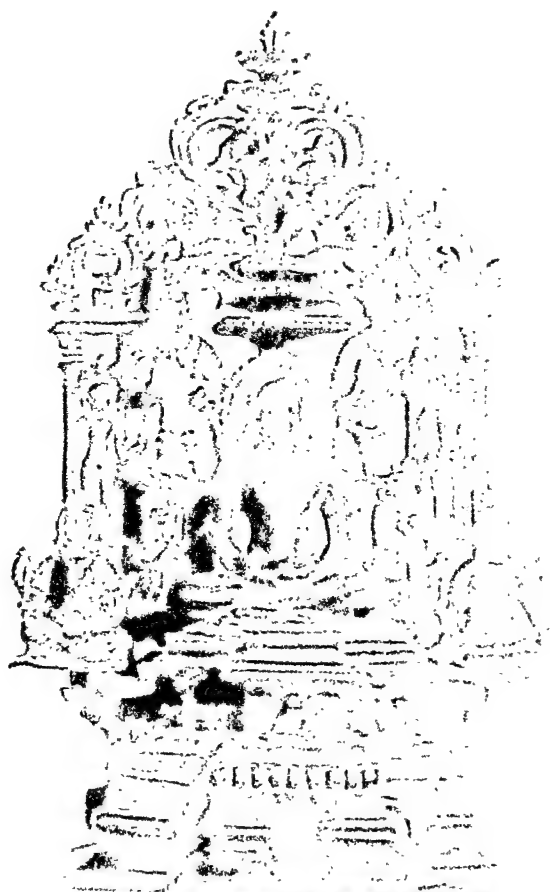
मानपुर ३०७
मालवक ११
माल्यवन १५२
माल्हेणसु ९२२
मिथिला १६६, १६८
मिरजापुर २३३
मुंजिगपुर ८४६
मुर्शिदावाद ... ५६, ६७, १३८, १४७, ६९६
मेवता (मेडता) ... ४४५, ५४३, ७५०, ७५४, ७८३,
७८४, ७८७, ८२६, ८२६, ९०६,
मेलीपुर ६६५
मोढ़ ७६५
मोरकरा ८४२
रणसण ५७४
रतनगिरि (राजगृह) ... २४६, २५०, २५१, २५२
रत्नपुर ६२५, ६३६
राजगृह ५४०
राजपुर ५३६
राणपुर ७१०, ७१३, ७१४, ७१६
रोहिन्सकूप ६४५
लच्छवाट १७४
लींबड़ी १८, २८५
वगुद्रा ११७
ववणोर २९४
वडनगर ५७७
वरजा ६३२
वल्लहद ५६१

लेखांक

वलहारी ६१३
वसंतनगर ३६६
वसंतपुर ६५४
वहडा ६२३, ६२५
वाकपत्राकानगर ७४३
वायसीण (वघीणा) ६५९
वाराणसी २३५, ३४५
वासहड ८८०
विक्रमनगर ७६५
विक्रमपुर ६२७
विपुलगिरि (राजगृह) २४५
विपुलाचल (राजगृह) ... २२६, २४६, २४७, २४८
वीजापुर ६०१
वीरमग्राम ८४६
वीरमपुर ७२३, ७२४, ८२२
वीरपल्ली ६६६
वीरवाडा ६५३
वीसलनगर ६९८, ६७७
वीसाडा ८२३, ८२४
वृमुज २४
वेदर १०५
वैभारगिरि (राजगृह) ... २५७, २५८, २६०, २६२
२६४, २६५, २६६, २६७
व्यवहारगिरि (राजगृह) ... २६१, २६२, ५२५
शंडली ७५५
शमीपाटी ८७३, ८७४, ८७५
शीलतंदर्द्धी ८५६
संडेरक ८८१, ८८२, ८८३, ८८४
सत्यपुर ६३२

लेखांक

सत्तीपुर ... ... [illegible]
सद्दउलिया ... . [illegible]
सम्मेदशिखर ... ... [illegible]
स्वर्णगिरि (जालोर) ... ... [illegible]
सहयाला ... ... [illegible]
स्तंभतीर्थ २५, ११४, ६०५, ६५०, ७१०, ७११, [illegible]
सांचोरनगर ... ... [illegible]
साहजानाबाद (दिल्ली) ... ... [illegible]
सिकरा ... ... [illegible]
सिरणा ... ... [illegible]
सिंहपुर ... ... [illegible]
सीणोत ... ... [illegible]
सीणुग ... ... [illegible]
सीतामढ़ी (मिथिला) ... ... [illegible]
सीवेरा ... ... [illegible]
सीरोही ... ... [illegible]
सेरपुर (ढाका) ... ... [illegible]
हस्तिकुंडि (हथुंडि) ... [illegible]
क्षत्रियकुंड ... ... [illegible]





Metal Image [illegible]

[illegible]

JAIN INSCRIPTIONS



जैन लेख संग्रह।

प्रान्त – पूर्व।

जिला मुर्शिदाबाद। स्थान अजिमगञ्ज।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर *।

धातुओं के मूर्ति पर।

[1]

ॐ ॥ श्री सरवाल गच्छे असासूकेन कारित ॥ संवत् ११[illegible] ×।

---

* नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है। [illegible] श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलाबचन्दजी तत्पुत्र [illegible] राय [illegible] नाहार बाहादुर हैं। पूर्व मन्दिर गङ्गास्त्रोतसे नष्ट हो जानेसे [illegible] यह नवीन [illegible] संवत [illegible] में निर्माण करवाया है। प्रथम मन्दिरका लेख– ॥ श्री ॥ सं १९१२ मिति वैशाख सुदि ५ [illegible] श्री जिन भक्ति सूरि शाखायां उ० श्री आनन्द वल्लभ गणि। तत् शिष्य पं। म। [illegible] मुनि [illegible] गञ्ज वास्तव्य नाहर श्री खड्गसिंहजी तत्पुत्र श्री उत्तमचन्दजी तद्भार्या श्री मयाकुमर [illegible] श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संघाय समर्पितश्च विधिना सता ॥ सं। सु। म। श्री जिन सौभाग्य सूरिणां विजय राज्ये ॥ श्री रस्तुः ॥ कल्याणमस्तुः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥

× यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्तिके पीछे खुदा हुआ है, [illegible] मालूम है। [illegible] दखल करनेके पूर्वमें यह मूर्ति यहां पर थी।

[2]

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गच्छे प्रग्वाट ज्ञातीय व्य० ऊदा भार्या-चत्त तत्पुत्र जोला भार्या डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मूंडनेन श्री गच्छेश श्री मेरुतुंग सुरीणामुपदेशेन भ्राता श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

[3]

संवत १४७९ वर्षे पोष वदि ५ शुक्रे मेहूली वास्तव्य श्रीमाल ज्ञाती श्रे० प्रतापसीह भा० सोहगदे सुत डूदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं पूर्णिमा गच्छे प्रतिष्टितं श्री सूरि जिनवल्लभ सूरि ।

[4]

सं० १५१० व० फा० शु० १२ ऊकेश वंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रतना सु० साजण भा० जइसिरि पु० पेढा भा० कणसिरि पेता भा० लषमसिरि पुत्र ३ कालु खेमधर देवराज भा० चांदू सा० हापाकेन भा० ३ पूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पट्टः कारितः तपा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिभिः प्रतिष्ठितः ।

[5]

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञाती नाहर गोत्रे सा० लेढा पु० जावा भा० सोहिगि पु० चांपा सालू लादा सहितैः पितु श्रेयसे श्री श्रेयांस नाथ बिंबं का० प्रति० श्री धर्मघोष ग० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे भ० श्री साधु रत्नसूरिभिः ।

[6]

संवत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० व्यव० आका भार्या रतनदे सुत लांबाकेन भा० मानू नापा निमि । श्री शांतिनाथ बिंबं कारा० प्र० पिप्प० श्री मुनि सिंघु सूरि पदे श्री अमरचंद्र सूरिभिः ॥ नापलिया ग्रामे ।

[7]

संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे। सी० श्री राजा भा० रजमलदे पु० देला ठाकुर धना हाथी लीवा हाथा भा० हरपमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतैः श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं श्री संडेर गछे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० क्षेमासुंदर पट्टे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

[8]

संवत १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि २ बुधे ऊकेश वंशे लूणीया गोत्रे साः पीमा पुत्र साः सधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः खरतर गछे।

[9]

संवत १५१९ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीमाल ज्ञातीय सा० लाईयाकेन भार्या गांगी पुत्र हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रमाई श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः। धंधूका वास्तव्य ॥

[10]

संवत १५५८ वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ ओकेश ज्ञातीय भारडा सुत मेघा भार्या पदमाई श्रेयसे भणसाली पताकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनहंस सूरिभिः।

[11]

संवत १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्त्तमाने मालवक देस ॥ उपकेस ज्ञातौ सा० देवसी भा० देसा पु० सा० सागा भा० रूपलं पुत्र जसपाल भा० जसमी पुत्र रत्ना बिंबं प्रतिष्ठितं। तपा गछे श्री हेमवल (विमल) सूरिभिः ॥

[12]

संवत १९०० मिति आषाढ़ सित ९ गुरौ श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर भट्टारक गच्छेश भ० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं च श्रीमाल वंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य भार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थं ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल ज्ञाती लिगा गोत्रे समदरीया उडकेण० सुहडा भा० सुहागदे पु० कम्माकेन भा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

[14]

संवत १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ उंसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० सरवण भा० राणी सुत सा० सिंघा भा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना भार्या बिरणि सुत सा० पुनपाल सा० सोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत १५५३ वर्षे वैशाख सुदि ७ प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० पेता भार्या मदी सुत व्य० भोजाकेन भा० राजू भ्रातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

[16]

संवत १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय संघी खर गोत्रे

दो० स० केसाकेन भा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिभिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उशवाल ज्ञातीय भण्डारी गोत्रे सा० गेल्हा पु० सो॰ पी भा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अभिनंदन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गछे भ० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ।

[18]

संवत १५२५ वर्षे चै० व० ११ बुधे लांवडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० पीमसी भा० वानू पुत्र व्य० गणसा भा० वाकू पुत्र व्य० केल्हाकेन भा० मानू पुत्र भा० धूपा पुत्र नेपादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः ॥ ● यमगत चांद्रगरीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विवंदणीक ॰ गछे प्रतिष्ठा कारिता । ● (अक्षर अस्पष्ट हैं)

[19]

संवत १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दलीः वंश डुङ्गर गोत्रे ठ० पा[illegible] पु० ठ० धर्मसी ठ० उदयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइत सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सूरि[illegible] श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[20]

संवत १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० पता भा० वाल्हादे पु० [illegible] भा० पदमू सु० हिरा गिरा सांगा सहजपा युतेन श्री पद्मप्रभु बिंबं कारितं उपकेश गछे ककुदा चार्य संताने भ० श्री देवगुप्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[21]

संवत १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य सा० सांडा भार्या लषमाइ सुत वीर पासेन भार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गछाधिराज श्री हीरविजय सुरिभिश्चिरं नंदतात् ।

[22]

॥ रौप्य के मूर्त्ति पर ॥

संवत १९३३ का जेष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिर्थीका उस वंशे छुधेड़िया गोत्रे बाबु हर्षचंद तत्पुत्र बाबु बिसनचंद्रेन कारितं पुनमिया विजय गछे श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री संभवनाथजी का मंदिर ॥

[23]

संवत १५११ वर्षे ज्ये० सु० ३ गुरौ दिने ऊ० ज्ञातीय श्री वरलड्ड गोत्रे नाथु संताने राजा भार्या राजलदे सुत सह सावलू राणा हुदा श्री मल्लयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र प्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहद्गच्छे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिभिः शुभं ॥

[24]

संवत १५४६ वर्षे माघ सु० १० रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० भूभच भार्या सं० भरमादे सुत सं० समरसी भार्या धनाइ सु० रा० अर्जन केन भार्या अहिवदे पु० सं० राणा शाणा प्र० कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारि० प्रति० श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिभिः । बुगुज ग्राम ॥

[25]

संवत १५६३ वर्षे माह वदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघु शाखायां । व्य० केसव भा० नरमी सुत व्य० वीका भा० संपू । भ्रा० व्य० आलाकेन भार्या अमरादे भातृ व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे । कुतबपुर वास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

[26]

संवत १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे ऊसवाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे साह शिवदास जिनदासकेन श्रेष्ठे भार्या भाई नारिंग सुत भ्रातृ राजपाल सहितेन मातृ नारिंग श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारापित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे नंदिवर्धन सुरि पदे नयचंद सुरिभिः ॥

[27]

संवत १७०० वर्षे फागुण सु० १२ ---------- गच्छे भट्टारक सुकीर्ति करे- सात् अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सं । दोर राज भार्या सेदल पुत्र सं० वेरह राज भार्या जीर्ण पुत्र लालूमणी नित्यं प्रणमंति ॥

[28]

॥ श्री शांतिनाथजी का मंदिर ॥

संवत १५१० वर्षे पौ० सु० १५ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय फ० शिवा भा० प्रीमलदे सुत फ० रामाकेन भा० आसु प्रमुख कुंटुब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सुरिभिः ॥

[29]

॥ राय बुधसिंहजी दुधेड़िया का घरदेरासर ॥

संवत १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वंशे सेठि गोत्रे श्रे० लीधरेण भा०

मिरी सुलूणी पु० थावरसिंह । जटादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री खर तर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिभिः ।

॥ श्री सांवलियाजी का मंदिर – रामवाग ॥

[30]

संवत १५४६ माघ वदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासू भा० लाडो नाम्न्या पु० सिवराज भार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिभिः ॥

जिला – मुर्शिदावाद । स्थान – वालूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परका लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत् विक्रमादित्य राज्यात् संवत १८४५ मिते । श्री शालिवाहन शकाब्दात्के १७१० प्रवर्त्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे श्री तपगच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय जैनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर वास्तव्य लजलानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्म्मभार धुरंधर साहजी श्री केशरी सिंहजी तस्यभार्या धर्म कर्मणि रता बीबी सरूपोजी पं । श्री भावविजय गणिरुपदेशात् । स्वगृह जिन बिंवं स्थापनार्थं ॥ वालोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं० भाव विजय पं० गंभीर विजय गणिभिः । यावल्लवणसुमेरोद्रि । यावत्रैलोक्य भास्वरं । तावत्तिष्टतु प्रासादं निर्विघ्नन्तु सुनिश्चलं ॥ १ ॥ लिपिकृतं पं० रूपविजयेन ।

[32]

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुभांबर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर दिनकृ-योर्जिन ज्ञान लक्ष्मीः ॥ यस्योपदेश वचनाच्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो बभूव १ ॥ तत्पट्टे क्रमतोरवीव विजय जैनेंद्र सूरीश्वर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय परो पाल्हणपुर डूंगके ॥ श्री संघेश सहायता शुभमतिः श्री केशरी सिंहक । स्तरत्न्या जिन राज भक्ति वशतः कारापितोयं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरीश संघाटक गुणाकरः । वानरकोनाम सुमान्यः श्री ऋद्धि विजयो भवत् ॥ ३ ॥ तच्छिष्य भाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्यं प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुभतः ॥ ४ ॥ भद्रं भवतु संघस्य भद्रं प्रासाद कारके तथा भद्रं तपा गच्छे भद्रं भवतु धर्मिणां ॥

[33]

॥ धातुओंपरका लेख ॥

सवत १४७० वैशाख सुदि ५ जार वडिया गोत्रे । सा० नोंदा सुत । सा० पदाकेन पु० फासु रजनादि सहितेन स्वचार्या पदम श्री पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं श्रीहेमहंस सूरिभिः

[34]

संवत १५२३ वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत नरसिंह श्रेयसे भ्रातृ हीराकेन भ्रातृज कुंरपा सुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥

[35]

संवत १५२७ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्रे० नेता भा० नेतलदे पुत्र पूना भा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट ऊगिंग पोमा सुतेन कारा श्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० श्री साधु पुर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री विजयचंद्र सूरिभिः कडी वास्तव्यः ॥

[36]

संवत १५३४ वर्षे — — शु० ३ दिने सा० अरसी भार्या रानूं पुत्र सा० लूणाकेन भार्या टीमू प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्टितं तपा गछे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः पान विहार नगरे ॥

[37]

संवत १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोल्हा भा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कारंट गछे श्री — — सूरिभिः।

[38]

संवत १५७० वर्षे आषाढ़ सुदि २ रवौ श्री श्रीमालान्वये डगडा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौताल्हण अजय राजा रायमल्ल आसधीर आजा भार्या केली पुत्र सा० योगा ऊल्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमल्ल पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमल्ल पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी। सा योगा पुत्र महिपाल ठा० ऊल्हा भार्या ऊल्हणदे पुत्र सहसमल्ल सीहमल्ल साह आसधर भार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन भा० शकतादे पुत्र पेता जइतमल। पेता पुत्र भैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गछे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रभ सूरिभिः।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

[39]

संवत १४७२ वर्षे ज्येष्ट वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीहा पु० डाड़ा पुत्र साटा हारा रग सुकनाख्या डाडा पितृव्य सा० रूल्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० वृहद्गछीय श्री अमरप्रभ सूरिभिः ॥ शुभं भवतुः।

[40]

संवत १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा भा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीहन भा० लाल सुत गोइंद गोगा प्रमुख कुटुंब युतेन नाकुम नाइगाम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री ऊकेश वंशे ललवाल गोत्र सा० लाला भा० ललतादे पुत्र सा० जावडेन भा० जवषादे पुत्र नयपाल तेजा पेला लीला रामपाल भार्या आंवू पुत्र लोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिभिः ॥

[42]

ॐ संवत १५३६ वर्षे श्री खरतर गच्छ नाहीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पासद भा० चकू भा० नीष्पा रा—सटकया सपनीसू प्रमुख कुटुंबिन्या श्री आदिनाथ बिं० का० प्र० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय ढोर गोत्रे सा० धरमराज भार्या धीरू सुत सा० सतीदास भार्या बा० ईद्राणी ताभ्यां पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खर-तर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः। श्री जिनभानु सूरीणामुपदेशेन। जलाइः ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये।

[44]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि। आसोज सुदि ९ तिथौ बुधवारे रू। बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र लछमीपत्त चि। धनपत्त तन्नातिब श्री आदिजिन बिंबं कारापितं बा० सबाधान प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, वीर जिनं पञ्चतिर्थी। मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पत्थरोंपरका लेख ॥

[45]

संवत १८४४ मिते वैशाख सुदि ५ रवौ। श्री बालूचर पुरे। भ० श्री जिनचंद्र सूरि जी विजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० क्षमाकल्याण गणिः। तच्च कुमारादि युतानामुपदेशतः श्री मक्सुदाबाद वास्तव्य समस्त श्री संघेन श्री सम्भव जिन प्रासादः कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना। सतां कल्याण वृध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चैत्य वर्णनं। निधान कल्पैर्नवनिर्मनोरमे। विशुद्ध हेम्नः कलशैर्विराजितं ॥ सुचारु घंटावलि कारणाकृति। ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चलत्पताका प्रकरैः प्रकाम। माकारयन्नूनममंनिन्द्यसत्वान् ॥ निषेधयन्निश्रित दुष्टबुद्धीन्। पापारमनश्चापततः कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीभि। भव्यात्मभिर्न्नुरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्य प्रवरे पुरेदो। जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोंके मूर्त्तिपर।

[47]

ॐ संवत १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ ऊकेश वंशे डींक गोत्रे म० सिवा भा० हर्षु पु० म० हीराकेण भा० रङ्गादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५१७ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठ० साधू भार्या धर्मिणि पुत्र स० अमर सोलेन पुत्र उयसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन पद्मराजादि युतेन स्वश्रे:

पसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्री ऊपकेश वंशे सं० देल्हा भार्या रूल्हादे पुत्र रतना सुश्रावकेण भार्या मेघू पुत्र जयकरणा पौत्र पूना सहितेन स्वश्रेयसे श्री अंचल गच्छेश्वर श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १० शुक्रे ऊपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर पुत्र सं० कालण भा० कपूरी पुत्र सं० क्षेमपाल भा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन भा० पाल पुत्र देवदत्त भार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री ऊपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः श्री भट्टनगरे ॥

[51]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ट व० १ शुक्रे ऊपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा भा० कपूरी पु० सा० आसा भा० नाऊं पु० हर्षा भा० मनी भा० साऊआ रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी निमि० श्री वासुपूज्य बिंबं ऊपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[52]

ॐ संवत १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० गांगा पु० सुजा पुत्र पु० सहिराज भा० रमाइ आविकया श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणं भूयात् ।

[53]

सं १५३४ वर्षे ऊपकेश ज्ञातीय बांठ गोत्रे सं० ... भा० ... पु० ...

भगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे वैशाख बदि ६ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाल्हा पुत्र म० पांचा भार्या बाइ देऊ पुत्र म० नाथा भार्या श्रा० नायी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज भीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कुतब पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपट्टे श्री सौभाग्य नन्दि सूरिभिः श्री पत्तन वास्तव्यः ॥

[55]

सं० १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जेठा भा० मल्हाई पुत्र सोनाकर भा० वाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि रत्न सूरिणा-मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्त्तिपर ॥

[56]

संवत १९०३ शाके १७६८ प्र। माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मक्सुदावाद वास्तव्य उसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां साह् निहालचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ जिन बिंबं कारापितं। खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं। तपा सागर गच्छे।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर।

[57]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी दूगड़ भार्या महताब कुंवर चंद्रप्रभ पञ्च-तीर्थीका। उ। सदा लाजेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९४३ आषाढ़ शुक्ल १० आत्मनः कल्याणार्थं।

किरतचन्दजी सेठिया का घरदेरासर—नावडगोला।

[58]

सं० १५३३ वैशाख वदि ४ प्राग्वाट व्य० अपा सा० माकडी पुत्र व्य० नरसीहेन भा० पद पु—साल्हादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर—कीरतबाग।

[59]

पाषाण के मूर्त्तियोंपर।

॥ श्री सं० १८३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी शिष्य वेलजी तत्कानामुपदेशेन। उंस वंश गांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी तत्पुत्र सा० रूप चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा उंस वं० गद्दलड़ा गोत्रे जगत्सेनजी श्री फतेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री महापार्श्वनाथ बिंबं कारापितं। प्रतिष्ठितं च श्री सूरिभिः श्री भानुचंद्रेणेति आचंद्रार्कचिरं नन्दतात्जगद् जूयाच्छ्रियं।

[60]

॥ श्री सं० १८३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी शिष्य वेल जीत्कानामुपदेशेन उंस वं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन तत्पुत्र सा० रूप चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा उंस वंशे गद्दलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फतेचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं। प्र० सूरि श्री भानुचंद्रेणेति जग जूयाच्छ्रियं सदा॥

[61]

पाषाणके चरणोंपर।

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रवासरे उंस वंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द जी तद्भार्या बाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यदिन्न गणधर पादुका कारापितं ।

[62]

सं० १९३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा० श्री उदयचंद्र जी तत्धर्मपत्नी बाइ अजबोजीकेन श्री वासुपूज्य प्रथम सुभुम गणधर पादुका कारापितं ।

[63]

सं० १९६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुलाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां चरण स्थापनं श्री सङ्घाग्रहेण श्री जिनहर्ष सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्त्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द भा० राजू पुत्र नाथू भार्या रूपिणि भातृ—नाल्हा केन भार्या लीलू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्यः ठ ॥ कालधरी ॥

[65]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरू रत्नीश्राण गोत्रे लुंकड़ ज्ञातीय दोसी ठाकुर सी सा० नाऊ रूपी सुत दोसी बालाकेन इरपाल दासा पांगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं लुंकड़ गच्छे श्री सिवदत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीलकुञ्जर गणि ।

[66]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० गोल्हा भा० नाऊ सु० सा० साजण भा० मदोअरि सु० सा० लटकण भा० कुराइ सु० सा० सोम सा० पासा

सहसारुयैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्टः पूर्णिमा पक्षे श्री गुणरत्न सूरीणामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितश्च विधिना श्री अहमदाबाद नगरे।

श्री दादास्थान का मन्दिर।

पाषाण के चरणोंपर।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत १८२१ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय जी श्री १०८ श्री समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन जी [illegible] पंडितोत्तम प्रवर श्री ७ श्री भीमजी श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० [illegible] चन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रभावक कातेला गोत्रे साहजी श्री [illegible] जी [illegible] मोतीचन्द जी श्री मत् वृहत खरतर गच्छे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूड़ामणि [illegible] श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०७ श्री जिनकुशल सूरि [illegible] राणां पादुका कारापिता मकसूदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिभिः ॥ [illegible] ।

[68]

सं० १८७६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ [illegible] श्री [illegible] जं० । यु० । भ० । श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय [illegible] प्रधान [illegible] निधान । श्री महुपाध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर [illegible] साहजी दूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधसिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रताप[illegible] प्रतिष्ठितं श्री रस्तुः कल्याणमस्तुः ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर — [illegible] ।

[69]

ॐ संवत १५[illegible] वर्षे पोष वदि १० गुरौ श्री [illegible]

सुतेन सह सायरेण स्वश्रेयसे श्री जीवत्स्वामि श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः शुभंभवतु ।

[70]

सं० १५३० वर्षे माघ सुदि ४ शुक्रे सांबोसण वासि प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सोना भा० माऊ पु० व्य० नारद बंधु व्य० विरूआकेन भा० वील्हणदे पु० देधर मेघा साइयादि कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः प्र

[71]

सं० १५०३ शाके १७६७ प्रवर्त्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञाती वृद्ध शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह त्रिसंघजि तत्भार्या रुपमणी स्वश्रर्थे श्री आदिश्वर जिन बिंबं भरापितं श्री शांतिसागर सूरिभिः प्र० ॥

श्री जगतसेठजी का मन्दिर — महिमापूर ।

[72]

सं० १५२२ वर्षे माघ वदि १ गुरौ प्रा० ज्ञा० म० जेसा भा० सूरी पुत्र सर्वणेन भा० रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना श्री विजयचंद्र सूरिभिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ व० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० हीरा भा० रूपादे पुत्र व्य० देपा भा० गीमति पु० गांगाकेन भा० नार्यी पुत्र मेरा भातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । पींडरवाड़ा ग्रामे मुंडलिया वंशे श्रीः ।

[74]

सं १५७९ वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश ज्ञातौ चजरि गोत्रे साधा माल्हादे साह पासड भा० हापू पु० पेथाकेन भा० जीका पु० २ देपा इत्यादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्टितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने भ० श्री सिद्ध सूरिभिः दन्तराइ वास्तव्यः।

[75]

स्फटिक के बिंब पर।

सं १९१० व० ज्ये० सु० १ श्री स्तम्भ तीर्थ वा० उकेश ज्ञा० गांधि गोत्रे प—सी मोतीचन्द भा० शिवा श्री कुन्थुनाथ बिंबं प्र० श्री विजयानन्द सूरिभिः। तप (नय) गच्छ।

[76]

रौप्यके मूर्त्ति पर।

सं० १९९६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथौ। ओसवाल वंशीय श्रेष्ठ श्री माणिकचन्दजी तस्य पत्नी माणिक देवी प्रतिष्टितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन बिंबं चिरं जयतात् ॥ श्रेयोस्तु ॥ भद्रं भवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमबजार ॥

[77]

धातुयोंके मूर्तिपर।

सं० १४८० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपकेश ज्ञातीय स्वावच्छाग गोत्रे सा० आमा भा० वाछि पु० काजू नाहू भा० रुपी पु० खेमा नाल्हा सहित श्री नमीनाथ बिंबं का० पुण्यार्थं पु० आत्मा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः।

[78]

सं० १५२९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्रे श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा भा० पुनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्त्ति और चरणपर।

सम्वत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मुलसंघ भट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल ---।

[80]

॥ सं० १७५९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पादुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र लषमीपतिकेन।

[81]

सम्वत् १७०० वर्षे मिती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंडित मुनिभद्र गणि वरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः --- कासमावाजार --।

[82]

सं० १७०१ मिति आषाढ़ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पादुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः। श्री पार्श्वचंद्र सुरि गच्छे।

[८४]

॥ सम्वत १८६७ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि ९ शुभदिने बुधवारे श्री जिनकुशल सूरिजी [illegible]
सद्‌गुरूणां चरणन्यासः कारितः श्री संघेन । कालमाबाजार वास्तव्य श्रावकैः [illegible]
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — तिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[८५]

पाषाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्वत १९३३ शालिवाहन [illegible] माघ [illegible]
एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने चन्द्रे [illegible]
बृहत ओस वंशे लुंकड गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तद्भार्या [illegible]
राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु भ्राता राय धनपतसिंह बहादुर [illegible]
नरपतसिंह सपरिवारेन श्री सम्भवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी [illegible]
वीर जी परिकर सहित कारापितं विक्टुरिया सम्राट विजयराज्ये प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः [illegible]

[८६]

जीर्ण मन्दिर — [illegible] ।

ॐ भगवते नमः ॥ सम्वत अठारह से ग्यारह (१८११) [illegible]
उसवाल कुल गोत्र गोलछा श्री मल्लीनाथ [illegible] ॥ [illegible]
सुत सुलक्षणसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह [illegible] ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्वत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १८७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशी १७३९। संख्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलपष्टि तिथौ वुधवासरे श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य प्रासादोयम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त संघेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर गच्छेश भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

[88]

धातुओं के मूर्त्तिपर ।

सम्वत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो ----

[89]

सं० १२५९ वैशाख सु० ३ वुधे सो० जेहड़ सुत सा० वहुदेव हीर भद्राभ्यां मातृ राज श्री श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिभिः ।

[90]

सम्वत १३४९ वर्षे ज्येष्ट सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० मह० सादा सुत मह० राजा श्रेयसे ससुत मह० माखहिवि श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[91]

सं० १३७५ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद भार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्तिनाथ का० श्री हेमप्रभ सूरिभिः प्र० महाहृद्दाय ।

[92]

सं० १४३४ वर्षे ज्येष्ट वदि २ गुरौ वरहुड़िया गोत्रे सा० नोजदेव पुत्र मु० स्वमति श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्र० देवाचार्य सं० -- सूरिभिः।

[93]

सम्वत १४४९ आषाढ़ सुदि २ गुरौ श्री अञ्चल गच्छे उकेश वंशे गोठन गोत्रे सा० साल्हा भार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितश्च श्री सूरिभिः।

[94]

सं० १४५९ वर्षे ज्येष्ट वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रतना भार्या रूपाई पुत्र सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं का० प्र० श्री -- ।

[95]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उपकेश ज्ञातीय व्य० देवराज भार्या जसमादे पुत्र रूपा सा० धलूणादे सहितेन पित्रो मातृ रामती श्रेयसे श्री पद्मप्रभ विंबं कारितं प्र० ब्रह्माणीय गच्छे श्री उदयानन्द सूरिभिः।

[96]

स्वस्ति ॥ सम्वत १४३१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीनाऊ महगोड गोत्रे सा० देदा पुत्र सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विंबं प्र० श्री जिनप्रभ सूरिभिः॥

[97]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ ओस वंशे कांकरिया गोत्रे सा० सालग पुत्र सा० साधिग भार्या पद्माईना शान्तिनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं रुद्रपल्लीय श्री नयचंद्र सूरिभिः।

[९८]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ ऊेस वंशे षत्तकरीया गोत्रे सा० पाहदेव ज्ञा० करणु पुत्र सामल ज्ञार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंबं का० प्र० — — र्षि गछे श्री नयचंद्र सूरिज्ञिः ।

[९९]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन ज्ञा० चंज्ञी पुत्र श्रीरत्नेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज्ञ विंबं का० प्र० श्री कृष्णर्षि गछे श्री नयचंद्र सूरिज्ञिः ॥

[100]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय ठकुर भरणी ज्ञार्या बाई गाङ्गी सुत ठकुर मांनण ज्ञार्या बाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गछे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कल्याण ॥

[101]

सम्वत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ ऊेसवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० खीमा पुत्र बरषा ज्ञा० वाल्हदे स० ज्ञातृ रल्हा श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल गछे श्री दाणाकर सूरिज्ञिः ।

[102]

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने बपुड़ाणा गोत्रे तुंफिला गोत्रे सुत देवराजेन पु० पद्दराज सुते विंबं का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिज्ञिः ।

[103]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ सुदि १० संडेरगच्छीय श्री काणा गोत्रे ठ० लाषू ज्ञा० धर्मिणि

पु० अचल दासेन पु० उग्रसेन सहीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवदास हीरसेन [illegible] युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्वत १५१९ वर्षे कार्त्तिक वदि ४ गुरु श्रीमाली ज्ञातीय मंत्रि देपा भार्या [illegible] सुत वरजांगकेन भ्रातृ जेसा नरबद छाणा सहितेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गच्छे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ जैया वास्तव्यः श्री शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५२४ वै० शु० १० ऊकेश वेदर वासि स० महिराज भार्या [illegible] सुत [illegible] भगिनी पन्नाई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता भा० वाल्हू पुत्र जोगाकेन भा० [illegible] पु० [illegible] भ्रातृ अर्जुन भा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[107]

सं० १५३२ वर्षे वै० सु० ६ [illegible] श्री ऊकेश वंशे [illegible] सन्ताने [illegible] भूणा भा० जोल्हा [illegible] श्री अभिनन्दन जिन बिंबं कारितं प्र० [illegible] श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[108]

सं० १५३२ वर्षे [illegible]

काल्ही पुत्र सा० सोढ़ा सुश्रावकेण जा० सूहविदे पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाजङ रव शिवदास पौत्र सिद्धपाल प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री अञ्चल गच्छेश श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन मातृ पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्घेन ॥

[109]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ जोमे उपकेश ज्ञातीय ठ० धरणी जा० रूपी सु० देवासा जा० कुंती कनसू जतृ आत्म श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंबं का० प्रति० श्री नाणवाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिजिः । कोरड़ा वास्तव्यः ।

[110]

सम्वत १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय माथलपुरा गौत्रे म० हंसराज जा० हासलदे पु० सा० षेढा जा० पीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंबं कारापितं श्री धम घोप गच्छे ज० कमलप्रज सूरि तत्पट्टे ज० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ ठ ॥

[111]

सम्वत १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्टि लाम्रण जार्या अजी सुत वासण रूढ़ा जेसिंग हूड़ा जा० रमादे स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंबं कारितं श्री आगम गच्छे श्रीमुनिरत्न सूरि पट्टे श्री आनन्दरत्न सूरिजिः प्रतिष्ठितं वूवूगाणा वास्तव्यः ॥

[112]

सं० १५७८ वर्षे फागुण सु० ए बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तझार्या श्री मरु देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ विंबं का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मक्षयार्थं श्रेयोस्तु शुजं जवतु ॥

[113]

सं० १६५८ वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय । सा० घोघा जार्या कल्हा सुत सा० राजा जार्या अदक सुत सा० जयतमाल । जार्या

जीवादे सुत सा० ठाकुर नाम्ना नान् सा० पुण्यपाल सा० नाकर स्वभार्या [illegible]
वीरजी प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गच्छे [illegible]
प्रतिबोधक भ० श्री हीरविजय सूरि तत्पट्ट प्रभावक सुविहित भ० श्री विजयसेन सूरि [illegible]
आचार्य श्री ५ श्री विजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणविजय गणि प्रमुख परिवृतैः ॥

[114]

सम्वत १६७७ वर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री [illegible]
उपकेश ज्ञातीय सा० लक्ष्मीधर भार्या बाई जयवन्तादे पुत्री सा० [illegible]
सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख युतया श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रति-
ष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरीश्वर पट्टालंकार
श्री विजयदेव सूरीश्वर पट्टप्रभाकराचार्य श्री श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

॥ श्री महावीरस्वामी का मन्दिर — [illegible] ॥

[115]

सं० १३४० वर्षे ----- उएसवाल ज्ञातीय सा० [illegible] श्रेयोर्थं श्री [illegible]
बिंबं माता चापल श्रेयोर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कुमर सिंहेन आत्म पुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ
भार्या लखनादेवी श्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं सुत खेतसिंह पुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं
कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गच्छे श्री नन्न सूरि सन्ताने श्री कक्क सूरि पट्टे
श्री सर्वदेव सूरिभिः ।

[116]

सं० १४७४ वर्षे श्री श्रीमाल वंशे सा० [illegible] सा० [illegible]
स्वपुण्यार्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री
जिनभद्र सूरिभिः ॥

[117]

सं० १५११ वर्षे पोष वदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांड्या भा० राणा सु० वस्ता भा० अलवेसरि नाम्न्या स्वभर्तृ श्रे० श्री कुन्थुनाथ बि० प्र० श्री विमल सूरिभिः। वगुडा वास्तव्यः ॥

[118]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ श्री भावडार गच्छे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे व्य० भीमण भा० हलू पु० सादा भा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — भ्रातृ नेमा पुण्यार्थं समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य सन्ताने भ० श्री भावदेव सूरिभिः ॥ सीरोही वास्तव्यः शुभम्भवतु ॥

[119]

सम्वत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीवंशे सा० अदा भा० धर्मिणि पुत्र सा० वस्ता सा० तेजा सा० पीमा सा० तेजा भार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री अंचल गच्छेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन ॥ श्रीः ॥

[120]

सं० १६६७ व० ऊ० ज्ञा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० भूपतिना श्री विमलनाथ बिंबं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तपा गच्छेन्द्र भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[121]

सं० १५११ वर्षे आषाढ़ वदि ९ सागा ऊकेश ज्ञातीय सा० जेसिंग भा० चंदो पुत्रेण

सा० वीदाकेन भा० नषी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खर-तर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ श्री कुंकुण् [illegible] ।

[122]

सं० १५१६ कात्तिक वदि २ रवौ श्री ऊपस वंशे [illegible] गोत्रे सा० [illegible] सा० [illegible] पु० सा० गजसी भा० सूराद पु० सा० धना भा० धनादे पु० सा० [illegible] भा० [illegible] सहितेन वृद्ध भ्रातृ नरपति संग्रामचंद्र पुण्यार्थं श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] पल्लीय गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[123]

सम्वत १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ श्री ऊपस वंशे । सं० [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र स० गोवल भा० [illegible] पुत्र खेताकेन मातृ पितृ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन श्री चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] संघेन ॥ कच्छदेशे धमड़का ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६३४ वर्षे फा० शु० — शः पत्तने सं० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्री [illegible] नाथ बिं० का० प्र० श्री वृहत्तपा गच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — [illegible] ॥

[[illegible]]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि १ [illegible] श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मातृ [illegible] [illegible] सुत [illegible] श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं [illegible] श्री लक्ष्मीसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

[126]

सम्वत १५५७ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्रा० सा० गेखा भा० चाहू सुत सा० राजा वना तथा हरपाल भा० जीवणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्थुनाथ विंवं प्रतिष्ठितं सूरिभिः सोणोत नगरि गोत्र लीवां ।

[127]

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० शिवा भा० सिरियादे शृङ्गारदे सुत दो० धनसिंहेन भा० भांविहा सा० कुंअरि भा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री शान्ति विंवं कारितं श्री सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[128]

सं० १५६२ वर्षे वै० सु० १० रवौ श्री तातहड़ गोत्रे स० जेतू भार्या जिपूहो पुत्र० ३ सा० आहू सा० ठुहू सा० ठाहड़ तन्मध्यात् सा० ठाहड़ भार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे स्वपुण्यार्थंच श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

माधोलालजी डुगड़ का घरदेरासर — वड़तला ।

[129]

ॐ सं० १५२५ वर्षे आपाढ़ वदि १ श्री ऊकेश वंशे वरड़ा गोत्रे सा० हरिपाल सुत भा० आसा सापू तत्पुत्र सं मरूलिक सुश्रावकेण भार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सपरिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गछे श्री जिनराज सूरि पदे श्री जिनभद्र सूरिभिः ।

माधोलाल वावुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

[130]

सं० १६०४ वर्षे माघ सु० ६ गुरो रेवती नक्षत्र श्री द्वीप वंदिर वास्तव्य श्री ऊकेश

ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० श्री करण भार्या श्री सिरा आदि सुत सा० सोणसी भार्या श्री संपुराई पुत्र रत्न सा० शवराज नाम्ना श्री आदिनाथ बिंबं कारितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं तपा गछे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[131]

सं १४७५ वर्षे जे० व० ११ रवौ श्रे० धणरी भार्या मचू सुत सा० ठ० घराकेन स्वभगिनी श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागछमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ।

[132]

सं १५७७ व० वैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाली श्रे० वहजा भा० वहजलदे पु० सा० करणसी भा० जीवादे काना सहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि चन्द्र सूरिभिः घरजा वा० ॥

[133]

सं १६०४ वर्षे वैशाख वदि ७ सोमे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० देवदास भार्या बा० देव लदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाल भा० बा० रतनादे सपत्ने सा० जावड़ भा० बा० भासलदे तस पुत्री बा० जीवण श्री धरसनाथ आ० – जिदास परिवार वृतैः ।

४७ न० इण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतला ।

श्री रत्नप्रभ सूरी प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध उपकेश (ओसियां) नगर की श्री महावीर स्वामीके मन्दिरके पार्श्वमें धर्मशालाकी नींव खोदनेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्त्तिके परकरके पश्चातका लेख ।

[134]

ॐ संवत १०११ चैत्र सुदि ६ श्री कक्काचार्य्य शिष्य देवदत्त गुरुणा उपकेशीय चैत्य गृहे अश्वयुज् चैत्र षष्ठ्यां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिपालिका भासुन्न प्रतिमा इति ।

तीर्थ श्री चंपापूरी।

यह प्राचीन जैनतीर्थ है, आई रेलवेके लुप लैनके भागलपुरके पास नाथनगर ष्टेसन से मिला हुवा है। यहां चंपापुरी–चंपानगर–चंपा–हालमे जिस्को चम्पनालाभी कहते है १२ मां तीर्थङ्कर श्री वासुपुज्य स्वामीके पञ्चकल्याणक भये हैं। यहां श्वेताम्बरी दिगम्बरी दोनो सम्प्रदायके जुदे २ मन्दिर वर्त्तमान हैं। राजगृहके श्रेणिक राजाका वेटा कोणिक जिस्को अजातशत्रु वा अशोकचंद्र भी कहते हैं राजगृहसे अपनी राजधानी उठाकर यहां चंपामें लायाथा। सुभद्रा सतीभी इसी नगरकी रहनेवाली थी। तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने यहां ३ चौमासे कियेथे और उन्के आनन्दादि मुख्य श्रावकोमें कामदेव श्रावक यहांका रहनेवाला था और जैनागमके प्रसिद्ध दश वैकालिक सूत्रभी श्री शय्यंभव सूरी महाराजने इसी चंपापुरीमें रचा था। वसुपूज्य राजा जया रानीके पुत्र श्री वासुपूज्यस्वामीका चवन जन्म फाल्गुण वदि १४, दिक्षा–फाल्गुण सुदि १५, केवल ज्ञान–माघ सुदि २ और मोक्ष–आषाढ़ सुदि १४ यह पांच कल्याणक इसी नगरमें भयेथे इस कारण यह पवित्र क्षेत्र है।

पाषाणोंके बिंब और चरणोंपर।

[135]

सं १६६७। श्री धर्मनाथ बिंबं का० सा० हीरानंदन*। प्र० श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

[136]

सं १७२७ वर्षे वै० सु० ११ – – – श्री तपा गछे श्री वीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥ श्री लछन।

---

* यह मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध जगत्सेठके पूर्वज साह हीरानन्दजी है, ऐसा सम्भव है।

[137]

सम्वत १८५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे। तृतीयायां। चंपापुरी तीर्था धिराज। श्री देवाधिदेव श्री वासुपूज्य जिन बिंबं समस्त श्री संघेन कारितं। कोटिक गण चन्द्र कुलालङ्कार। श्री मत् श्री सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[138]

संवत १८५६ वैशाख मास शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री अजितनाथ स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं। श्री जिनचंद्र सूरिभिः बृहत् खरतर गछे कारितं मकसूदाबाद वास्तव्य – – –।

[139]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ ॥ बुधवासरे। श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं प्रति-ष्ठितं च०। श्री जिनचंद्र सूरिभिः। बृहत् खरतर गछे कारितं च। बीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोपचंद तत्पुत्र जेठमलेन श्रेयोर्थं।

[140]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे। तृतीया तिथौ। श्री महावीर स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं। च०। श्री जिनचंद्र सूरिभिः। बृहत् खरतर गछे कारितं समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं।

[141]

संवत १८५६ वैशाख मासे शुक्ल प० ३ दिने। श्री शान्तिनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं। खर तर गछाधिराज च०। श्री जिनलाभ सूरि पट्टालङ्कार। च० श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं। – – – समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं ॥

[142]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री वासुपूज्य स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं

श्री जिनचंद्र सूरिभिः वृहत् खरतर गच्छे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेछा गोत्र – –
– – श्राविकया कारि ॥

(२। शान्तिनाथ ३। चंद्रप्रभु ४। विमलनाथ – – – अजयराजेन श्रेयोर्थं।)

[143]

॥ सं। १८५६ फाल्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथो श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र। सर्व सूरिभिः। कारितं। सर्व संघेन। चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संवत। १८५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पादुके। प्रतिष्ठितं भः श्री जिनचंद्र सूरिभिः वृहत् खरतर गच्छे कारितं। समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं।

[145]

संवत १८८१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गच्छे पुस्कर गणे लोहाचार्याम्नाय भट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदाम्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र रूपभदास पुत्र सन्नूलाल – – – अगरवाल प्रभा सा – – श्री पद्मप्रभ – – – प्रतिष्ठा कारिता।

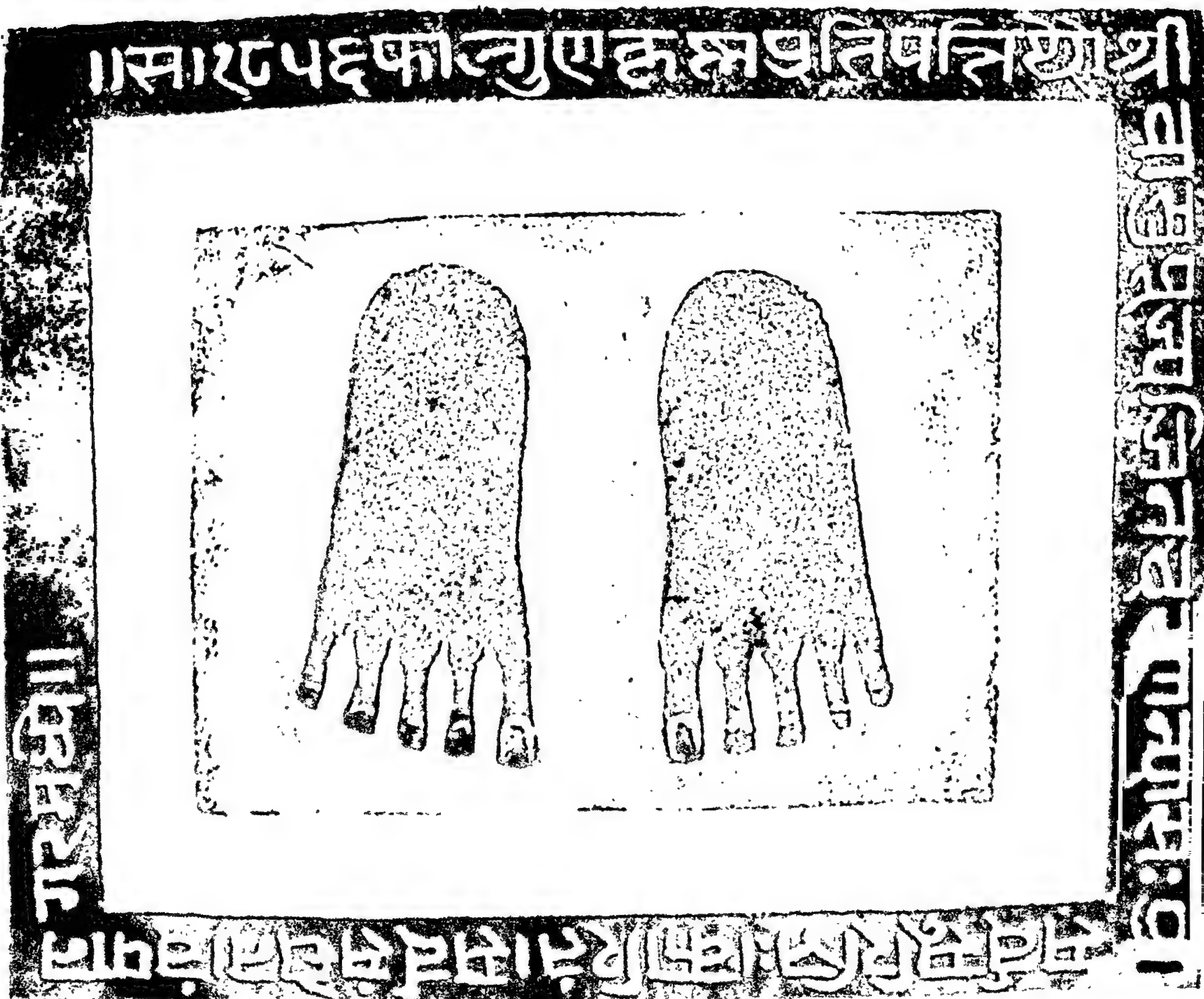
[146]

सं १९०० आषाढ शित ए गुरौ श्री संभवनाथ विंवं प्रतिष्ठितं वृहत – – – सूरिभिः कारितं च डूगड़ सरूपचंद भ्रातृ करमचंद हुलासचंद जननी प्राण वीवी श्रेयोर्थं।

[147]

संवत १९०७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने। श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं मकसुदावाद वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च भ। श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार भ। श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः वृहत् खरतर गच्छे।

Footprints, Champâpuri Temple, dated S. 1856 (1799 A. D.)



[148]

सं १९२० सि । फा० कृष्ण २ बुध -- डूगड़ प्रताप ---

[149]

॥ संवत १९२४ मिति जेठ शुक्ल द्वीतीया तिथौ रवीवारे डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लछमीपतसिंघ बाहादुर तत् अनुभ्राता राय धनपतसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं । बं । वृ० ख० श्री जिनहंस सूरिजी विजैराज ॥ उ० श्री आणन्दवल्लभ गणि तत् शिष्य उ० श्री सदालाभ गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द सूरि लुंपक गच्छे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नयचन्दजी श्री पन्ना पूरीजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९२५ मि: फाल्गुन कृष्ण ५ तिथौ । डूगड़ श्री प्रतापसिंघजी तत्पुत्र राय लछमीपत्तसिंघ बहादुर तत्भ्रात्र श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारापितं जं० । वृ० । भ० । ख० । श्री जिनहंस सूरिजी विजैराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभंभूयात् ।

[151]

धातुयोंके मूर्त्तिपर ।

सं १५०९ वर्षे ज्येष्ठ० सु० -- रवौ रंगू ज्ञा० रमाई -- देना द्रामा आशा पु० लाडन श्रा० लखमीसदिति पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥ श्रीः

[152]

संवत १५२७ वर्षे माघ व० १ सोमे प्रा० सं० धारा भा० सपद सुतेन सा० देवा वेगुना

स० वनाकेन जा० सीत्रू प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्टितं श्री सूरिभिः ॥ माख्यवन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं – – – ।

[154]

सं० १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरू ऊकेश वंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा भा० राऊं पु० सा० जोला भा० लहिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कालू सा० काजा भा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

[155]

संवत १५८१ वर्षे माघ वदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञा० वृद्धशाखायां व्य० सहिसा सु० व्य० समधर भा० वड़धू सुत व्य० हेसा भार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा वर्द्धमान एते प्रतिष्टापितं श्री निगम प्रभावक श्री आणंदसागर सूरिभिः ॥ श्री शान्तिनाथ विंबं श्री रस्तु श्री पतन नगरे ॥

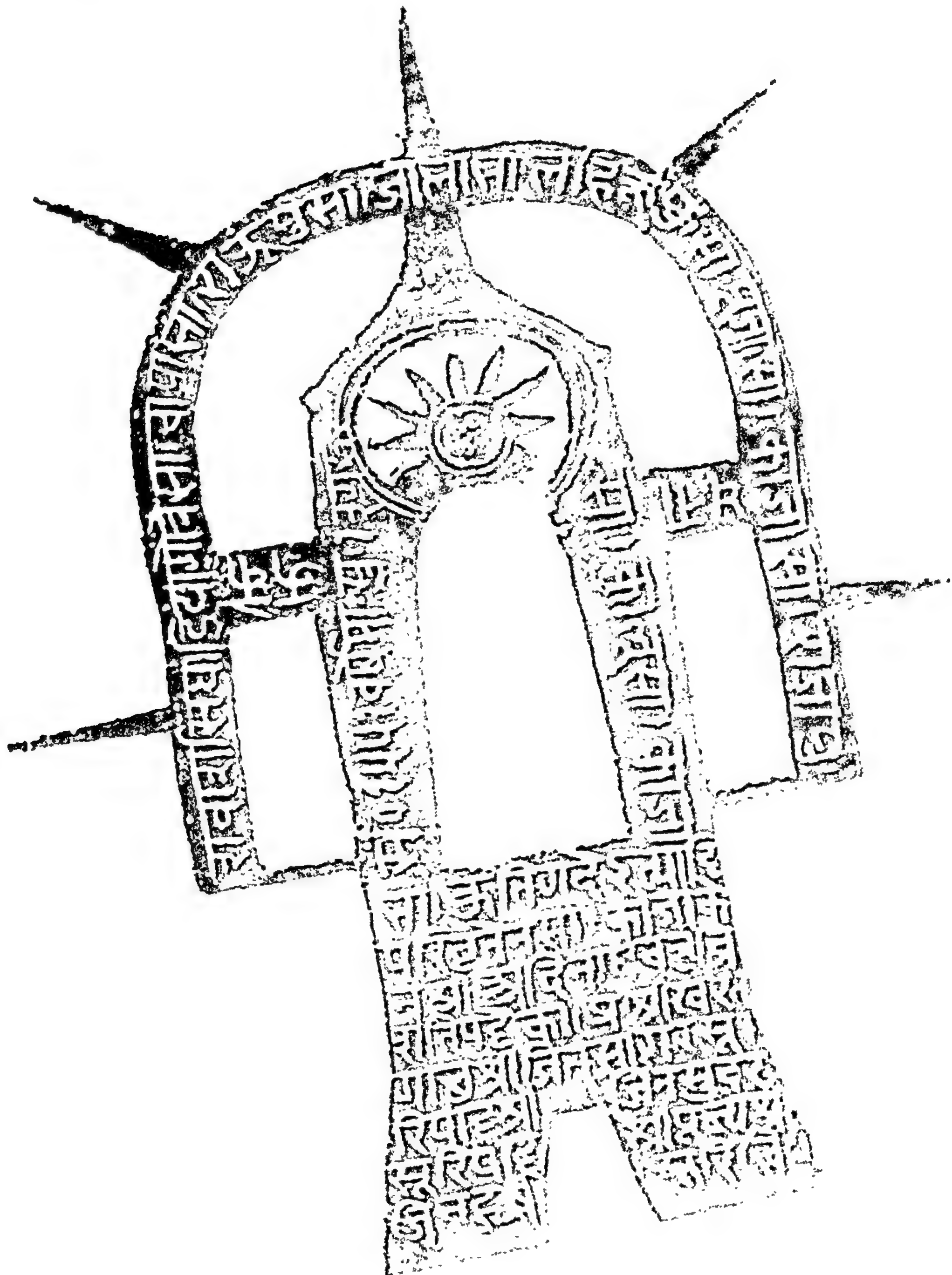
[156]

संवत १५८५ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल ज्ञातीय आइचणी गोत्रे चोर वेड़ीया शाखायं सं० जइता भार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा भार्या भूरी सुत ऊधरण चंद्र पाल आत्म श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गछे कुक्कदाचार्य सन्ताने प्रति ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिभिः । – – – –

[157]

संवत १६०३ वर्षे माग्रशिर सुद ३ शुक्रे प्रा० ज्ञा – – वास्तव्य – – भा० रङ्कादे सा०

Choubisi (Metal) Champapur Temple, dated S. 1551 (1494 A.D.)



सुग भा० सूरमादे सा० श्री रत्न सदारङ्ग असीपलादि कुटुम्ब युतेन साह स० मर्यादि श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री विशालसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५ — — सूरिभिः ।

[158]

ह्रींकार यंत्रपर ।

सम्वत १६६१ वर्षे शुक्लपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे चंपापुरी नगर शुभस्थाने — — —

[159]

सम्वत १६७३ वर्षे मूलसंघे भ० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयकीर्ति प्रतिष्ठितं — — ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर

पाषाणके मूर्तिपर ।

[160]

सं० १७७७ माघ सुदि १३ बुधे ओस वंशे कठारा गोत्रीय लाला अमनादास तद्भार्या ध्यासकुवर तथा श्री वासुपूज्य जिन विंबं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गच्छीय श्री जिन — — — — ।

पञ्चतीर्थीयों पर ।

[161]

सं० १५१९ — — — संडेरगच्छीय श्री कटारागोत्र ह० साह भा० धर्मिणि पु० सा

अचल दासेन पु० जयसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः।

[162]

सम्वत १५७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ निभूज गोत्रे। स० छन ना० --- सुश्रावकेण भा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिल प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे ॥ श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

ह्रींकारके यंत्रपर।

[163]

सम्वत १८५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्री मालान्वये करगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रोसनराय वृद्धिचन्द खुस्यालचन्द सरूपचन्द मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयोर्थ ॥

स्थान — भागलपुर।

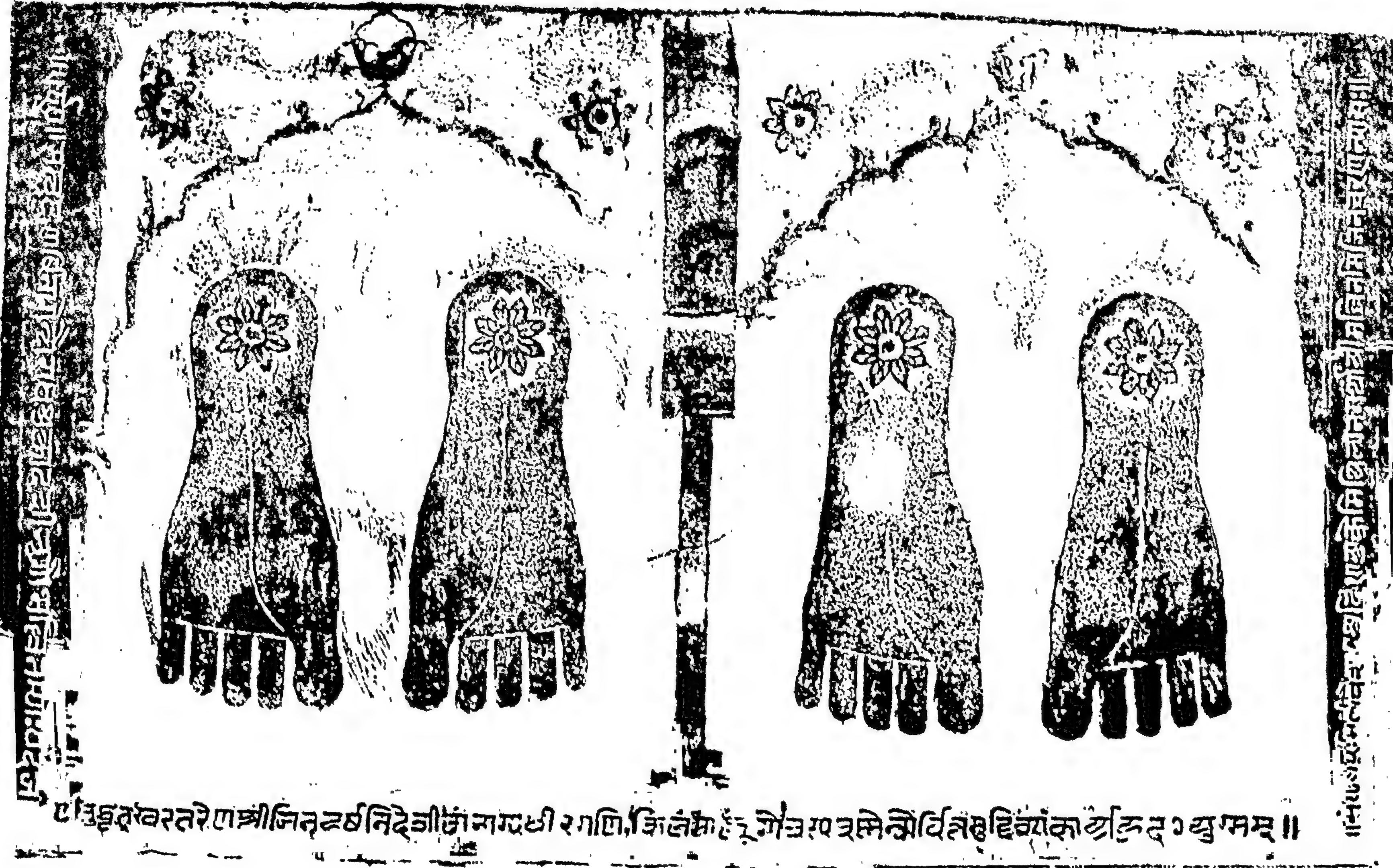
श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

पाषाणपर।

[164]

॥ शुभ सं० वीर गताब्दा २४०५ विक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री वासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक भूम्युपरि ओश वंशे दूगड़ गोत्रे वृ। शा। वा। श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ वधूः महताबकुमरी स्वजन्म सफल करणार्थं इच्छा कृतासिच कालवशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्मं प्राप्तस्य मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर

Footprints from Mithilā, dated S. 1875 (1818 A.D.)



तेन द्रव्येण धर्मशाला जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः श्रीसंघ च संताकसी श्री संघ माङ्गलिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री लोकटरीया इसप्रेश राज्ये पृष्ठाब्द १८७५ ।

पाषाणके चरणों पर ।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्म (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्वाण कल्याणक पादुका ॥ साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंपा नगरे ओशवाल वृ । शा । दूगड़ गोत्रे या । श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्भार्या महताबकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री लछमी पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभि श्री संघस्य शुभंभवतु ॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्वद्वाणर्षि नागेन्दौ राध शुक्लादशी भृगौ मल्लि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा भाग्यधीर गणि किल माल्हू गोत्रस्य प्रधोतार्पितसुविल कार्यकृत् २ युग्मम् ॥ सं० १८७५ मिती वैशाख सुदि १० शुक्रे मिथिला नगर्यां * श्री मल्लि जिन चरणन्यासः ॥

[167]

सं० १९३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य (अजितनाथ, सम्भवनाथ) जिन

---

* यह चरण दरभङ्गा लैन में सीतामढ़ी ष्टेसनके पास मिथिला नगरी के उद्धारस्थान कहा जाता है । वहां इस समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ वां तीर्थङ्कर श्री मल्लिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ वां श्री नमि नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे । श्री मल्लिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीके कुमारी थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरीके विजय राजा और विप्रा रानीके पुत्र श्री नमिनाथ स्वामीका जन्म श्रावण वदी ८, दीक्षा आषाढ़ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें " मिथिला " के स्थानमें " मथुरा " नगरी भी लिखनेमें आया है । इसका सत्य ज्ञानीगम्य है । चरम तीर्थङ्कर महावीर भगवानका भी ६ चौमासा यहां भयाथा ।

बिंवं ओस वंशे डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं। मलधार पूर्णिमा श्री मड्विजय गच्छे भट्टारक श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः ॥

[168]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मल्लिजिन बिंवमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश वंशीय लुंपक गणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य लघु पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितंचाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणालुंकागच्छीयेन ॥ श्री मिथिलापुरवरे ।

[169]

सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन बिंवमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश वंशीय लुंपकगणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य लघु पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागच्छीयेन सीतामढ़ी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ९६ वर्षे आषाढ़ शु० ११ दिने: रा० भणशाली गोत्रे भं० सिवा भा० रत्नादे पु० भ० हेमराज वेला भा० बालहदे पु० पता —— बिंवं कारापितं पुण्यार्थं श्री संडेर गच्छे भ० श्री साल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।



Footprints, Kâkandi Temple, dated S. 1822 (1765 A. D.)

तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है। नवमा तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन–जन्म–दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां भये हैं। सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे। मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्त्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान भया। जैन मुनि धन्ना काकन्दी भी यहीं भये हैं।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लछवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है। चौविशमां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां भये हैं।

मूर्त्तियों पर।

[171]

संवत १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ महतियाण वंशे मुंकलोड़ गोत्रे। सं० नरपाली पुत्र श्रा० देपाल भार्या मृ० महिणि स्वकुटुंबेन भ्राता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० डूंगरराज पुत्र – – – श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुभशील गणिभिः – – –।

[172]

संवत १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे मुंकलोड़ गोत्रे। सं० – – राजपुत्र सं० महादेपाल भा० माहिणि पुत्र सं० सिवाई।

चरण पर।

[173]

ओं नमः। संवत १७९२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिन पद चरण कमले शुभे स्थापिते॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन जीर्णोद्धारं कारापितं॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः।

पाषाण पर ।

[174]

मकशूदाबाद अजीमगञ्ज वास्तव्य दूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तद्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तल्लघु सहोदर राय धनपतसिंह बहादुरेण न्याय द्रव्यण व्यय वीर प्रभू का जिनालय करापितः लठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं । सं० १९३० मिती बैशाख वदी २ चन्द्रे – – ।

श्री गुनायाजी ।

नवादा (गया लाईन) ष्टेसनसे १॥ माईल पर यह स्थान है । इसका नाम शास्त्रमें "गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका १४ चौमासा भयाथा । स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तालाव वा विचमें मन्दिर है ।

धातुके मूर्त्तिपर ।

[175]

संवत् १५१० वर्षे फागुण वदि १२ उसवालान्वये मूधाला गोत्रे स० – मीला भा० वील्हू पुत्र सा० तोल्हा भा० पई नाम्न्या स्वपुण्यार्थं पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सूरिभिः ।

पाषाणके चरणोंपर ।

[176]

संवत १६७७ वर्षे वैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल वंसे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालो तत्पु० भार्या ठकुरेटी यु० भ० श्री जिनकुसल सुरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराजे सूरि विद्यमाने उपाध्याय अभय धर्म्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लग्ने खरतर गछे ।

Foot prints, Gunashila (Gunawa) Temple, dated S. 1688 (1631 A. D.)



[177]

संवत १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ सोमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री दूगड़ प्रतापसिंह जीस्कानां भार्या महताब कुंवर तत्कुक्षिसमुद्भव कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर [illegible] स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय [illegible] वाचतया श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनलब्धि सूरि शाखायां उ० [illegible] लाभ गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

[178]

सं० १९३० सावन सु० ५ सकल संघेन श्री वीर पादुका कारापित स्थापितं श्री गुण- शील चैत्ये आत्महिताय ॥

पाषाण पर।

[179]

सं० १९२४ मिती माघ कृष्ण ५ सोमे गुणशीले चैत्ये दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र चिरंजीव राय बहादुर तत् प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म [illegible] करापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आणंद वल्लभ गणि तत्शिष्य उ० श्री सागरचंद्र गणि उप- देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूयात् ।

पाषाण पर।

[180]

—— । श्री जिनेंद्र जयती । स्वस्ती श्री मद् वीरजिनेंद्र सं० [illegible] वि० सं० [illegible] वर्षे वै० वद० ८ बुधवारे श्री तपा गच्छाम्नाय धारक [illegible] रूपचन्द रंगीलदास देवचन्द पाटनवाला [illegible] मुकाम [illegible] [illegible] [illegible] चन्द [illegible] चन्द [illegible] चन्द [illegible] चन्द [illegible] ॥ श्री [illegible]

धर्मशाळा पंधावीठे तथा देरासरमा पकासणो गोखलाओ दरवाजो जमतीनी देरी = ४ सहीत सरवे आरसनु काम तथा तळावनी भीत तथा रीपेर वीगेरे जीर्णोद्धार करावोठे श्री शुभं भवतु सदा । सलाट भाइचंद जगजीवन मीस्री पाळीताणा वाळा —— ।

तीर्थ श्री पावापूरी ।

शासन नायक श्री महावीर स्वामीका यह निर्वाण कल्याणक का स्थान जैनीयोंका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है । २४ वां तीर्थंकर के समवसरण की रचना और उनका मोक्ष यहां भये हैं । समवसरण के स्थानमें १ स्तंभ वर्त्तमान है कोई लेख नहीं है । यहांसे प्राचीन चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तलावके पाड़ पर बिराजमान हुये हैं । अग्निसंस्कार की जगह तालाव और मंदिर है । प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ श्वेताम्बरी और १ दिगम्बरी उस तालाव के पाड़में बनाहै और कई धर्मसालायें है ।

समवसरणजी के प्राचीन चरणों पर ।

[181]

॥ सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री ——— कनकविजय गणिभिः ——— । (अक्षर घस जानेके कारण पढ़ा नहीं जाता)

जलमंदिर — पावापूरीजी

श्री गौतमस्वामीजीके चरणोंपर ।

[182]

सं० १६३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं गौतम गणधर पादुका कारापितं ठसपाल ओरछिया

गोंछे मानकचंद जीवनदास प्र० बृ । ज० । श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरी तद्शिष्य मुनि पद्म जय उपदेशात् ।

श्री सुधर्मा स्वामीजीके चरणोंपर ।

[183]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं पादुका श्री सुधर्मा स्वामी गणधिरं [illegible] [illegible] सांढेचा गोछे — न सुख प्रतिष्ठितं पु० भ० श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरि तद्शिष्य मुनि पद्म[illegible] उपदेशात् ।

पास तर्फकी गुमटीमें १२ चरणोंपर ।

[184]

संवत १९३१ का मिती माघ शुक्ल १० तिथौ चंद्रवारे श्री [illegible] [illegible] [illegible] श्री पूज्याचार्य श्रीश्री १०८ श्रीश्री [illegible] सूरि [illegible] श्री [illegible] सूरि चरण प्रतिष्ठितं शुभाय[illegible] [illegible] श्री [illegible] सिंहजी [illegible] [illegible] सिंहजी [illegible] [illegible] पोड़ेचा [illegible] चरण कारापितं ॥ श्री शुभंभूयात् ॥ [illegible] — [illegible] ॥

दाहिने तर्फकी गुमटीमें चरणपर ।

[185]

॥ संवत १९४३ वर्षे आषाढ़ सुदि [illegible] दिने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] — [illegible] ।
पंचतीर्थीपर ।

[illegible]

सं० १५[illegible] आषाढ़ वदि १० [illegible] श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भा० करमिणि पुत्रेण स० शुभकरण भा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन हाखू जनन्याः श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० श्री खरतर श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय गोत्रे मौठिया सा० रणमल पुत्र सा० दीपचंद भार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गछे भट्टारिक श्री जिनहंस सूरि गुरुभ्यो नमः ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं ॥

पाषाणके चरण पर ।

[188]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ — — — रुपचंद पुत्र भैरराज द्रव्येण भार्या — श्री वर्द्धमान जिनस्येयं पादुका कारा — — ।

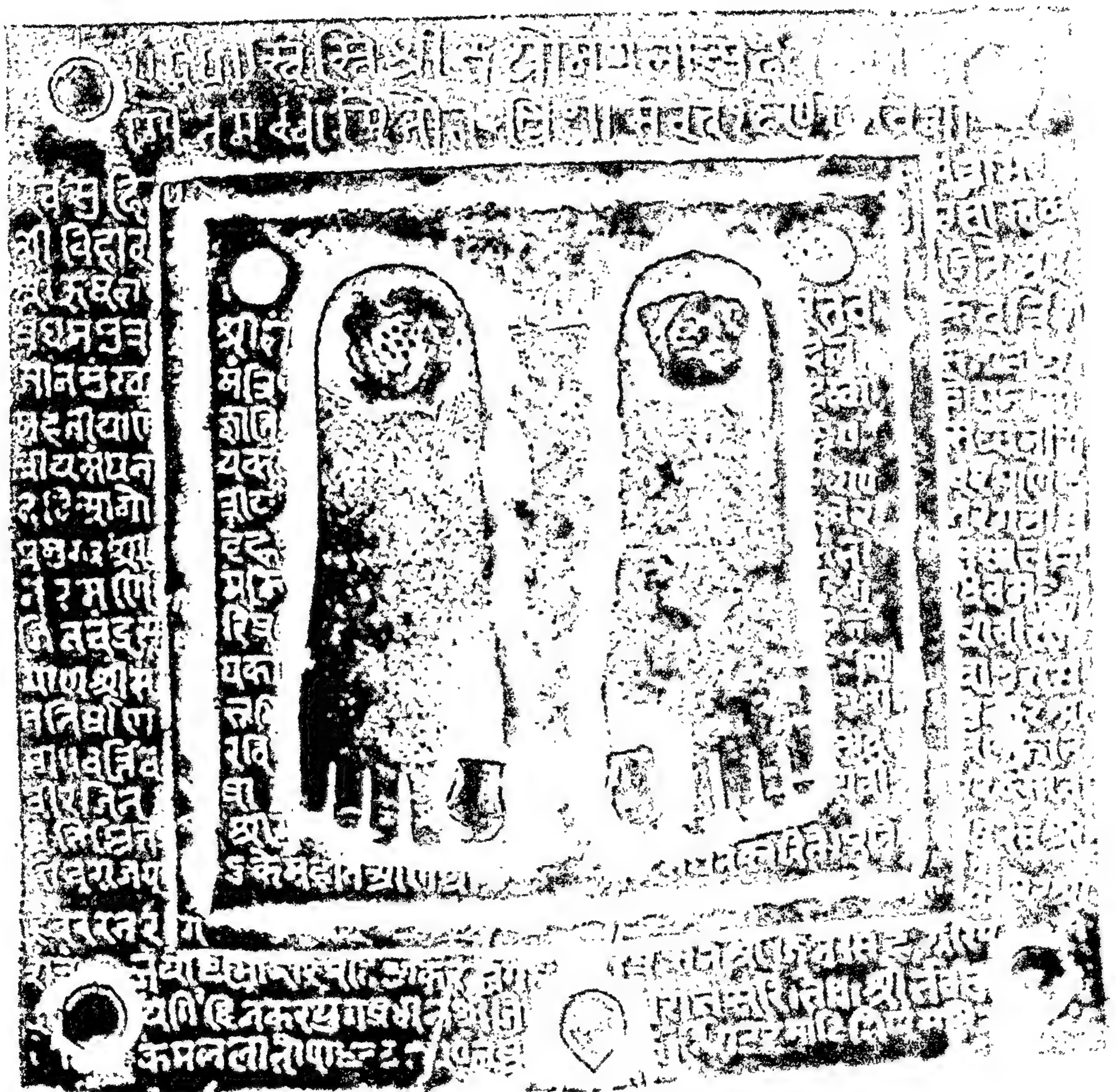
[189]

॥ संवत १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरक चरण कमल पादुके — — — ।

मध्यके चरणपर ।

[190]

॥ पं० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलाभ्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोलब्धिः ॥ संवत १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री विहार नगर वास्तव्य श्री ऋषभ जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री भरत चक्रवर्त्ति राजान मुख्य मंत्रिदल संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपड़ा गोत्रीय संघनायक मं० संग्राम । राहदिया गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री बृहत खरतर गच्छीय भरमणि मण्डित भालस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित श्री वीर जिन निर्वाण भूमि श्री पावापूरी समीपवर्त्ति वरविमानानुकार श्री वीर जिन प्रासाद



Pawapuri Temple Prashasti, dated S. 1698 (1641 A.D.)

भूमौ धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पादुके सहनियाण श्री मंदिर [illegible] । प्रतिष्ठिते च श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि पट्टोदयगिरि दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिभिः ॥ [illegible] श्री कमल लाभोपाध्यायाः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य सहितैः प्रणमंति ।

११ गणधरोंके चरणों पर ।

[101]

१ । संवति १६९८ प्रमिते । वैशाख सुदि ५ सोमवारे । श्री विहार नगर वास्तव्य श्री भरत चक्रवर्त्ति महाराजान्वय सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दलान्वय [illegible] श्री जिन चंद्र सूरि प्रबोधित महतियाण ज्ञाति मण्डन चोपड़ा गोत्रीय संघवी [illegible] ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निभूति ॥ २ श्री वायुभूति ॥ ३ श्री [illegible] स्वामि ॥ ४ श्री सुधर्मा स्वामि ॥ ५ श्री मंडितपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपित स्वामि ॥ ८ श्री अचलभ्राता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रभास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति * ।

[102]

। ॐ ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहिजां सकल भूर मण्डलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री वीर वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीर जिन चैत्य [illegible] ॥ श्री ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री भरत महाराज सकल मंत्रि [illegible] श्री दल संतानीय महतियाण ज्ञाति शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी [illegible] निहालो पुत्र सं० संग्राम लघुभ्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल सोनपाल । [illegible]

* यह देहरीके मन्दिर [illegible]

माणंद सपरिवार मद्दधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोद्यम विधायक ठ० दुखीचंद काङ्ड़ा गोत्रीय म० मदन सामीदास मनोदर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास गिरिधर संतोदास प्रसादी। वार्तिदिपा गो० गूजरमल्ल पूदड़मल्ल मोहनदास माणिकचंद वृदमल्ल जेठमल्ल। ठ० जगन नूरीचंद। दान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल मलूकचंद संतोपचंद सयला गोत्रीय ठ० सिंह कीर्त्तिपाल्ल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ। काङ्ड़ा गो० दयाल दास गोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किछू। कार्णा गोत्रीय ठ० राजपाल रामचंद -- महावीर -- कीर्त्तिसिंघ ठा० ठवीचंद। जीजीयाण गो० सं० लयमल नंदलाल। नान्हड़ा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कमलदास। रो० सुंदर सूरति मूरति सबलकुतो प्रताप -- ठ० मदमल्ल जा० सूरदासपुर ---।

पाषाणके मूर्त्तिपर।

[193]

॥ सिरि देवड्ढि गणि खमा समणा होत्ता तेसिं सिरि वीर निवाणाउ नवसय असीइ वरि सोहिं जिणागम रक्कगा तुच्छेह कारणाउ विंवमिणं पइट्ठावियं सिरि जिण महिंद सूरीहिं ॥ सं० १९१० वर्षे मा। सु० २।

वेदी पर।

[194]

सं० १९३५ मिति जेष्ठ शुक्ल ५ बुधवासरे इदं वेदिका कारापितं उसवाल ज्ञातौ रांका सेठिया गोत्रे सेठजी श्री लछमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमलजी तत्भ्रात् धनसुख दासजी।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर।

[195]

माह सुदि १३ दिने --- सूरीणा पादुके --।

[१०६]

संवत १६०६ वर्षे – क – – – । प्रवर्त्त – – – : । श्री खरतर गच्छे श्री [illegible] तिलक सूरिनां त० शिष्येन श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद [illegible] पितं उपदेन – – शुद्ध – – पादुकस्य – – – श्री रत्ननिलक गणि प्रतिष्ठितं [illegible] सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ २ ॥

[१०७]

मूल नायक – – – – – राज सत्वासन धारके । ० । ० [illegible] – न ति – – [illegible] – – ग० बेनीदास । तुलसीदास – माणिक – – [illegible] – – [illegible] । [illegible] – – – [illegible] पादुका श्री – – स्य गुरु – – श्री जिन लब्धिचंद्र सूरि कृत्ता ॥ [illegible] तर गणा – यं० जुग – – श्री युगप्रधान – – श्री जिनचंद्र सूरि [illegible] – श्री रत्नतिलक – – ततपट्टालङ्कार श्री [illegible]चार्य – लब्धिसेन गणि [illegible] – – याणा वाठिड़िया गोत्रे । [illegible] – – ग० गुजरमहेन – – श्री [illegible] – – – [illegible] ग० – करेन प्रतिष्ठा पुनर्नीता – – ।

[१०८]

॥ संवत १७०२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री जिन [illegible] ॥ मह्तीयाण चोपड़ा गोत्रे । [illegible] तुलसी दास भार्या [illegible] [illegible] पुत्र [illegible] सिंह – – – गणिभिः प्रतिष्ठिता श्री पावापुरी [illegible] श्री [illegible] श्री रस्तु ।

[१०९]

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ श्री जिनदत्त सूरी [illegible] श्री जिन कुशल सूरीणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं० भ० श्री जिन महेंद्र सूरिभिः । [illegible] शिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन [illegible] ॥

दाहिने श्री स्थूलभद्र कोठरी के चरणों पर।

[200]

श्री ॥ नयनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां (१८९७) नयन रस सरस्वाश्चन्द्र युक्तेषु शाके (१७६२) ॥ सित पटधर पाटो फाल्गुने शुक्ल पक्षे भुजगपति तिथौ (५) भार्गवे वासरेऽहं ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म्म वृद्धर्य्ये श्री स्थूलभद्राचार्य पादपद्म प्रतिष्ठा बृहत खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिणा कारिता भ० ॥ श्री हीरधर्म्म गणि विनय विद्धत्कुलकज प्रभाकर श्री कुशलचंद्र गण्युपदेशतः। काशीस्थ श्री संघैः ॥ बदलिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुन्नियालालाभिधेन ॥

[201]

(१) ॥ सं० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पादुका। (२) ॥ श्री जिन ललित सूरि पादुका।

[202]

सं० १८९७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिथौ १५ गुरुवासरे० बृहत् खरतर गच्छे० यु० भ० श्री जिनरंग ---।

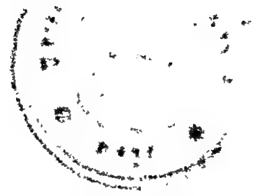
[203]

सं० १७९७ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल पक्षे राका तिथौ १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गच्छे यु० भ० श्री जिनरंग सुरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतिनंदन गणिनां पादपद्मे स्थापितं० वा० भुवनचंद्रेण। वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले भवतः आ० श्री जिनचन्द सूरीणां चरण कमले इमे भवतः।

श्री चंदनबाला कोठरी के चरणों पर।

[204]

॥ सं० १८२० प्र० श्री सुजाण विजयाजी पादुका।



[२०५]

सं० १८८० मा वर्षे सिते १२ ॥ बृहत् खरतर गच्छे यु० भ० श्री जिनचन्द्र सूरि [illegible] शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्ति विजयायां — — [illegible] प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौभाग्य विजयाया । पादुके प्रतिष्ठिते ।

[२०६]

सम्वत १८४८ शाके १७१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथौ [illegible] श्री [illegible] गच्छे भट्टारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वी[illegible] [illegible] पादुका [illegible] रूपविजिया पावापुरी मध्ये प्रतिष्ठापितः

[२०७]

॥ श्री संवत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र वारे श्री [illegible] गुर्जराधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००८ श्रीश्री [illegible]राज सूरिजी चरण कमलौ स्थापितौ श्री अजयराज सूरिभिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभंभवतु ॥

[२०८]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ [illegible] श्री महावीर जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते । [illegible] तत्पुत्र साह माणिक चंदेन श्री [illegible] नगर [illegible] करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावज्जगत्तले सूर्य चंद्रमसौ [illegible] स — — — — — — — — ।

[२०९]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री [illegible] संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

[210]

सं १८३८ माघ शु० ५ सकल संघेन श्री वीर पादुका कारापितं स्थापितं श्री पावापूर्यां। आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

विहार।

विहार वा सूबेविहार का प्राचीन नाम "तुंगिया नगरी" था। निकट में विशाला नगरी भी थी। जैन सहर था, पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे "विहार" नाम प्रसिद्ध भया।

धातुओं के मूर्त्ति पर।
मथियान महल्ला।

[211]

सं० १४३८ श्री —— तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ सा देल्हा पुण्यार्थं का० प्र० श्री जिनराज सूरि।

[212]

प० ॥ सं० १४६७ वर्षे माघ सुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० खेमखेन पुत्र रतना नरसिंह नयणा भा० — दादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिन वर्द्धन सूरिभिः ॥

[213]

सं० १५०६ माघ सुदि ५ —— लोढ़ा गोत्र ——— पुत्र भाभाकेन भा० भाऊ श्री पु० —— माखा — भा० हेम —— नाथू भा० कुमिमदे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गच्छे श्री मुनि तिलक सूरि।

[214]

ए ।सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने श्री उकेश वंशे डोड़ा गोत्रे सा० तोसा संताने सा० वीरा भार्या भावलदे पुत्र सा० नाड़ाकेन पुत्र नीवस पीतम प्रमुख परिवार सहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतर गछाधीश श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार श्री जिन भद्र सूरि युगप्रधान गुरुराजो ।

[215]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नगराज सुत ठ० सहूभार्या धामिणि पु० सं० श्री अचलदासेन पुत्र ठ० रूपसेन लदमसिंह सूरसेन दमिसेन धीरसेन देपाल पहिराजादि परिवार कृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[216]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ज्ञातीयां मापड़ा गोत्रे सं० पोमराज भा० सुरदेवी पुत्र ठ० दासू भा० कपूरदे पु० ठ० सदय वछ (?) प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनसुंदर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥ श्री ॥

[217]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० श्री नगराज सुत सं० श्री सहूभार्या धामिणि पुत्र सं० सिंगारसी भा० कुंवरदे पु० सं० गजमल सुखाकेन पुत्रादि परिवार सहितेन श्री आदिनाथ मूल बिंबचतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः खरतर श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० परागामैः ॥ छ ॥

[218]

सं० १५२० वर्षे माघ सुदि दशम्यां बुधे श्रीमाल ज्ञातीय म० चाहु भार्या भरमी प्रमुख

श्रेयोर्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरि पदे श्री जिन चंद सूरिराजैः ॥ श्री मंरूपे दूर्गे महता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[219]

सं० १४७७ वर्षे फागुण वदि ४ गुरौ उपकें० सूर गोत्रे सा० सिवराज भा० माकु पु० पासा सहसा भातृ वछराज पुण्यार्थं श्री शितलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य संताने श्री कक सूरिभिः ॥ छ ॥

[220]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख मासे उकेश वंशे दोसी गोत्रे सा० कलू पुत्र सा० लषा भार्या रुपाई पुत्र० लषमी धरेण भार्या लोलादे सहितेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनसमुद्र सुरिभिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[221]

सं० १६३७ समये फाल्गुण सुदी ५ भौमे श्री मूलसंघ सारस्वति गछे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री धर्मकीर्त्ति देव तत्पट्टे भ० श्री शीलभूषण तत्पट्टे भ० श्री ज्ञान भूषण अय भ० सुमित्रनी तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति ततशिष्य । मंडल आचार्य श्री मेरुकीर्त्ति गुरुपदे – ज् ॥ मगध देसे । खुदिमपुर वास्तव्य जेसवालान्वये कष्टहार गोत्रे सा० घीरम तद्भार्या वंयंत्रयोः पुत्र सहसी तद्भार्या अजेसिरि त्रयो पुत्रो प्रथम किनू तद्भार्या परिमल तत्पुत्र जिनदास तद्भार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास भार्या रुकमिनि मेतेषां मध्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु ॥

[illegible] का मंदिर ।

[२२२]

सं० १५३९ व० चै० शु० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० सं० माईआ भा० [illegible] पु० [illegible] भा० [illegible] पुत्र गोरा भा० रुकमिणि पु० वर्द्धमान मातृ पितृ श्रे० श्री कुंथुनाथ बिं० कारितं प्र० [illegible] श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[२२३]

सं० १६४३ फा० सि० ११ श्री हीर विजय शिष्य श्री विजयसेन सूरिभिः प्र० [illegible] नाथ -- ।

[२२४]

सं० १८७७ चैत्र सु० १५ -- बिंबं श्री जिनहर्ष सूरिणा -- [illegible] श्राविका -- तया गुलाबचंद पुत्र युतया -- ।

[२२५]

सं० १८९६ ज्येष्ठ वदि ८ ओसवाल ज्ञातीय [illegible] गोत्रीय [illegible] लालेन श्री सिद्धचक्र पट्टं कारापितं प्रतिष्ठितं [illegible] गणिना ।

पाषाण पर ।

[[illegible]]

संवत १५२४ जेठ वदि ४ श्री उपकेश ज्ञातौ साह श्री [illegible] -- साह [illegible] श्री उपकेश गच्छे श्री कक्क सूरिभिः ॥ [illegible]

[227]

संवत १६७४ वर्षे — — माघ सुदि ए दिने सोम वासरे श्रवण नक्षत्रे — - - - गोत्र ठाकुर - - - ठाकुर फाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुलीचंद श्री जिन कुशल सूरीणं पाडुके कारितं ।

[228]

सं० १६७४ शाके १५५ए ईश्वर वर्षे सम्वतसरं चेत्र वदि १३ शुक्रे शुन्ने मुहुर्त्ते दक्षिण देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे ज० श्री मूख शृंगार हा - - - - बघेरवाल ज्ञातौ स० श्री तोला जा० सं - - - पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ - - - - देव जार्या सोहि - - - श्रेयोर्थं - - - श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[229]

सं० १८३० माघ शुदि ५ — श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० करापि — ।

[230]

सं० १८३० माघ शु० ५ सकल संघेन शांतिनाथ पाडु० कारापिता —

[231]

प्रणमहिये गुणवीस सय वरसे वइसाह — सुद्ध — - - बइ पियामह सिरि जिन कुशल सूरि पाय ठवणा कारिया सिरिमाल वंसे वदलीया गुत्ते साह कमला वइणा त्रिसाला सुपइ ठिय सयल सूरीहिं ॥ श्री ॥ ;

[232]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः

सं० १८४६ मीती वेसाख सुदी १३ - - - ।

[२३३]

सं० । १९३९ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सूरी [illegible]न । श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दानचंद गणिभिः प्रतिष्ठितं ॥ [illegible] ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर मे

[२३४]

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संवत् १९५० मि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंघे [illegible] बलात्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्नाय सकल कीर्त्ति भट्टारक [illegible] । [illegible] उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तद्भार्या केसरबाई [illegible] प्रति०

[२३५]

संवत् १९५५ पोस सुद ११ गुरु ॥ श्री कुंपक गच्छे श्री पूज्य [illegible] सूरि [illegible] तम् ॥ बाबू लछमीपत गोविंदचंद की माजी कनाविबे श्री दादाजी [illegible] ॥ श्री स्थूलभद्र सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरि [illegible]

राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है । [illegible] तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ठ वदि-८ जन्म फाल्गुन [illegible] फाल्गुन वदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है । [illegible] श्री नेमिनाथ के समय में जरासिंधकी भी यही राजधानी थी । [illegible] स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । [illegible] उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी [illegible] यहां किये । जंबुस्वामी, [illegible] आदि [illegible]

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड वहुतसे है और स्थान देखने योग्य है। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुलगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदय गिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैभारगिरि। पहाड़ पर वहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। वहुत से चरण वा मूर्त्ति इधरसे उधर विराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिला दिया गया है।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति। *

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुलाचलामरगिरि स्थैयः स्थिति स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाभिराम भुजगाधीशस्फटासंस्थितिः। पादासीन दिवस्पतिः शुभ फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु वांछित फ

(२) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविभोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राजां जय राम लक्ष्मण जरासंधादि भूमीभुजां। जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि श्री शालिनां संभवः प्रापुः श्रेणिक भूधवादि

---

* "जैन तीर्थ गाईड" के तवारिख सुबे विहार में उसके ग्रंथकर्त्ता लिखते है कि मर्यायान महल्लाके " मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुवा है --- संवत तिथि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति (१६) हर्फ उमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है वज्र शाखा वगेरह नाम वेशक मौजूद है" यह पढ़ कर मुझे देखने की वहुत अभिलाषा हुई। पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया। किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया। पहिले टुकड़ेके लिये वहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है। यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था। इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिससे वहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा। यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्त्ताका भी नाम विद्यमान है पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है।

(३) नविनो धीराश्च जैनी रमां ॥ २ यत्नातप कुमार श्री पालितन्पादि मानवम । सर्वार्थ सिद्धि संतोग तुङ्गो जाता किशापिदि ॥ ३ पत्र श्री विमलगिरिशिखरे धर्मे सेवा नामापिच श्री जैनेन्द्र विहार कृपण धरो पुर्णाप

(४) राज्ञास्थितो । श्रेयो लोक गुरोपि निखिल जिनो जन्मं कुमारे कृतं कीर्ति मान शुद्धानिधानमिह तस्कैः केर्न संस्तुयते ॥ ४ रात्रव संसारगार पारावार तरणार ... ... महत्तम तीर्थं । श्री राजवृक्ष

(५) द्वातीर्थे । गजेन्द्राकार महापीन प्रकार श्री विमलगिरि विपुल चूडा पीठे सकल महीपाल चक्रचूडा माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण सरोजे । सुरत्राण श्री ... पेरोजे महीमनुशासति । तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मलिक वयोनाम मण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक मह ... फुरुदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण स्वनिर्गुणि रंग नाजं ॥ पुंसो शिक्षादक्षि रसं कृतं गुणाय चक्षुः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुतारा सोयं विजानि तुपि मंत्रि सखीय वंशः ॥ ५ वंशोमुक्त वरिष्ठ श्रीः सहज पालाख्यः सुमुख्यः सतां जहे तन्यसनान सहपमरी शृंगारितांगः पुरा । ... जनस्तुत स्तिगुण पालेति प्रतीतो नव

(८) जातस्तस्य कुले सुधांशु धवले गहाजिधानो धनी ॥ ६ ... संकनाख्यः सकर्म कर्म विधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कलशादि गुणाधिधाम ... गृहेस्थः गृहिणी चिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समजवन् भुवने विनिताः ... संतति ... । तत्रादिमाजय इसे सहदेव कामदेवाभिधान महराज इति प्रतीताः ॥ ... संप्रति घडराजः श्री मा

(१०) न् सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । यान्यो ... कुलं ... स्य धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ८ प्रथम ... सर्वाति रीतिः । प्रजयति पदराजः सह

(११) ण श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्चोढराख्यः॥ १० द्वितीया च प्रिया भाति वीधी रिति विधि प्रिया । धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च दयिताद्या देवराजस्य राज्ञी गुण म

(१२) णि मयतारा पार शृंगार सारा । समभवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनुच गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कलत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः पीमराजोंग जातः । प्रथम उदित पद्मः पद्म

(१३) सिंहो द्वितीयस्तदपर घरूसिंहः पुत्रिका चान्हरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीवर्द्धमान जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिनंदः। सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

(१४) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समभवद्दशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव महीधर भेद वज्रः यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश मतीव विकाशवत्यां चांद्रेकु

(१५) ले विमल सर्वकला विलासः। उद्योतनो गुरुरभाद्विबुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु मुनि गणि वर्द्धमानः ॥ १६ तदनु भुवनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाभूरिः सूरिर्बभूव जिनेश्वरः । खरतर इ

(१६) तिख्यातिं यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकला श्रीचंद --- डुगणो वनौ ॥ १७ ततः श्रीजिन चंद्राख्यो बभूव मुनि पुंगवः । संवेग रंगशालां यश्चकारच बभारच ॥ १८ स्तुत्वा मंत्र पदाकारे रवनितः श्रीपा

दुसरा पत्थर ।

(१७) र्श्व चिंतामणिं ----- ताकारिणं । स्थानेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रे नवान्यायके । -- ता ऽ भय देव सुरिगुरव स्तेतः परं जज्ञिरे ॥ १९ ---

(१८) --- (जिनवल्लभ) - - शांगनोवल्लभो ---- प्रियः यदीय गुण गौरवं श्रुतिपुटेन सौधोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिनदत्तसूरिरभवद्योगीन्द्र चूडामणि मिथ्याध्वां

(१९) त निरुद्ध दर्शन – – – – श्रावक यान्य देशि सुगुरुः देवेन्द्र सर्वोन्नतः सेवदः पुण्यवतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ २१ ततः परं श्रीजिनचंद्र सूरिर्विद्युद निःसंग गुणास्त सूरिः।

(२०) चिंतामणि र्गालतले यदीये ध्युवास वासादिव भाग्य लक्ष्म्याः॥ २२ पदे लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टांत स्थिति बंध बंधुरमपि प्रक्षीण दृष्टांतकं। वादेर्वादिगत प्रमाणमपि यै र्वाक्यं।

(२१) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या बभूवु सूनः ॥ २३ अथ जिनेश्वर सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोभर भास्वराः। भुवि विबोधित सत्कमला करा समुदिता वियति स्थिति सुन्दराः ॥ २४ जिन प्र

(२२) बोधा हृत मोह योधा जने विरेजुर्जनित प्रबोधाः। ततः पदे पुण्य पदे दधीये सच्छ चर्या यति धर्म्म धुर्याः ॥ २५ निरुंधानो गोभिः प्रकृति जरुधीनां विलसितं क्रम क्रान्तो रस दश कला केलि

(२३) विकलः। उदितस्तत्पट्टे प्रतिहत तमः कुग्रह मति र्नवीनो लौ चंद्रो जगति जिन चंद्रो यतिपतिः ॥ २६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धार सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

(२४) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम जिनपते र्येन सोचे यशोभि श्चित्रंचक्रे जगत्यां जिन कुशल गुरु स्तपदे भाव शोभि ॥ २७ वाल्पेपियत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केली विलास सरसा हृदि शारदापि। सौभाग्य

(२५) तः सरस संविललास सोयं जातस्ततो मुनि पतिर्जिन पद्मसूरिः ॥ द्वा पद सुविशिष्ट निभाग्य शास्त्र व्याख्यान सम्यगवधान निधान सिद्धेः। जज्ञे ततो ऽस्त कलिकाल जना समान ज्ञान क्रिया

(२६) ब्धि जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ २९ तस्यासने विजयते सम सूरि वर्यः सम्यग दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः। श्रीजैन शासन विकासन सूरि धामा कामापनोदन सना जिन चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत — — —। श्रीमद्विहार पुर वस्थिति वच्छराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वच्छराजः सबान्धवः। प्रतिष्ठां कारयामास मंरूनान्वय

(२८) मंरूनः॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः।शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः॥ ३३ कर्त्तारोथ प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः। श्री मंतो भुवन हिताभिधाना गुरु शासनात्॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि भूमिते व्रजति विक्रम भूभृदनेहसि। बहुल षष्ठि दिने शुचि मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः प्रासाद एष कलसध्वज मण्डितो

(३०) द्रः। निर्मापकोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता भुवि सुप्रतिष्ठा॥ ३६ श्रीमद्भिर्भुवन हिताभिधेक वर्य्यै प्रशस्ति रेषाच। कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति रिव मूर्त्ता॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठक्कुर मा

(३१) ल्हांगजेन पुण्यार्थं। वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाभिधानेन॥ ३८ इति विक्रम संवत १४१२ आषाढ़ वदि ६ दिने।श्रीखरतर गछ श्रृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सूरि पट्टालङ्कार श्रीजिनेंद्र सूरिणामुपदे

(३२) शेन। श्रीमंत्रि वंश मंरून ठं० मंरून नंदनाभ्यां। श्रीभुवन हितोपाध्ययानां पं० हरिप्रभ गणि। मोद मूर्त्ति गणि। हर्ष मूर्त्ति गणि। पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्व देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

(३३) णादि महा प्रभावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाभ्यां। ठं० वच्छराज ठं० देवराज सुश्रावकाभ्यां कारि — — — — —स्य। श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः॥ मंगलं भवतु श्रीसंघस्य॥ छ॥ ७॥



गांव मन्दिर—धातुओंके मूर्त्ति पर।

(237)

सम्वत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४९७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ रवौ ऊ० ज्ञा० सा० सपुरा भा० सीलादे पु० कर्मसिंहेन श्री नमिनाथ विंब पितृ मातृ श्रेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव गुप्त सूरिभिः।

पाषाण पर।

(239)

सम्वत् १५०४ वर्ष फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटड़गोत्रे सा० देवराज पुत्र सं० पीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास। श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपट्टे श्रीजिन चन्द सूरिपट्टे श्री जिन सागर सूरीणां निदेसेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः।

(240)

ॐ नमः सिद्धं॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्र पक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे श्री मुनि सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे गंधी गोत्रे बुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरु पेतासाह पुत्र्या उमरबाई केन शांतनाथ विंबं कारापिता।

(242)

श्री शुभ सम्वत १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्री वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री वृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान भट्टारक श्री जिनरंग सूरीश्वर शाषायां य० यु० भट्टारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरी राज्ये श्री वाचनाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्त्योंदयोपदेशात् ओसवाल वंशोद्भव बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी वीवी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण कारिणो भवतु शुभमस्तु।

(243)

शु० स० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० ख० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्त्युदयोपदेशात् महताबचन्द संचीतीकस्य पत्नी चीरोंजी बीबी प्र० का० शुभमस्तु।

(244)

सं० १९११ व। शा० १७७६ प्र। शुचि शु। १० ति। श्रीचन्द्र प्रभ विंबं प्र०। भ। श्री जिन महेंद्र सूरिभिः का। सा श्री हकु----खरतर गच्छे।

विपुलगिरि।

(245)

संवत १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्र वासरे। श्री बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्भार्या संघवण निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुल गिरी---- अमै जीर्णा उद्धारिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे-- लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही।

(246)

सं० १८४८ मिती कार्त्तिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्यातिमुक्तकमुने मूर्त्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकैः ।

(247)

सम्वत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रभ जिन चरण न्यासः प्रतिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल दुतिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

(248)

संवत १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तु शुभं भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

(249)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीनेमिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्री राजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

(250)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्रीशांतिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धारं क० ।

(251)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र सा माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

(252)

ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमल स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री राजगृहे रत्नगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

(253)

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(254)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(255)

ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं॥ स्वपरयो कल्याण हेतवे ॥ श्रीः ॥

स्वर्ण गिरि ।

(256)

सं० १५०१ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० पीमराज पुत्र सं० खिवराजेन । भार्यां सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुटुम्बेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन वर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरि पट्टे श्री जिन सागर सूरीणां निदेसेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्री खरतर गच्छे ।

वैभार गिरि ।

(257)

सं० १५२४ आषाढ़ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिन चन्द्र सूरि विजय राज्ये तदादेशे श्री वैभार गिरी मुनि मेरूणा भि० ॥ -- श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीपू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

(258)

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्री जिन चंद सूरिणामादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायै धन्नाशालि भद्र मूर्त्ति -- का० प्र० पीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

ॐ नमः ॥ सम्वत १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधि गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

(260)

॥ श्री सम्वत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताब रायजी तद्धर्मं पत्नी जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं। स्था० राजगृह नगरोपरि वैभार गिरौ ॥

(261)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति जेष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिपरे श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं भ० श्री जिन हर्ष सूरिभिः।

(262)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने। श्री व्यवहार गिरि शिपरे। श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं। भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः॥

(263)

सुभ स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्रीमत् शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत्खरतर ग० श्री जिन रंगसूरीश्वर साखायां वृ० भ० यं० युं० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वं० वावू मोहन लाल कस्यात्मज बावू हकुमत रायेन प्र० का० शुभमस्तु ॥

(264)

ॐनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य चरण क० प्र० श्री वृ० प० ग० भ० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरी वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० सु० कीर्त्युदयोपदेशात् वावू पुरयाल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन प्र० का० श्री वैभार गिरे सुभमस्तु ॥

(265)

॥ सु० स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमत्पार्श्व-नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत खरतर ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर शाखायां श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् ओ० वं० पुस्याळ चन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराण कुंवर श्राविका प्र० का० वैभार गिरे।

(266)

॥ ॐनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा० श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्वृ० ख० ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर शाखा० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि व० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वंसोद्भव वावु मोहनलालजी त् कस्यात्मज वावु हकुमत राय- -कस्य गोत्रीय प्र० कारापित शुभमस्तु । वैभार गिरी ।

(267)

ॐ नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभ वा० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्वृ० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साखा० भ० यं० यु० प्र० श्री जिन नंदी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत् शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् वावु महताव चन्दस्य संघिती गोत्रीयो तत्पत्नी सिरांजी वीवी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे।

(268)

सं० १९११ व । शाके १७७६ प्र० । शुचिः सुदि । तिथौ श्री नेमनाथ पादन्यासो कारा० प्र० भ० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः का । ने० । गो । श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी महाकुंवा—तस्या श्रेयोर्थं भवतुः ॥

कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान वडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुव्वर
नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी (इन्द्रभूति)
का जन्म स्थान है । वौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विश्वविद्य
और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्त्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । गवर्ण
के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ भई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उप
वहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

पाषाणपर ।

(269)

॥ ५ ॥ संवत १४७७ वर्षे ज्यैष्ट वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंवं का० ।

(270).

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी
स० श्रीपण कारित श्री महावीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरी
निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाष सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत
ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठ० नीहालो तत्पुत्र भार्या ठ
रेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुव्वर ग्राम --कारा पिता वृहत्खरतर गच्छे पू
श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अभय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

(272)

सम्वत १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने---- मासि शुक्र पक्षे सप्तमी गुरु वासरे वृहत श्री षरतर गच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्र सूरि पादुका ठाकुर देया तत्पात्मज मोदन तस्य भार्या न्हालो श्राविका पुण्य प्रभाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता श्री माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री रत्नतिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी को राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर वसा कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वाति, भद्रबाहु-आर्य महागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी और सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल विहार उड़ीसाके शासन कर्त्ता यहां रहनेके कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

(273)

संवत १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ भृगुवासरे श्री पटलीपुर वास्तव्य । श्री सकल संघ समुदायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापितं । कार्य्यस्याग्रेश्वरी तपा गच्छीय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्दजी प्रतिष्ठितं च श्री सकल सूरिभिः शुभं भूयात् ।

धातुओं के मूर्त्तिपर।

(274)

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्री दूगड गोत्रे सा० अर्जुन पुत्रेण सा० उदय सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्री पालादि युतेन आत्मश्रेयसे श्री चंद्र प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्रभ सूरिभिः॥

(275)

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ बिंबं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्य्या हीरादेवी श्री--कया।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे घौरपट श्री देवां कीर्त्ति भटकी घौरेय मुलसंघे सहिजे पतिभर्जार्पिः भ्यमिरि पुत्र उदटय-पिम्वराजामन। शुभं॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाप सु० ५ चन्द्रे उप० सा० पेता भा० पेतलदे पुत्र षाषा वील्हा-देपा पेलाकेन डूंगर निमित श्री धर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि तिलक सूरिभिः॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० साल्हा भा० माल्ही पु० ऊदा भा० ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन पीकातमि० (?) श्री वासुपुज्य बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः॥

(279)

सं० १५१९ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नागू नाम्ना भा० चनू पुत्र डूंगरादि युतेन भ्रातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छेश श्री रत्नशेषर सूरि पुरंदरैः॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ सीणुरा वासि प्रा० वा० मांई (?) आत्म वाकुंदुत नम-घरेण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री रत्नशेषर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आचंद्रार्कं जयतत्॥ श्री॥

(281)

सं० १५१८ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे ना० लाषू भार्या धर्मिणि पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन वृद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे श्री जिन हर्ष सूरिभिः।

(282)

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाय गोत्रे उकेश सं० सान्हा भा० कमा पुत्र सं० नरसिंह भा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना भ्रातृ साहसमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री –सूरिभिः॥ देप। तप— श्री॥

(283)

सं० १५२३ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रातू सुत सा० कान्हा भा० सोनी पुत्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य बिंबं कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य वाशियाः॥

(284)

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय घेवरीया गोत्रे सा० केल्हण भा० झूणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साझू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंबं कारि० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(285)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लींबडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी श्राविकया। पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री कुंथनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

(286)

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वामी प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः।

(287)

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देल्हाणघा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण ८ श्री शांतिनाथ विंबं का० ॥ प्र० ॥ उके । – कव ।

(288)

सं० १५३८ वर्षे आषाढ़ वदि ५ स – – र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल – – – श्री ॥

(289)

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय मांडिया गोत्रीय सा० आजिता पुत्री सा० लापा भार्या आठो सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंबं कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पट्टालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात् माह सुदि १ ॥ दिने ॥

(२९०)

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्र नवम्यां श्री माठ वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र सा० सकतनेनेदं पार्श्वनाथ बिंबं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री जिनराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(२९१)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम भा० फलापुत्र सा० लासा भा० कुंअरि नाम्न्या मुनि सुव्रत बिंबं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ नळकच्छे ॥ (?) ॥

(२९२)

सं० १५७६ वर्षे वैशाष सु० ३ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे। सा० माला भा० खाकू नाम्ना सुण्यो (?) जावड़ शी० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री संघेन ॥ श्रेयोऽयं ॥

(२९३)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अभयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अभय मंदिर गणि अभय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा पट्टे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः।

(२९४)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उसवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साह्यान भा०-जसिरि पु० पदमा-णापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहनाकेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री

शितलनाथ विंबं कारितं प्र० नागोरी तपागच्छे भ० श्री राजरत्न सूरिभिः बघणोर वास्तव्यः श्री ॥

(295)

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० नानजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र-- एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लिः ॥ श्री ॥

(296)

सं० १८५६ वर्षे वैशाप सुदि ३ वुधे बीबी मेंभाजी श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं सर्व समुदायेन ।

(297)

सं० १७४० वर्षे मार्गशिर ----श्री शांतिनाथ विंबं कारितं ।

(298)

सं० १७६६ वै० सु० २ ----पार्श्व—

(299)

सं० १७६३ व० फा० व० १४ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ---।

(300)

सं० १७७१ वर्षे शाके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुक्रे माक्सूर वास्तव्य बीराणी गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० भीमसी तत्पुत्र सा० मयाचंद वासी हाजीपुर पटणा

कातेन शांतिबिंबं गृहीतं श्री मेदिनी पूरे प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे भ० विजयरत्न सूरि राज्ये प० जय विजय गणिभिः॥ श्री ॥

(301)

सं० १७८६ वर्षे माघ सुदि १५ दिने चोरडिया गोत्रे सा० जीवण रामजी भार्या मन सुषदेजीः। सुत जगतसिंघजी बिंबं कारापितं।

(302)

सं० १८२० वर्षे मिः मि–सु० ६ श्री भ० श्री जिन लाभ सूरि – – – –

(303)

सं० १८२० वर्षे मिः मा० सु० ५ श्री भ० जिन लाभ सूरि प्र० धीर गोत्रे श्रे० मोतीचंद कारी – – जिनः – –।

(304)

सं० १८२० मि० फा० कृ० २ बुध दूगड़ महताव कुंवर का० प्र० सागर – – – श्री अमृत चन्द्र सूरि राज्ये

(305)

२४ जिन माता पट्टपर।

संवत १८४८ मिति भाद्र सुदि ११ तिथौ॥ श्री पाटलिपुत्रे माल्हू गोत्रे सा० कुसुमच-न्दजी पुत्र गुलाबचन्द भार्या फुल्लो बीबी कया इष्ट सिध्यर्थं श्री चतुर्विंशति जिन मातृ स्थापना कारिता प्रतिष्ठिता च श्री जिनभक्ति सूरि प्रशिष्य श्री अमृत धर्म वाचनाचार्यैः श्री रस्तु।

(306)

सं० १९०० मिः आषाढ़ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विंबं प्रति० खरतर भट्टारक गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशी दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दोलतरामेन स्वश्रेय सोर्थम् ।

पाषाण के मूर्त्तियों और चरणों पर ।

(307)

(चंन्द्रप्रभ विंबपर)

सम्वत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढ़ा गोत्रेगाणी वंसे सं० ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० धनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्त्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंब प्रति --

(308)

संवत १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह कुंर पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥

(309)

॥ श्री मत्संवत १६७१वर्षे वैशाप सुदि ३ शनौ आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० कुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन विंबं प्रतिष्ठापितं सं० चागाकृतं।

(310)

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाप सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० षेतसी लघुभ्राता सा० नेतसी

युतेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य विंवं प्रतिष्ठापितं सं० क्रुंरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाप सुदि ३ शनौ श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाति लोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्तादे पुत्र सा० पेतसी भा० जक्तादे पुत्र सा० – सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री विमलनाथ विंवं प्रतिष्ठितं सा० क्रुंरपाल – – ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री क्रुंरपाल स० सोनपालैः स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ श्रीधर्म्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शु० ९ सा वेणीदास पुत्र मीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा करापितं मीराणी गोत्रे पाडली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल ९ सा० वेणीदास पुत्र मीमसेन पुत्र मयाचन्द मीराणी गोत्रे – – – प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ९ सा० वेणीदास पुत्र मीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र० मीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शांतिनाथ ॥

(316)

॥ सं० १७८९ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय षेमचन्द जीना पादुका ॥

(317)

॥ संवत १८१९ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक चंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥

(318)

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरौ गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि – – नाथ बिंबं कारापितं ।

(319)

॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ सवंत् १८२९ श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२९ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(320)

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैसाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरूणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालं कृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य । समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

(321)

॥ सम्वत् ॥ १८७७ ॥ वर्षे वैशाष शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरूणां चरण पादुका प्रतिष्ठिता भट्टारक श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालंकृत श्री जिन

॥ संवत १८७७ वैशाख [illegible]

चन्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--चदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द्र तत्पुत्र श्री भग्गुलाल कीर्त्तचन्द्र तत्पौत्र किसनप्रसाद तनय पंचादि सपरिवारेण स्वश्रे- योऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

(३२२)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

(३२३)

॥ संवत २४९ वर्षे वेशाष सुदि ३ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह जीवराज पापडीयाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे--

(324)

संवत १५४८ वर्षे वैशाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज पापढिवाल सहैरम-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

(३२५)

॥ संवत १६०१ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे कुरवंशे महाराजाधिराजजी श्री मत स्याहजा राज्य भ० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे भ० श्री देवेन्द्र कीर्त्तिजी तदाम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभं ।

(३२६)

संवत १७३२ वर्षे मार्गसिर्ष वदि पंचमी गुरौ ढाकामध्ये----काष्ठा संघ माथुर गच्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म भट्टारक जयचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल गांगलु गोत्रे सा० गुलाल दास भा० सुलाढे पुत्र० । सावलसिंघजी अमरसिंघजी देवराज सिंह वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेऽन्तिके---- ढाकायां प्रतिष्ठा । --- पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

(327)

नेमनाथजीके विंवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्टासं (घ) माथुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य याम्नाय भ० देवेंद्र कीर्त्तिदेव तत्पट्टे भ० जगत् कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० ललित कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० राजेन्द्र कीर्त्तदेव हदाम्नाय अग्रोद् कान्वय वासिल गोत्रे सा० श्री सोपीलाल तत्पुत्र बाबु मुनिसुव्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंवं प्रतिष्ठा कारापिता आरामपुर वास्तव्य---- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

(328)

॥ श्री संवत १९१० शाके ॥ १७७५ साल मिती वैशाख शुक्र पंचम्यां गुरौ पाटलीपुर सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटरू मल तत्पुत्र सीवनलाल प्रतिष्टो कारापितं श्रीरस्तु ।

(329)

श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत १८४८ वर्षे मार्गशिर वदि ५ सोमवासरे श्री पाडली वास्तव्य श्री सकल संघ समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्य्य स्याग्रेस्वरी श्री तपा गच्छीय श्राद्धैः श्री लोढा श्री गुलाबचन्दजी प्रतिष्ठि तंसकल सूरिभिः ।

(330)

चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं कारयित्वा तत्र तेषां चरण न्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यैः ॥

सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

(३३१)

चरण पर ।

अध्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठि सुदर्शनस्य इमे पादुके संप्रतिष्ठिते सकल संघेन शुभं भवतु ॥

दादा वाड़ी ।

(३३२)

संवत १६८२ मार्गशिर्ष शुदि ५ सा० कटार मल तत्पात्मज सा० कल्याण मल पुत्र चिंतामणि श्री जिन कुशल सूरि० प्र। बेगमपुर वास्तव्य ।

(३३३)

संवत १६९९ वर्षे पूर्व देशे पाडलिपुर नगरे बेगमपुर --

(३३४)

तपागच्छे भ० श्री ५ श्री हीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः प० चंद्र कुशल गणि नित्यं प्रणमतिश्च। सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ८ सा० बेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी गोत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द प्र० प० पाडलीपुरे ।

(३३५)

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८४४ वर्षे शाके १७०९ प्रवर्त्तमाने मिति माघ मासे शुक्ल पक्ष पूर्णिमायां साध्वी महत्तरा सुजान विजयाजी तत् शिष्यणी दीप विजयाजी तत् शिष्यणी [illegible] वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी सकल संघेन प्रतिष्ठा कारापितं शुभमस्तु ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारिबागमें है। १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं। यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है। तलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं। यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था। यहां पर चरण पादुका है। यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइडसे लिया गया है।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर।

(336)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्भार्या मेहताब कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ट भ्राता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

मधुवनके मन्दिरके मूर्त्तियों पर ।

(337)

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन बिंबं प्रतिष्ठितं --।

(338)

संवत १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शुभ स्वामी गणधर बिंबं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च बालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

(339)

संवत १८७७ -- श्रीपार्श्व बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं -- सांवत सिंहज पदार्थ मल्लेन ---।

(340)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वबिंबं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा महतावो -- मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं।

(341)

संवत १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १२ श्रीपार्श्वनाथ जिन बिंबं दुगड़ उमेदनगर श्राद्धी फत्ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च।

(342)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं ओसवाल दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः।

(343)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनबिंबं कारितं ओसवाल नवलखा गोत्रे सेठामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च बृहद् भट्टारक खरतर गच्छे श्री जिनाक्षयसूरी पट्टधरैः श्रीजिनचंद्र सूरिभिः।

(344)

सं० १८९३ वर्षे ---श्री ऋषभ जिनबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ---।

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रपण गणधरायुते शके (१७६२) फाल्गुनासितदले सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्त्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ जिनमूर्त्तिः कारापितं श्री० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत युतया वृहत्खरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सूरिणा प्रतिष्ठिता।

(346)

सं० १९०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंवं का० --- ।

(347)

सं० १९१० शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंवं प्रतिष्ठितं वृहत्खरतर गच्छे ---।

टोंकपरके चरणों पर।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे।

(349)

॥ संवत् १९३१। माघे। शु। १० चंद्रे। श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता। मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे। भट्टारक। श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसालचंदेन श्री संभव पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे॥

(३५१)

संवत् १९३० । माघे ।। शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन कारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(३५२)

॥ सं० १९३३ का जेष्ट शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन चंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां । स्थापितांच । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(३५३)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० नुसाल चंद्रेण श्री सुमति नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(३५४)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णो-द्धार रूपा । गुर्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(३५५)

॥ सं १९४९ माघ सु० १० शुक्रवा । श्री [illegible] शेठ [illegible] श्री पद्म प्रभु जिन चरण स्थापित प्रति । भ । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(356)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-पादुका कारापिता प्र० ।

(357)

संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तया स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सुरिभि । प्रतिष्ठितं च ।

(358)

॥ संवत् १८४९ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ वुद्धवारे । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भट्टारक । श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(359)

॥ संवत् १९३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका । अहमदावाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(360)

॥ संवत १९३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुवधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य ।सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता कारापित च । मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम । श्री श्री जिन शांति सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(३६१)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री सुगाल पदेन । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(३६२)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री शीतल नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोधार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ बड़गार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(३६३)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह सुगाल पदेन श्री श्रेयांस प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(३६४)

॥ संवत् १९३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीविजय गच्छे । भ । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(३६५)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह सुगालपदेन श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(३६६)

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री विमलनाथ जिनेंद्रस्य पादुका जीर्णोद्धार रूपं । गुजरात का श्री संघेन । तथा स्थापना कारापिता । बड़गार श्री विजय गच्छे । श्री पू प्र । भट्टारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

(368)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे भट्टारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

(369)

॥ सं १९१२ वर्षे शाके १७७७ मिते मासोत्तम मासे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षौ नवमी तिथौ सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता वृहत् खरतर भट्टारकोत्तम भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्थ श्री संघेन कालिपुरस्थ संघेनया ।

(370)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भट्टारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

([illegible])

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार रूपा । अहमदाबाद वास्तव्य । सेठ मगु भाइ प्रेम चंद्रेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

([illegible])

॥ संवत १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह गुलाल चंद्रेन श्री कुंथुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

([illegible])

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री कुंथु जिनेंद्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बई वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता -- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर -- भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

([illegible])

॥ सं० १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय सा० गुलाल चन्द्रेन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

([illegible])

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापिता भट्टा० पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितो ।

(377)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेन। श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता म० श्री तपा गच्छे।

(378)

॥ संवत् १९३१ माघे। शु। १० चंद्रे। श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य। चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य। सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता मलधार पूर्णिमा। श्री मद्विजय गच्छे। भट्टारक। श्री पूज्य। श्री जिन शांति सागर सूरिभि प्रतिष्ठितं। स्थापितं च॥

(379)

॥ सं०। १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुव्रत जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे॥

(380)

॥ संवत् १९३१ माघे। शु। १०। श्री मुनि सुव्रत जिनेंद्रस्य। चरण पादुका। जीर्णोद्धार रूपा। गुजरातका। श्री संघेन स्थापना कारापिता। मल। पूर्णिमा। श्री मद्विजय गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं॥ स्थापितं च॥

(381)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमिनाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे।

(३५२)

॥ संवत १८३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरणपादुका। जीर्णोद्धार कृपा। अहमदाबाद वास्तव्य। सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा- पिता। पूर्णिमा विजय गच्छे भट्टारक। श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं च

तेजपूर (आसाम)

राय मेघराजजीका मंदिर।

(३५३)

संवत १५१३ वर्षे वैशाष शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मानंद भार्या हीरू सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः।

(३५४)

सं० १९४३ का मिति वैशाष शुक्ल सप्तम्यां ----

(३५५)

सं० १९५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री जिनदत्त सूरि नाम पादुका का०।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल – नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट।

धातुयोंके मूर्त्ति पर।

(३५६)

श्रीपार्श्वनाथ बिंब।

ब्राह्मण सत्य संयकः क्रियाचे सुनः सुधुपयक श्री द्रः (?) श्रीहमक सूरि [illegible] द्रकुळे कारयामास संवत १०६२

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेश्वराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पाल्हण राल्हणाभ्यां स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

ॐश्री मूलसंघे गुणभद्र सूरेः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) वालान्वय सारभूतः ।
यो विस्तु (श्रु) तोसो सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तस्माच्छ्रीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३९ फा सु० २ गुरौ ॥

(389)

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय आपणा० सा० छाहड त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

वडावजार–पंचायति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पतीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥ कारिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर।

(३०१)

॥ संवत १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या रूपादि सुत वूजाकेन भार्या सोही सुत थीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारितः। आगम गच्छे श्री अमरसिंह सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(३०२)

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० नरबादे सुत सा० नद्राकेन भा० करमी पु० पाल्हादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः।

(३०३)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशाखायां सा० प्रेमचंद भार्यादाम स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः।

कलकत्ता अजायब घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

(३०४)

--संवत १-८१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय अंबहृत सं० केशव सुत सं० मंडलिक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदे सुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-मेघाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री सोभागिनि प्रमुख रामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽर्थामहाय श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं । वृद्ध तपागच्छ नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पट्टालंकरण भ० श्री उदय वल्लभ सूरिभि श्री ज्ञान सागर सूरि युतो प्रतिष्ठितं।

(395)

संवत १६०८ वर्षे माघ वदि ९ गुरौ प्राग्वाट ज्ञाती सा० राघव भा० रतना सा० नरसीआ भा० सुजलदे सा० रणमल भा० वेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ विंवं प्रतिष्ठितं।

म्युनिक (जर्मनि) के जादुघरके धातुकी मूर्त्ति पर।

(396)

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्ठिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुडाकेन भा० सुहवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र सूरि पट्टे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु।

डाः कुमार स्वामिके पास 'समवसरण' के चित्र पर।

(397)

संवत १६८० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री मदुत्तराध गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यमाने लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्त्तियों पर।

(398)

सं० १५२७ पोष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सहिजक तत्पुत्र श्रे० डूंगर भा० श्रा० सुढि सपरिवार भा० सहिजलदे घरमसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ विंवं का० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

([illegible])

सं० १५३४ वै० शु० १२ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० नागा भा० राजू पु० सा० [illegible] सुत् भा० रत्न कडू भ्राता सा० कियाउच मेच आदि सपरिवारेण श्री [illegible] बिंबं का० प्रति० श्री तपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्री [illegible]नगरे ।

जैपुरके बेपारियोंके पासकी मूर्त्तियों पर ।

([illegible])

सं० १४०५ वैशाष सु० ३ श्री उएस गच्छ [illegible] गोत्र प्र० सा० [illegible] सा० [illegible] पुत्र संघ० सा० षाहूकेन सकुटुंबेन श्री रिषभ बिंबं का० प्र० श्री [illegible] सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १५१२ वर्षे चै० शु० ५ ओसवाल गोत्रे सा० [illegible] भा० [illegible] सा० [illegible] केन भा० [illegible] प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं का० श्री [illegible] सूरिभिः ॥

अजमेर राजपुताना म्युजियमके बारलि गांवके प्राप्त पत्थर पर । *

([illegible])

---विरय भगवत (त) -- य -- [illegible] लिय ([illegible]) -- ([illegible]) [illegible]-

लिनि -- रंनि [illegible] --

* [illegible]

❀ वनारस ❀

काशीदेशका यह वाराणसी वा वनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है। हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पोष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं। महल्ले भेलुपुरा और भदेनीमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं। यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ-वदि ३ केवल ज्ञान भया है। निकटमें वौद्धोंका सारनाथ नामक प्राचीन स्थान है।

सुत टोलका मंदिर।

पंच तीर्थी पर।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्रे० मूंधा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थं श्री शितलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक सूरि पट्टे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

(404)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्रे० जावड़ भार्या पूरी सुत घर-णाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं श्री निगमागमा भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः॥ श्रीः॥ श्रीः॥

बद्दुजंका मंदिर ।

([illegible])

सं० १५१९ वैशाष शु० ५ प्राग्वाट सा० सिघा भा० कादां पु० साह [illegible] भा० संजनी प्रमुख सुरस श्री-जिनावलि का० प्र० तपा [illegible] सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

([illegible])

सं० १४८५ वर्षे श्रा० सुदि १० रवौ माल्हू --ज्ञा० [illegible] पु० [illegible] भा० हेमादे पुत्र साह चाडाकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं [illegible] प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

([illegible])

सं १५८६ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय [illegible] पनपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

([illegible])

संवत १२५७ ज्येष्ठ सु० १० [illegible] --- [illegible] कारिताः ॥

रामचन्द्रजी का मंदिर।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूराणा गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जगद भार्या जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्रे० महावीर बि० का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्ये श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५९ ज्येष्ठ वदि १२ शनौ सूराणा गो० सा० अमर भा० अड़हव दे सुत सा० ताला साल्हा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० भ० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पाल्हण देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिघा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरीन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघेन॥ शुभं भवतु सर्वदा सर्व कुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा --- पु० --वाल्हा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ बिंबं का० प्रति० पर्वार्य गच्छे श्री यशोदेव सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ घेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीज देवी गोवेद पु० पीमा पु० सा० सिंघण सुमेरू आरम पुण्यार्थं कुंथुनाथ बिंबं श्रीमल धार गच्छे भ० गुण कीर्त्ति सूरि प्रतिष्टितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन।

(४१४)

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवौ श्रीमाल मठडीया गोत्रे सा० परमानंद सा० पहराज पुत्र सा० हंसरेण भा० तिलकू पु० खिमदास युतेन पार्श्वनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं । प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन तिलक सूरि प० श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिन...

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट ।

(४१५)

सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीपंडेरकीय गच्छे श्रीयशोदेव भार्या ... पु० ... ---मयणल्ल---णिग भार्या कैल्हण सहितेन बिंबं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः ।

(४१६)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उके० व० सा० रेढा भार्या रूपिणी पुत्र पद्मा ... जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

(४१७)

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञा० लागलिक गोत्रे साह धना पु० सं० पासवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपट्टे तद् गुरु पक्षपाति भट्टारक श्री सावदेव सूरिभिः ।

(४१८)

सं० १५१८ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रि दलीय कांकरा गोत्रे ठ० नाग राज पु० पद्म भार्या धर्मिणि सु० सं० श्री देवल दास भार्या धीर सिंधि पु० सं० सूर्यदेन आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागर सूरि पट्टे श्रीजिन सुन्दर सूरि पट्टे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(419)

सं० १५१९ आषाढ़ वदि–मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० घर्मिणि पु० स० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन वुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विंवं का० प्र० श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः॥

(420)

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराज भा० माणिकि सुत देवदत्त भा० रूपाई सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे।

(421)

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या सुहयदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंवं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रतन सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगरे॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर।

(422)

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मंडलिक सुत कामा भार्या कामीदे सुत भाभण नगराज रता सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ विंवं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः।

(423)

सं० १५४८ वर्षे वैशाष शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धीरम सु० वेला मातर भार्या सोही सु० महिराज जिणदास महिपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयोर्थं श्री श्रेयांस विंवं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना धांदू वास्तव्यः॥

सिंहपुरी ।

([illegible])

सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदि १० शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० [illegible] भार्या [illegible] पु० सा० अखपति सा० असरू देवी माऊं सुत सुपराज प्रमुख कुटुम्ब [illegible] कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री उदयसागर सूरिभिः ।

([illegible])

चरण पर ।

सं० १८५७ मिति चैत्रक मासे कृष्ण पक्षे पञ्चम्यां [illegible] सूरि विजयराज्ये श्री सिंहपुर ग्रामे तेषां [illegible] स्थाने [illegible] समस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराणां [illegible] श्रीजिन [illegible] सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्री[illegible] गणिभिः [illegible] ।

सिजापुर ।

पद्मावती मन्दिर ।

([illegible])

श्रीपार्श्वनाथ बिंब पर ।

सं० १३७८ वर्षे उपकेश ज्ञातीय [illegible] सा० [illegible] सुत सा०— जूठेन पितृ खेतसी सा० प्रति० श्री [illegible] सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १४२० वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे [illegible] ज्ञातीय [illegible] खेतसे सुत जोलाकेन श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] संताने श्रीधर्मदेव सूरिभिः ॥

(428)

सं० १४८२ व० वैशाष वदि १ प्र० कूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदे पु० महिराज जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचद्र सूरिपट्टे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

(429)

सं० १४९० व० वैशाष वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तत्सुताभ्यां स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विंवं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

(430)

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जसमादे सुत रागा भीमा पीमाभिः भ्रातृ पेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विंवं का० प्र० श्री पीपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपट्टे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

(431)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवौ उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्ट सा० माडण भा० मोहणि पु० काल्हा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे जयचंन्द्र सूरिपट्टे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

(432)

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवौ उप० ज्ञातीय कठउड़ गोत्रे सा० धरसा भा० माल्ही पु० रामा भाढा राजा चांदा भा० मरघू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामि विंवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे भ० श्री सोमकीर्त्ति सूरिभिः सद्रंछलिया नगरे ।

([illegible])

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री आगरा [illegible] ज्ञातीय लोढा गोत्रे साधु-ज्ञा सं० ऋषभदास भार्या रेवश्री तत्पुत्र श्री कुंरपाल सोनपाल [illegible] स्वानुवर दुनीचंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥

([illegible])

सं० १८७७ मि० फा० सु० १२ श्री कुंथुनाथ जिन बिंबं हू० त्रिभुवनचंद्रेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १९९७ फा० शु० ५ श्रीपार्श्वनाथ बि० प्र० श्री पार्श्वनाथ बि० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिण्युपदेशेन कारिता। सेठ उदयचन्द धर्म पत्नी महाकुमारिभिः। [illegible] चारित्र नन्दन गणिभिर्देश---

([illegible])

सं० १९९७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिभिः का० [illegible] नाथूराम पत्नी [illegible] वाचक चारित्र नन्दन गण्युपदेशात् ॥

सेठधनसुखदासजी का मंदिर।

([illegible])

सं० १९८२ वर्षे माह वदि १ बुधे श्री [illegible] ज्ञातीय [illegible] भार्या [illegible] सुत देपाकेन श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। -- गच्छे [illegible] सूरिभिः ॥

(438)

सं० १५३२ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने बघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा० श्रीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महू पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ बिंबं करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

(439)

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं। छजलानी चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चोरड़िया मनुलाल वधू --

(440)

सं० १८९७ का० सु० ५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० श्रीजिन महेन्द्र सूरिणा का० । सकल श्रीसंघे ।

देहलि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है। कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था। हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी। मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही। कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिसको छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है।

चेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

(441)

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ ओं गागसादेव धर्म्मोंयम्-- (आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता)

(४४७)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० व० ११ गुरौ सोमसुर [illegible] उकेश [illegible] सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्र सधाकेन भा० [illegible] प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं -- [illegible] सूरिभिः ॥ [illegible] गोत्रे ॥

(४४८)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे [illegible] सा० [illegible] साधु [illegible]पाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परबत सांडादि युतेन [illegible] श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री [illegible] सूरि पट्टे [illegible] । [illegible] सूरिभिः ॥

(४४९)

संवत १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्रे० [illegible] सुत पांपाकेन भा० धर्मिणि नामाणिकादि कुटुंबयुतेन [illegible] नमिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिभिः [illegible] ।

(४५०)

सं० १५२२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उकेश वंशे [illegible] सा० [illegible] पदे तोल्ही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० पेताकेन [illegible] पुत्र [illegible] चांपा परमा युतेन सा० पोपा पुण्यार्थं श्री मुनि सुव्रत [illegible] चंद्र सूरिभिः ।

(४५१)

सं० १५२६ माघ सुदि ५ दिने प्राग्वाट [illegible] सा० [illegible] केन भा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठि [illegible] लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(447)

संवत १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुड़ गोत्रे व० अभय राज भार्या आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख परिवृतेन श्री आदि जिन विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः।

(448)

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे वहुरा हीरा भा० हीरादे पु० जीदा सोभा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः अहिलाणी।

(449)

॥ श्री पार्श्वनाथ स० १६०५ फागुन सुदी दसमी चरवाड़िया गोत्रे गागपती त्वर-मिनी पुत्र पेतु लघु भ्रनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपली गच्छे भ० श्री भावतिलक सूरिज्ञिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिषर।

(450)

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे----।

(451)

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंघ जी राजे श्री मूलसंघे आम्नाये वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री विइ कीर्त्ति स्तदाम्नाय पंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० भ० श्री कचराज भा० उसदे कोडमदे गुर्जरि पु० २ धातु दानु स० श्रीरायत भा० रयणदे---पु० हरदास ---भा० लहिमादे लाढ़मदे --।

([illegible])

सं० १६८७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाळ ज्ञातीय सा० तेजसी भार्या [illegible] बिं० का० प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १६८१ व० फा० शु० १० भ० चंद्रकीर्ति प्र० [illegible] ज्ञाती [illegible] सा० नीमा भा० जसपादे ।

([illegible])

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे — [illegible] पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द्र [illegible] [illegible] श्रीमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके बिंब पर ।

([illegible])

संवत् १६८६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरौ [illegible] सा० सोनापाई [illegible] श्री सुमतिनाथ बिंब का० प्र० [illegible] विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृतैः ।

सर्व धातुओंके मूर्त्तियों पर।

(456)

ओं। संवत ११ ९७ वैशाष सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सतु श्री वि---।

(457)

संवत १२८० वर्षे ---.---सांढा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३२१ अ० व० २ हल--- ।

459)

सं० १४३३ आषाढ शु०---भा० लघु व्य० आसा भा० ललतदे--श्री पार्श्वनाथ वि० का० श्री गुणभद्र सूरीणामुपदेशेन।

(460)

सं० १४४५ पौष शुदि १२ बुधे ऊ० श्रे० जोला भा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं प्र० ऊ० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः।

(461)

सं० १४५४ वर्षे झोठा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा भा० पापी पुत्र लापाकेन स्वपुत्र वीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छ सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव सुन्दर सूरिभिः।

(४९८)

सं० १२६३ वै० सु० १०—श्रा———

([illegible])

सं० १२७१ माघ सुदि १० रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा: रामा भ्रा०——[illegible] श्रेयोर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी ———।

([illegible])

सं० १२७२ वर्षे फागुण सु० ८ शुक्रे ऊ० ज्ञा० सा० लिंबा [illegible] भा० केल्हु पु० हापा भ्रा० तेजू पु० करमोकेन पितृ——श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः॥

([illegible])

सं० १२७८ वर्षे माघ सु० ५ दिने सा: [illegible] महावीर बिंबं पुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभि: [illegible]

([illegible])

सं० १२८२ वर्षे माह सुदि ५ [illegible] पुत्र पोपाकेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिं० का० प्र० श्री [illegible] ता० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री——देव सूरिभिः।

([illegible])

सं० १२८[illegible] वर्षे माघ सु० ५ सोमे [illegible] पु० लगाद [illegible] भ्रा० [illegible] पित्रो [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः श्री [illegible] सूरि सहितेन॥

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा भा० रूपाई पु० कालू पाचाभ्यां भ्रा० अदा भा० आल्हणदेवि: श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०–प्राग्वाट सा० साजण भा० लापू पुत्र केल्हाकेन भा० लक्ष्मो भ्रातृ भीम पदमादि कु० यु० श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री–५।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ट सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराज भार्या सीधरही पुत्र सा० मोहिल घण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहद्गा० श्री मुनि-श्वर सूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसलदे पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विंवं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(472)

सं० १५०१ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर भार्या रैनसिरि तत्पुत्र सोनिग भार्या पेमा प्रणमति ।

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने ऊकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० [illegible] [illegible] सत्पुत्र सा० सांगरण पुत्र सहसा लष्कड़ादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे।

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्रे [illegible] ऊदा भार्या [illegible] [illegible] पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे [illegible] सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने ऊकेश ज्ञातीय सा० पाथा भा० [illegible] [illegible] केन भ्रा० वापू सु० पारूहेयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिं० का० प्र० [illegible] श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः। [illegible]।

([illegible])

सं० १५०७ वर्ष वैशाख वदि ६ गुरौ श्री [illegible] ज्ञातीय [illegible] [illegible] भा० [illegible] तयोः सुताः श्रे० भार्या [illegible] [illegible] [illegible] श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री [illegible] सूरिभिः [illegible]।

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे फा० सु० — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भार्या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सूरिभिः।

(478)

संवत १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र सा० कमलाकेन पुत्र जावा गोरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ऊ० ज्ञा० सोघिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा भा० जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिं० का० प्र० श्री संडे-गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरीणां पट्टे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः॥

(480)

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ऊ० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० काल्हा भार्या झबकू सुत सा० रुपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ष० ग० श्री जिन सागर सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेयसेथं श्री धर्मनाथ बिं० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय प्रभ सूरिभिः काकरवास्तव्य ।

(482)

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्क दिने महतिआण सा० सुरपति भा० त्रिलोकादे पुत्र्या सा० रयान भगिन्या सा० चाचिग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपट्टे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(४९३)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० ज्ञा० देपाल सु० हठसी करणा भा० [illegible] धर्मां [illegible] हासा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत कदा वरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-नाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेखर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ कमलमेरु।

(४९४)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सीणुरा वासि प्रा० ज्ञा० राजा भा० रूपा पुरि पु० [illegible]केन भा० रानू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(४९५)

सं० १५३० फा० शु० २ गोत्रक गोत्रे सा० पासवीर भा० फुली नाम्न्या पुत्र [illegible] पुत्र देवा सघ--युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ बहादुर पुरे ॥

(४९६)

सं० १५३१ वैशाष सुदि ५ गुरौ ---लियौ पुत्र लाला जिरिपुत्र--

(४९७)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्ति स्त० भ० श्री ज्ञान भूषण [illegible] स० पेतसी भा० मानूः।

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्टि गोत्रे श्री कीहट भार्या लपी पुत्र देवण मांडण धर्म्मा श्रावकैः श्रे० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युतैः श्री धर्मनाथ विंबं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवासि उ० व्य० महिराज भा० माणिकदे सु० श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे। अदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाप वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमधर नोका पोमा पागा पहिराज आढू लालला लेपसी पितरनिमित्त श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारक श्री सोमरतन सूरिभिः॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे भ० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० स० हंसराज हापु---।

(492)

संवत १५५१ वर्षे वै० सुदि ९ रवी उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लापा भार्या सोहिणी पु० चांपा भाय पौत्र पुत्र पौतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ विंबं का० श्री धर्मनाथ विंबं का० श्री धर्मघोष गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः।

([illegible])

संवत १५५३ वर्षे सिवनाग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय [illegible] गोत्रे सा० [illegible] कर्णं सुत सा० जिणदत्त पुत्र सो० सोनपाल सुश्रावकेण सा० [illegible] [illegible] [illegible] पृथ्वीमल्ल सत्को केण श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] गच्छे श्री जिन चंद्र सूरि पट्टे श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १५५२ व० आ० सु० २ रवौ श्री श्रीमाली ज्ञातीय सा० [illegible] [illegible] [illegible] सा० जूठा सा० संघा सा० म--ड सा० पाचाकै सा० [illegible] [illegible] श्री [illegible] बिं का० प्र० मलधार गच्छे श्री सूरिभिः। सर्वेषां पूजनार्थं ॥

([illegible])

सं० १५५८ वैशाखवदि १३ श्री मूलसंघे पंडेलवाल सा० हेमा पुत्र [illegible] [illegible] [illegible] मति गोधा गोत्रे ।

([illegible])

सं० १५५८ व० पोस वदि ७ दिने गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० [illegible] [illegible] [illegible] पु० पोला सा० [illegible] सु० श्रेयोर्थं श्री वासपूज्य बिंबं का० प्र० [illegible] प्रतिष्ठित श्रीललित सुन्दर सूरिभिः दुधालीया वास्तव्यः ।

([illegible])

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवौ श्री उकेश ज्ञातौ श्री [illegible] [illegible] [illegible] शाखायां व० [illegible] पु० रत्नपालेन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संभवनाथ बिं० का० प्र० श्री उकेश गच्छे [illegible] श्री देव गुप्तसूरिभिः ।

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाष शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा भात्र मूजा भा० चिमलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारापितं—श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्टितं ॥ श्री लपराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू पु० सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रीपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वकाभा० वुलदे पु० सा० पतोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन।

(501)

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य उ० श्री गुणप्रभ —— श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्टितं ।

(502)

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान भूषण देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूंवड़ ज्ञातीय गंगागोत्रे। सं। घारा। भार्या सं॥ घारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमणि। सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

([illegible])

सं० १६१९ सिंधुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत धनराजेन कारितं ।

([illegible])

सं० १६२३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० ने विरोगा भार्या बाई [illegible] सुत देवचन्द भार्या बाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरि तत्पट्टे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री [illegible] सूरि श्री पत्तन वास्तव्यः ।

([illegible])

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे ब० ग० श्री [illegible] सं० सांवल । साकार-साहमल ज-जा । गा---।

([illegible])

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञातौ बाई नूजरदे सुत सं० [illegible] भा० सथरंगदे श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः [illegible] ।

चीरेखानेका मन्दिर ।

([illegible])

सं० १९८९ वर्षे पौस वदि १० गुरौ श्री [illegible] ज्ञातीय दे० उदयसिंह भार्या [illegible] पुत्र तथा दौहित्रा सुत दौना--पत्नी बाई [illegible] [illegible] श्री [illegible] -बिंब कारापितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री रत्न सिंह--।

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २--ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे--श्रीश्रेयांस विंवं का० प्र० श्री धर्मघोप गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० --।

(509)

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू केन पुत्र मेघा माला नाल्हा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्वत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या पाल्हणदे सुन मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंव सहितेन मातृ पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत्त स्वामी नागेन्द्र गच्छे श्री गुण समुद्र सूरेरुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया वास्तव्यः। श्री।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० --सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा० ललतु पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विंवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र पद्मू लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

([illegible])

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ बिंबं प्रति० – ।

([illegible])

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसवाटे नाम्न्या श्री पार्श्व बि० का० प्र० तप० ग० श्री विजय देव सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १८२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या --पार्श्व बि० कारापितं ।

([illegible])

सं० १८५२ पोस सु० ४ दिने बृहस्पति वासरे श्री सि० च० बे० बिंबं प्र० [illegible] गणिना कारितं जैननगर वास्तव्य श्री साह रत्नचंद हीराचंदेन [illegible] ।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर ।

([illegible])

सं० १२१४ आषाढ़ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या [illegible] ।

([illegible])

सं० १२०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधौ -- सुहव श्रा० -- -- ।

(519)

ॐ संवत १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीपंडेरगच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने । श्र० जगध
भार्या जमति पुत्र झांझण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ झांझण श्रेयसे
श्री अजितनाथ विंबं कारितं । प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

(520)

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू -- ।

(521)

संवत १४८३ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय वहरा घड़ला भार्या ललता देवि सांविलीदास
हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संच श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं । नागेंद्र
गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री संह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु ।

(522)

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवी श्रे० कावा भार्या विजी-
परनागद्द प्रणमति ।

(523)

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपार्श्व विंबं प्रतिष्ठितं श्री
खरतर गच्छे । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(524)

संवत १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोल्हरण पु० सा०
--ेयतन श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

([illegible])

[illegible] सं० १८३५ वर्षे माघ कृष्ण पंचमी भृगौ अहमदाबाद वास्तव्य [illegible] वृद्ध शाखायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या बाई [illegible] स्वश्रेयोर्थं श्री [illegible] बिंबं कारापितं भट्टारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा [illegible] ।

छोटे दादाजी का मन्दिर।

([illegible])

संवत १८७१ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे भट्टारक श्री जिन कुशल सूरि पादुका कारिता श्री स्याहजानाबाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठित च बृहत्खरतर गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री महाराज अकबर राज्ये [illegible] भूयात्॥ संवत् १९०८ मिती चैत्र सुदि १२ गुरुवारे श्रीजिन नंदि वर्द्धन सूरिभिः [illegible] राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोद्धार कृतं कारापितं [illegible] साधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात्॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक [illegible] कुमार तच्छिष्य हर्ष चंद्रोपदेशात्॥

[illegible] ॥ संवत १८[illegible] वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे [illegible] भार्या [illegible] श्री शांतिनाथ बिं० भ० कारापितं प्रतिष्ठितं [illegible] गच्छे श्रीजिन [illegible] ।

(529)

श्री सं० १९७२ मिः माघ शुक्ल ९ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा श्रिते भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल माला वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है। मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुऐ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर।

पंचतीर्थीयों पर।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्रे० नागड सुत आसिग तत्पुत्रः राल्हण थिरदेव मातृ सूहवादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंबं कारापिता ।

(531)

संवत् १२९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीरम भा० देवल दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहड़ादे पु० ससारचंद। सामंत सोभा स० श्री सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे वैशाष वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० [illegible] सुता श्रे० [illegible] भार्या [illegible] पुत्र [illegible] पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः [illegible] ।

([illegible])

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय [illegible] गोत्रे [illegible] पु० [illegible] भा० कपूरी पुत्र – हारत्तण भा० [illegible] माता [illegible] सहितेन श्री [illegible] बिं० प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

([illegible])

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवौ [illegible] गोत्रे सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्र दसूरकेन आत्मश्रेयसे शितलनाथ बिं० का०—प्रति० श्री [illegible] सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० सु० ९ प्राग्वाट सा० [illegible] सा० [illegible] हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या [illegible] श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं [illegible] श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १२ गुरौ श्री [illegible] सारंग भार्या [illegible] श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] सूरिभिः ।

(537)

संवत १५२५ वर्ष चैत्र वदि ८ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० सूहला सुत सिवा भार्या सोभागिणि सुत मद्धा भार्या महती श्री सुविधिनाथ विंबं का० रुद्र गुरूप देशेन विधिना प्र० विंबं-----छ॥

(538)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० धईजा स्वसाकला नाम्न्या श्री नेमिनाथ विंबं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः।

(539)

सं० १५२८ माह व० ५ वुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीका भार्या वील्हणदे पुत्रैः साह कोहा केल्हा मोकलाख्यैः स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंबं का० श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र०।

(540)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ वुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपाई सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं स्व श्रेयोर्थं श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरीणां पट्टे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु।

(541)

सं० १६०३ वर्षे आपाड वदि ४ गुरौ जिन्नमाडे वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे पुत्र मानसिंघ भ्रा० पेतसी युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः।

([illegible])

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उपकेश ज्ञातीय [illegible]

भा० अरमादे पुत्र से० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ बिंब का० प्र० तपा गच्छे भ०

श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

([illegible])

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेड़ता नागर [illegible]

भार्या जसदे पुत्र को० दीपा धनाकेन श्रीपार्श्व बि० का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजय

देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म–सू––।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर।

([illegible])

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० धवल सुत [illegible]––[illegible]

([illegible])

सं० १३०८ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय [illegible] भार्या–– पुत्र [illegible]

श्री शांतिनाथ बि० का० प्र० श्री [illegible] सूरिभिः।

([illegible])

सं० १४८[illegible] माघ सु० १० प्राग्वाट ––[illegible]

सुंदर सूरिभिः।

(547)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष सु० ३ रवौ रहूराली (?) गोत्रे सा० वीजल भार्या विजय श्री पु० रावा-----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बि० प्र० श्री धम---श्रीपद्म शेषर सूरिभिः।

(548)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जील्हा केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम हंस सूरिभिः।

(549)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनौ श्री पंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया गोत्रे सा० महूण पु० पोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लपी पु० करमा नाल्हा सहितेन स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(550)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनौ उकेश ज्ञातौ तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत्त पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः।

(551)

सं० १४९० वै० सु० शनौ श्री मूलसंघे नंदिसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवाः तत्पट्टे श्री सकल कीर्त्ति देवाः। उत्तरे

श्रष्ठोसि (?) हुं० ज्ञातीय व० आत्रपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मनूगुलतिरजा भ्रातृ बीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः तंच सदा प्रणमति सुकुटुंबः।

(552)

सं० १४९२ वर्षे मार्गशिर वदी ४ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूनर गोत्रे सा० देप राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः।

(553)

सं० १४९९ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा श्रावक ? सुतव्य० वेला पत्नया वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरिभिः ॥श्री॥

(554)

सं० १५१६ वर्षे वैशाष वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ म० रामा मातृ श्राणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गोरहुंया वास्तव्य ॥

([illegible])

॥ १५१६ आषाढ़ सु० ५ ओष्ठि गोत्रे नीया भार्या रूपा पु० डीमहा मेजा ---- पञ्चार्थि प्रणमंति।

(556)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे बुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी पु० नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० डउढा भा० हरपू सु० श्रे० नागा भा० आजी सुत श्रे० जिनदासेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं आगम गच्छे श्रीदेवरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठित ।

(558)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ट वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे सा० सोमा भा० घनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति नाथ विंवं कारितं प्रतिष्टितं श्रीकक्क सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पल्हयउ गोत्रे सा० भीपात्मज सा० ल्हा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं । हद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(५६०)

सं० १५२४ आषाढ़ सु० १० शुक्रे उकेश वंशे --सा० नपूरा पु० जेनाकेन भा० धर्मिणि पु० माईआ पोत्र इसा वीसालादि कुटुंब युतेन पु० साडया श्रेयसे श्री नमि बिंब का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः।

(५६१)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवणि सु० गोला भा० कर्मी पु० नरबदेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा।

(५६२)

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उकेशवंश भ० गोत्रे सा० नीवा भार्या पूरी सा० पूना श्रावकेण भ्रातृ सजेहण भा० अंबा परिवार युतेन श्री संभवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

(५६३)

संवत १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देपू पु० हेमा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः।

(564)

॥ संवत १५५७ वर्षे वैशाप सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वैद्याच गोत्र भा० पीमा पु० जालू नारिंगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंडेरग गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः।

(565)

सं० १५५९ (?) वर्षे आषाड सु० १० सूराणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र स० हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पट्टे नंदिवर्द्धन सूरिभिः।

(566)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शापायां सा० सुरजन भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाढा ठाकुर भा० द्रोपदी पौ० कसा पीथा श्रीवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा० --- तत्पु० पहराज तत्पुत्र राठा---इत्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिन-चन्द्र सूरिभिः।

([illegible])

संवत १५७९ वर्षे आषाढ़ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फलगा गोत्रे सं० [illegible] पुत्र रत्न सं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे।

(५५९)

सं० १९०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर दुर्गे श्री चतुर्विंशति जिनमातृका पट्ट लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर जंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें।

([illegible])

सं० १५३५ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ शुक्रे वड़नगर वास्तव्य ऊकेशज्ञातीय सा० [illegible] भार्या ताऊ पुत्र सा० ऊपाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पं० [illegible] गणीनामुपदेशेन।

जयपूर।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्त्तियों पर

(571)

सं० १३-- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्टासंघ श्रीलाड वागड़ (?) गण श्रीमन्--मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० बाहड भार्या लाछि सुत पीमा भार्या राजलदेधि श्रेयोर्थं सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति।

(572)

सं० १४३९ वर्षे पौष ९ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० --- मायलदे पु० सामलेन श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः॥ श्री॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे। ओसवाल ज्ञातीय वच्छस गोत्रे सा० धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ विंवं कारितं श्रीम० तपागच्छे ---- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ गुरो रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा भा० धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः॥ श्रीरस्तु॥

यति किसनचन्दजी के पासकी मूर्त्तियों पर ।

(५७५)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे यददेव पुत्र विमल पुत्र ऊदमसेन मातृ भार्या श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

(५७६)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ धनी श्री---गच्छे--- जलहर गोत्रे सा० कुपा भा० रूपादे पुत्र पथिन पाल्हा सानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारि० प्र० ---।

(५७७)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या भाभू पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंबं कारितं श्री पल्लि गच्छे ----।

(५७८)

संवत १५०९ वर्षे ऊएस वंशे सा० हजदा भार्या आल्हणादे पुत्र केल्हाकेन श्री अचल गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं ।

(५७९)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० ब० ३ रवौ वणागीला गोत्रे सा० थाहो भा० पोमाइ सु० सिउराज श्रेयोर्थं सा० सावडन धोवंत साजण प्र० कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं वेद्रपल्लिपुर गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिभिः ।

(580)

संवत १५५९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हाथा पुत्र हरिचंदेन भा० हीरादे पुत्र पुना घूनादि कुटुंब युतेन गहिलड़ा गोत्रे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे।

(581)

संवत १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरड़िया गोत्रे स० सिंघा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः।

(582)

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ -----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ बिं० गृहीत घ० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति०।

जोधपुर।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान हैं।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

धातुओंके मूर्त्ति पर।

(583)

सं० १४५९ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सपदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः।

([illegible])

सं० १४८० वर्षे वैशाप सु० ३ थांधगोत्रे सा० सोगा पुत्रेण सा० सांगडेन [illegible] भार्या सिरियादे श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः [illegible] ।

([illegible])

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सुरमू पुत्र [illegible] युतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५०३ आषा० सु० ९ गु० राउ म्यावरकी गोत्रे सा० [illegible] सा० सीमा पु० [illegible] भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारापित श्री - - [illegible] गच्छे श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

([illegible])

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ बुधवती भंडारी गोत्रे सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्र [illegible] केन आत्म० श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेखर सूरि पट्टे श्री विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १५१७ वर्षे पौष सु० १३ गुरौ उप० ज्ञा० म० नूपा भा० [illegible] पु० [illegible] भा० वाल्हणदे पुत्र पेतसि श्रात० प्रा० सा० श्रे० श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० [illegible] सा० श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

(589)

सं॰ १५२२ वर्षे वैशाप सु॰ ३ नना ज्ञा॰ श्रे॰ जइता भा॰ परि पुत्र गेला भा॰ वाली नाम्न्या पुत्र अमरसी भा॰ तिलू सजन कवेला मातृ दूसी ज्येष्टमाला प्रमुख कुटुंब युतया स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं का॰ प्र॰ तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(590)

सं॰ १५२४ चै॰ शु॰ ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य भ॰ पद्मनंदि तत्प॰ भ॰ श्रीसकल कीर्त्ति तत्प॰ भ॰ श्री विमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं । श्री जे संग भा॰ मरगादे सु॰ तेजा टमकू सु॰ सिवदाय ।

(591)

सं॰ १५२७ वर्षे माह सु॰ ९ बुधे श्री --- गोत्रे सा॰ भादा भा॰ सावलदे पु॰ मेलाकेन भा॰ मालूणदे पुत्र झींझा कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पट्टे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः ।

(592)

सं॰ १५३२ वर्षे वैशाप वदि ५ रवौ उप॰ ज्ञा॰ गो॰ उरजण भा॰ राउं सु॰ भीदा भा॰ भावलदे सु॰ गारगा वरजा युतेन आत्म॰ श्री सुमतिनाथ बिंबं का॰ प्र॰ श्री जीरापल्लीय गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पट्टे श्रीसागर नंदि सूरिभिः शुभं भवतु

(593)

सं॰ १५३५ श्री मूलसंघे भ॰ श्री भुवन कीर्त्ति स्व॰ भ॰ श्री ज्ञान भूषण गुरूपदेशे--

(५५४)

सं० १५५२ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ बुध वासरे साह षांपा भार्या मेघू डूंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोछी वाल गच्छे भट्टारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(५५५)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० कर्मा भा० रमणादे पु० महो --- पु० धना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्रीसुमति बिंबं का० प्र० पूर्णिमा० गच्छे ---सागर सूरि---।

(५५६)

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरौ उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिंगदे पु० तोली भा० छाछलदे पु० विजा रूपा कूणा विजा भा० वीझलदे पु० नाकरा सायर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवौ श्री उपकेश वंशे वि० सांगा भार्या धर्माई सुत वीसा सूरा भार्या लाछी द्वि० भार्या जरधाई धर्मं श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं प्रति० निहुंडीगच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र०।

([illegible])

॥ ॐ संवत १५६५ वर्षे वैशाष वदि १२ रवौ ठेकोया ग्रामे श्री उपकेश० सा० पोहा भार्या धरणू पुत्र सं० तोला सुश्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० रूपमल भ्रातृ

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भाव सागर सूरीणा मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन।

(599)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिग पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा० हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वस्छ रिषभदास भार्या अमरादे सुत अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण सागर सूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन–भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद करापितं।

देविजीके मूर्त्तिपर।

(४ भूजा+सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे वीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवो वेह्नरुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवीर पु० सा० सूरा भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल श्रा० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः।

(७७)

संवत १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातीय [illegible] [illegible] [illegible] सा० पीमा भा० अघी-पु० सा० श्रीचंद भा० सोनाई पु० [illegible] युतेन [illegible] [illegible]र्श्वनाथ बिंबं का० श्री कोरंट गच्छे श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्री ॥

(७८)

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षे पोष वदि ११ सोमे उकेश वंशे व्य० परबत भा० [illegible] तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री प्र सपरिवारेण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - - - परिवार श्रेयोर्थं आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे [illegible] भ० श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति भद्रं ।

([illegible])

ॐ संवत १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थ [illegible] सोनी [illegible] भार्या मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ बिंबं का[illegible]पितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरीश्वरैः प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक ।

([illegible])

ॐ ॥ संवत १३३९ [illegible] वैशाख सुदि ६ गुरौ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्री देवाचार्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धि सागराचार्यैः ॥

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसीह भार्या देलूणदे पुत्र रेडा भार्या रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा भी मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ बिंबं पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ढ माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकीर्त्ति—धर्मनाथ बिंब प्र० वाई सपदे जा० काल्हा --।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुर्कट शाखायां व्य० तोला भा० पेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तोल्हादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा० चित्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

(६१२)

सं० १८९३ ना मा। सु० १० बु०। श्री जोधपुर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां संघ माणक चंद तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन बिंबस्य [illegible]।

(६१३)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर।

श्री सिद्धचक्रो लिखतो मया वै। भट्टारकीयेन सुयंभराजः॥ श्री [illegible] जिन शिष्यकेन। स्वरूपचंद्रेण सदाऽयं सिद्धैपः॥ १॥ श्री मल्लागपुरे रम्ये चंद्रवेदाष्ट भूमिते। अब्दे वैशाखमासस्य तृतियायां सित दले॥ २॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर।

(६१४)

सं० १९२३ वर्षे फागुन सु० १ श्री श्री० सा० [illegible] [illegible] सा० [illegible] सु० – – [illegible] प्रभु बिं० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र०।

(६१५)

सं० १९२१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहर [illegible] सा० [illegible] पुत्र [illegible] सा० सलकेन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः श्री खरतर गच्छेशः॥

(616)

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री सावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जसमादे पु० तोजा भा० बापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ बि० प्र० का० श्री कीर्त्ति काचार्य स० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उके० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा० डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्रेयसे प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः श्री पद्म प्रभ बिंबं ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वहतप श्री धन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मान्दिर ।

(619)

सं० १४९३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० कीरा भा० वीलहणदे पुत्र कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल बिंबं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे डोसो-धर्मांकस्य पुण्यार्थं दो० बूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः श्री श्रेयांस बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(६२१)

सं० १५०१ वर्षे वै० सु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी भार्या सुत सं० पीमसी भा० पाभ्यां भा० सहीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि [illegible] का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः [illegible]

(६२२)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरौ उपकेश वंशे जारंडरा गोत्रे सा० [illegible] सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ्र० लोला समदा सहितेन मातृ [illegible] पुण्यार्थं श्री नमि [illegible] का० प्र० तपा भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

(६२३)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आहतणा (आहुंपणा ?) गोत्रे सा० पना [illegible] पु० मोकल भा० माहणदे पु० हासादि पुत्रैन [illegible] श्री [illegible] उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

(६२४)

सं० १५२५ वर्षे [illegible] श्रीमाल ज्ञातीय सा० [illegible] भा० [illegible] सुत [illegible] केन भा० राना भ्रातृ [illegible] भा० [illegible] कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ [illegible] प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः [illegible] ॥

([illegible])

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ [illegible] गोत्रे सा० [illegible] पु० जाखा-भा० जयसिरि पु० सायर भा० [illegible] [illegible]

स्वपुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश ग० कुक्कदाचार्य स० श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

(626)

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरौ उ० विद्राणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु० रामा० रूपा स० पि० श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः श्रेयात् ॥

दिनाजपूर ।

श्री मूलनायकजीके बिंबं पर ।

(627)

--- सु० २ श्री चन्द्र प्रभ जिन बिंबं संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपूरे ।

धातुके मूर्त्तियों पर ।

(628)

संवत १२२७ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे श्री अंचल गच्छे श्री मेरुतुंग सूरीणामुपदेशेन श्रानापति ज्ञातीय माऊ ठ० हरिपाल पत्नि सूहव सुत मा० देपालेन श्री महावीर बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितंच श्री सूरिभिः ॥

(629)

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्रे० अर्जुन भा० मंदोअरि पितृ मातृ श्रेयसे सुत गोईंदेन भा० माकू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंथनाथ

बिंबं कारितं पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥ छ ॥

(६३०)

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० भरमा भार्या अरमादे पुत्र आसा भार्या वइंरामति नाम्न्या स्वभर्त्तुं पुण्यार्थं आत्म श्रेयोर्थं श्री शीतल स्वामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मसागर सूरिभिः।

(६३१)

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूलसंघे भ० श्री सुमति कीर्ति गुरूपदेशात् सा० जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास नरदास अनंतनाथ नित्यं प्रणमंति।

(६३२)

सं० १८२४ रा मिती असाढ़ सुदी १३ श्री नेमनाथजी बिं० ॥ श्री ॥

दादाजी के चरण पर।

(६३३)

सं० १८९८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथौ बुधवारे। भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं। भ। श्री जिनकुशल सूरिजी पादुका ॥ भ। श्री जिनदत्त सूरिजीरा पादुका।

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपूरसे २० कोस पर है रखभदेको नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्त्ति स्यामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहबोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर।

(635)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्रे० पोमा भा० पोमी सु० जावलकेन भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेन स्वपितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर।

(636)

श्री कायासवास बासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि-- विक्रमादित्य संवत १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ बुध दिने चादी नाथुराल---।

(637)

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत १५७२ वैशाष सुदि ५ वार सोमवार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनबाई चोजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ नाथ प्रणम्य कडीआ फोईआ भार्या भरमी तस्या पवेई सा० भार्या हासलदे तस्य पगकारादेव रासगाय भ्रात वर्णीदास भार्या लास्टी बाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल श्री काष्ठा संघ ----श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुप श्री तां-री कुल — —।

([illegible])

संवत १९२३ वै० सु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे [illegible] श्री जिन [illegible] सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री १०५ श्री जिनराज सूरिभिः ।-- श्री [illegible] सहूक -- आदेशात् मनीपुर - श्री ऋषभदेवजी -- ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

([illegible])

संवत १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

([illegible])

संवत १७११ वर्षे वैशाप सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे [illegible] श्री कुं -- ।

([illegible])

संवत १७३२ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघ [illegible] भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदाम्नाये भ० श्री विश्व भूषण भ० [illegible] कीर्ति [illegible] कीर्ति -- ।

([illegible])

संवत १७२६ वर्षे फागुन सु० ७ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे [illegible] श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकल कीर्ति [illegible] -- ।

(643)

संवत १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे भट्टारक श्री विजय रत्न केश्वर तपागच्छे काष्ठासंघे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र जी तस्यभार्या बाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री सातु जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्तया पद्मावत्याः पदाम्बुजं। प्रशस्तिर्लिख्यते पुण्या कवि-केशर कीर्त्तिना ॥ १ ॥ श्री अश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः। वामांग मानस विकासन राजहंसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति। घुलेव मंडनकरा करुणा समुद्रः ॥ २ ॥ श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये। प्राज्यो गुणै र्जात इहालयोयं ॥ आपुष्पदन्त स्थिर-तामुपेतु। संपश्यतां सर्व सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा। सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद महा साघः। तपे गच्छमें तप जप तणो उयत उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवी परगट कीघः। खेमतणो मन पा तिसु लाहो भवनो लीघ ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन भ्रातुर लषमी चंद। उच्छव किघा अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिल सुघ गोकल दासरे कीघ प्रतिष्ठा पाम। सारे ही प्रगट्यो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त। सांतिदास सचितसंत दायद्वा लषमी चंदहः। संघ मनुष्य सिरदार सहस किरण सुपके कंदहः ॥ वल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म धुरंधरः। मुलचंद गुण मूलहार थांया उर गुणहरः ॥ सकल संघ सानिघ करः सुमतिचंद महासाघः। पास सदन कियो प्रगट

निश्चल रहो निरबाध: ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद् कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न [illegible] [illegible] [illegible] खिताचे संघेन मत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुणहेर । रच्यो चित्र जिनराजको करुणा वंश कुवेर: ॥ ११ ॥ आर्या । [illegible] [illegible] [illegible] माधव मासे वलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ [illegible] गिरि महा सूर्य शशिशेष शिवाद्य: । जगवल्लभ पार्श्वस्य नाथ प्रतिरूपम् [illegible] ॥ १३ ॥

श्री संवत १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री [illegible] पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा गच्छीय सुमतिचन्द्रगणिना [illegible] ॥ [illegible] ॥ शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

([illegible])

स्वस्ति श्री संवत १८७३ वर्षे शाके १७३८ वर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी [illegible] मासे शुभे शुक्रपक्षे चतुर्दशि तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धशाखायां [illegible] गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक साह श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रूपचन्ददास श्री उदैपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विजय जिनेंद्र सूरिभि: उपदेशात् पं॰ मोहन विजयेन श्री [illegible] ॥ [illegible] [illegible] आगुंछई ॥

दादाजी के चरण पर ।

([illegible])

संवत १९१२ का मिति फागुन वदि ८ तिथौ गुरु वासरे [illegible] [illegible] [illegible] कीर्त्ति शाखीयोद्भव महोपाध्याय श्री राम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सत्गुरुचरण कमलानि कारितानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानि च वर्त्तमान श्री वृहत्खरतर गच्छ भट्टारकाज्ञयाच श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिन कुशल सूरिणां चरणन्यासः।

पालिताना।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठियावाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है।

मोती सुखियाजीका मन्दिर।

(647)

संवत १५०२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा भा० सेगू सुत परवतेन भा० मांई कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्रेयांस नाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जयचंद्र सूरिभिः॥ गणवाडा वास्तव्यः।

(648)

संवत १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधी गोत्रे अंबिका भक्त। सा० छाजू सुत सेंघा पुत्र सूरा भा० मेघाई सु० साऊंया भा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

(649)

संवत १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० वाहिता भा० लाली पु० व्य० नारद भार्या नारिंग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुख

परिवार युतेन स्वश्रेयार्थं । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं [illegible]
श्री सुमतिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छ नायक श्री हेम विमल सूरिभिः [illegible]

सिद्धचक्र पट्ट पर ।

([illegible])

संवत १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय [illegible]
वच्छाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः ।

सेठ नरसी केशवजीका मन्दिर ।

([illegible])

संवत १६१४ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी [illegible] भार्या [illegible]
दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुंअरजी नाम्ना पितृ श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब [illegible]
पितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य प० [illegible] प्रति-
ष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

([illegible])

संवत १९२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ सुदि [illegible] तिथौ [illegible]
गच्छे पूज भट्टारक श्री रतन सागर सूरिश्वराणामुपदेशात् श्री [illegible]
ओशवंशे लघुशाखायां नांघिवीनी गोत्रे सा० [illegible] भार्या
हीरबाई तत्पुत्र सेठ केशवजी तत भार्या पार्बती बाई [illegible] नरसी [illegible]
पंचतीर्थी जिनबिंब भरापित । अंजन शलाका करापित । [illegible] ।

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख सुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय व्य० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । व्य० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतैं सात्म श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १९२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागड़ा गोत्रे सेठ हीरजी नरसी तद्भार्या पूरबाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ बिंवं कारितं सकल संघेन प्रतिष्टितं ।

(655)

सं० १९२१ वर्षेमाघ सुदि ७गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलित पुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागड़ा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्भार्या देमतबाई तत्पुत्र सा० अभयचंदेन पुन्यार्थं शांतिनाथ त्रिंवं कारितं सकल सघेन प्रतिष्टितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

(656)

संवत १६९३ वर्षे वईशाष सुदि ६ गिरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्यां बाई अजाई

सुत सोनी यमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री बाई [illegible] श्री विजयनाथस्य बिंबं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि गच्छे प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

([illegible])

सं० १४८३ वैसाख वदि ७ सोमे पोरवाड़ पद्म भा० [illegible] [illegible] पुत्र कोकमेन श्री महावीर बिंबं कारित प्रति०

([illegible])

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं। आर्ता [illegible] [illegible] सहजा हरिचन्द पति पेता–धर्मो निमित्तं श्री विमलनाथ बिंबं कारापित प्र० [illegible] हंस सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे [illegible] सा० [illegible] भार्या [illegible] आदे पुत्र सा० [illegible] सा [illegible] भार्या [illegible] [illegible] सा० [illegible] राज भ्रातृव्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन [illegible] जयकेशर सूरिणामुपदेशेन स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री [illegible] आ० चन्द्रार्कं विजयतां॥

([illegible])

सं० १५१५ वर्षे माह सुदि ५ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हांसलदे सु० [illegible] सा० [illegible] सु० [illegible] राजा सा० [illegible] सु० [illegible] [illegible]

युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ शनौ प्रा० सा० काला भा० माल्हणदे पुत्र सं० अर्जुनेन भा० टेऊ भ्रातृ सं० भीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु पूज्य विंवं का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपट्टे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

संवत १५२८ वर्षे वेशाष वदि ११ रवौ श्री उकेश वंशे सा० भाषा भा० मायरि सुत राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ।

(663)

सं० १५२९ वर्षे फा० वदि ३ सोमे स० वाछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवदे पुत्र वसुपालादि युतेन भा० सपूरी श्रेयोर्थं श्री मुनि सुव्रतनाथ विंवं कारितं प्र० तपा गच्छेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(664)

संवत १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्रे० टेया भा० पान्हू पु० श्रे० हापा भा० पुहती पु० श्रे० महिराज सुश्रावकेण भा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री अंचल गच्छेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संघेन ।

([illegible])

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्री [illegible] सूरीणामुपदेशेन उएशवंशे सं० जइता भार्या जइतादे पुत्र साईया सुश्रावकेन [illegible] भार्या [illegible] से श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सु---।

([illegible])

संवत १५३९ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्री श्री वंशे ॥ सं० [illegible] भार्या [illegible] पुत्र अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भ्रातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

([illegible])

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय पार [illegible] भा० [illegible] पुत्र देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंब कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरीणां पट्टे श्री श्री [illegible] सूरिभिः [illegible] ग्रामे ॥

([illegible])

सं० १५८३ वर्षे वैशाप सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति सं० [illegible] भा० [illegible] पु० [illegible] सं० भाजो भ० ना० भा० हर्षादे पु० पदु पनु भोजा भार्या [illegible] पुत्र [illegible] सहितेन स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ बिं० कारितं प्रति० [illegible] ग० भ० श्री [illegible] सूरिभिः । भारदा ग्रामे ।

([illegible])

सं० १५८२ व० माघ सुदि ६ गुरौ [illegible] सुत ना० राजपालेन भा० [illegible] पुत्र [illegible] सहितेन श्री [illegible] बिंब का० प्र० तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(670)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० राजपाल तद्भार्या या० पूराई सुत सा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विंवं प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः।

यति कर्म्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर।

(671)

संवत १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्रे० वना भार्या वनादे सुत श्रे० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांडादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ विंवं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनन्न सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः।

(672)

संवत १५५९ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ पोहरेचा गोत्रे सा–गोवल पु० सा––भा० धारू पु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड। भा० चड–––पितुः श्रे० श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश–श्री कक्क सूरिभिः॥ श्री कुक्कुदाचार्य संताने॥

गांव मन्दिर बड़ा।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीमाल वंशे व्य० जीदा १ पुत्र व्य० जेता-णंद २ पु० व्य० आसपाल ३ पु० व्य० अजयपाल ४ पु० व्य० वांका ५ पु० व्य० श्री वाउडि ६ पु० व्य० अणंत ७ पु० व्य० सरजा ८ पु० व्य० धीधा ९ पु० व्य० राजा १० पु० व्य० देपाल ११

([illegible])

पु० वसनाना १२ पु० व्य० राम १३ पुत्र व्य० भीना भार्या मांडू पुत्र [illegible] सुश्रावकेण भा० गउरी पु० भूं भय पौत्र [illegible] [illegible] करणसी– सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे [illegible] केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] भवंतु ॥

([illegible])

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरीणामुपदेशेन [illegible] तीय दो० भोटा भा० रत्तू पु० धीरा भा० धानू पु० [illegible] सुश्रावकेण [illegible] सहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं स्वश्रेयार्थं कारितं श्रीसंघ प्रतिष्ठितं ॥

([illegible])

सं० १५३८ वर्षे कार्तिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय [illegible] सु० याया भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ स्वामि बिं० का० प्र० [illegible] श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

([illegible])

सं० १५३९ वर्षे वै० सु० १० बु० श्री उ० ज्ञा० [illegible] आत्मश्रेयार्थं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री [illegible] गच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

([illegible])

संवत १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १२ सोमे श्री [illegible] ज्ञातीय [illegible] दो० भरथा भार्या कूर्पाई सुत [illegible] भार्या [illegible]

संभवनाथस्य चतुर्विंशति पट्टः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्रीगुणरत्न सूरि पट्टे आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

(678)

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवौ उ० टप गोत्रे---क सा० नरपाल भा० रंगाई पु० महिराज सोहराज घनराज श्री महिराज भार्या घनादे पु० घनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ।

(679)

सं० १९२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंबं प्र० सा० जीवा अपाजो ----।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर ।

(680)

संवत १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्रीविद्यानंदि गुरूपदेशात् ब्रह्मपदमाकर कारापिता ।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकोंमें पञ्चतीर्थीयों पर ।

साकरचंद प्रेमचन्द टोंक ।

(681)

सं० १५०८ वर्षे मार्गशीर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड़ गोत्रे सा० भूना भार्या मोल्ही एतयोः पुत्रेण भा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रभ विंबं का० प्र० श्री बृहद्‌ गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक।

([illegible])

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुधे आनापद्र वा (?) श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० देपा सुत सा० कर्मण भार्या कर्मादे पुत्र व्य० नमधर भार्या पहुतु पुत्र व्य० सहिता व्य० सहिता व्य० सिहदत्त व्य० श्रीपति आत्म श्रेयसे सा० सहिताकेन भार्या [illegible] --- युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री [illegible] सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रेमचन्द मोदी टोंक।

([illegible])

सं० १३६८ वर्षे ठ० जगधर भार्या कुमर पुत्र नीवदेव भार्या [illegible] -- श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणचन्द्र सूरि शिष्य श्री धर्मदेव सूरिभिः।

([illegible])

सं० १३०८ प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० [illegible] -- [illegible] पद्मदेव सूरि -- श्री तिलक सूरिभिः।

([illegible])

सं० १८८१ वर्षे चैत्र सुदि ८ वार शनि दिने श्री वृद्धओसवाल ज्ञातौ — श्री [illegible] भार्या सा० माणकचंद पुत्ररत्न — भार्या बाई [illegible] श्री सुमतिनाथजी बिंब [illegible] श्री आणंद सोम सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु।

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ ---विंबं का० श्री चन्द्र सूरिभिः।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भ्रा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्थं श्रीमहावीर विंबं का० प्र०----- श्रीसालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्रसूरिभिः।

(688)

सं० १३८७ ---श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ घणसीह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत सादाकेन श्री अजितनाथ विंबं पंचतीर्थी का० प्र० श्रीनागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरिभिः॥ छ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल --श्री तेजपाल भ्रा० --- श्रेयसे सुत भादाकेन श्री आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरीणामुपदेशेन।

(691)

सं० १४८६ वर्षे --श्रीमाल -- आदिनाथ विंबं प्र० श्री नरसिंह सूरीणामुपदेशेन।

([illegible])

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ८ रवौ उसवाल ज्ञा० म० पूना भा० [illegible] सु० [illegible] हाही तयो श्रेयसे भ्रातृ आसदत्त [illegible] श्री विमलनाथ बिंबं का० पूर्णिमापक्षे [illegible] पल्लीय भट्टा० श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

([illegible])

सं १५१८ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोधा भा० माऊ [illegible] पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० [illegible] श्री मुनि [illegible] सूरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ चलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

([illegible])

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने [illegible] सा० पुजा [illegible] ---- श्री [illegible] बिंबं श्री विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

([illegible])

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्र० [illegible] सूरिभिः पिप्पलगच्छे ।

सेठ बालदा साह टोंक ।

([illegible])

संवत १५२४ वर्षे फाल्गुन सुदि ६ [illegible] सरस्वती गच्छे [illegible] श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवा [illegible] भ० श्री [illegible]

भ० श्री विमलेंद्र कीर्त्ति गुरूपदेशात् श्री शांतिनाथ हूंवड़ ज्ञातीय सा० नाथू भा० ऊमल सु० सा० काह्वा भा० रामति सु० लषराज भा० अजो भ्रा० जेसंग भा० जसमादे भ्रा० गांगेज भा० पदमा सु० श्री राजसघवीर नित्य प्रणमंति श्रीः।

(697)

संवत १६२८ वर्षे वै० शु० १० बुधे श्रीमालज्ञातीय महपेता भा० हासी सुत मूलजी भा० अहिवदे केन श्री वासपूज्य विंबं कारापितं श्री तपा श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक।

(698)

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० कापा भार्या हासलदे पुत्र झांझणेन भार्या नागलदे पुत्र मुकुंद नारद भ्रातृ घना श्रेयसे जीर्यादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः।

मूल टोंक।*

(699)

सं० १९९३ ना मिती ज्येष्ठ वदी १२ गुरुवासरे श्रीमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खड़ग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम चंदजी तत् भार्या बीबी मया कुंवर श्री सिद्धाचलोपरि श्री ऋषभदेवजी परी प्रासाद मध्ये

* श्री आदिश्वर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्त्ताकी वृद्ध पितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है। इस महान तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पश्चात प्रकाशित होगा।

आलोपे प्रतिमा विधि मया कुंवर रतनसी स्वपितृ प्रतिष्ठितं च [illegible] गच्छे भ० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि श्री विजै राज्ये प० [illegible] पं० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

रैनपुर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थीमें रैनपुर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार [illegible] स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दीपक नामक विशाल मंदिरके कारण [illegible] है । "आबुकी कोरणी रैनपुराकी मांडनी" इनसे ही पाया है ।

मंदिरकी प्रशस्ति ।

([illegible])

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री बप्प १ श्री गुहिल २ भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभट ६ सिंह ७ महायक ८ [illegible] तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ [illegible] १३ [illegible] वर्म १४ योगराज १५ वैरट १६ हंसपाल १७ वैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ [illegible] २० चोडसिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६ मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ [illegible] श्रीकीतुक नृप श्री अल्लावदीन सुरत्राण जैत्र [illegible] श्री भुवनसिंह ३२ [illegible] सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ [illegible] श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री [illegible] नरेन्द्र ३९ [illegible] परोपकारादि सारगुण सुरद्रुम विश्राम नंदन [illegible] महीपति ४० [illegible]

नस्य । विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभिमानस्य। निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य। म्लेच्छ महीपाल व्याल चक्रवाल विदलन विहंगमेंद्रस्य। प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश भाल माला लालित पादारविंदस्य। अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य। कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूल प्रतिकूल क्ष्माप श्वापद वृंदस्य। प्रबल पराक्रमाक्रांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्वादि गुण क्रियमाण श्रीराम युधिष्ठिरादि नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया भरण भासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण। अजाहरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैन विहार जीर्णोद्धार पद स्थापना विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्घ क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस स० सागर (मांगण) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन ज्येष्ठ भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लापा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारलदे पुत्र जाज्ञा जावडानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि श्रीदेवेंद्र सूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदंच सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख विहारः आचंद्रार्कं नंदतात् ॥ शुभं भवतु ॥

पाषाण और धातुओंके मूर्त्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः ---छ भार्या देव सरण सुत श्रीश्रके ---श्री गुह - - कारिता।

(702)

संवत १२९० वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे श्रे० वढपाल श्रे० जगदेवाभ्यां श्रेयोर्थं पुत्र सामदेवेन भ्रातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं श्रीचन्द्रगच्छीयैः श्री शांति प्रभ सूरिभिः।

(703)

संवत १४९९ वर्षे सा० साजण भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल देव्यादि कुटुम्ब युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरिभिः।

(704)

संवत १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या श्रीयादि पुत्रैः श्री क सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः।

(705)

शत्रुंजयके नक्सेके निचे।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा सं० केल्हा भा० हेमादे पुत्र स० तोल्हा पांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव प्रासादे --- घन्त -- महातीर्थ शत्रुंजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थं नागानामुत्तमा नगः। क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं ---मं ॥ १ श्री रुसुपूजकस्य ---।

(706)

संवत १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि— दिने श्री उसवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाधा पुत्र सा० धीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोतादे प्रमुख युतेन माता विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश श्रंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र० बृ० तपा श्री उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे भरण विहारे ॥ श्री ॥

सहस्त्रकूट पर ।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख यदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुनराज भा० सुगणादे पु०जगमाल भा० श्री यच्छ करायित (उत्तर तर्फ) बा० गांगादे नागरदास या० साडापति श्री मूजा कारापिता या० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

(709)

संवत १५५२ य० मिगश्चर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंश ज्ञातीय सं० धणपति भा० चांपाई भाई मं० हरपा भा० कीकी पु० मं० गुणराज मं० मिहपाल ॥ करायत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वंश सा० नापति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का--- श्री उसपाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः ।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० आसदे भार्या सपांड सुत सा० खाजा भार्या वाजी सुत सा० श्री ओसवालेन भ्रातृ समसा स्वभार्या प्रय० सोयती देवी० सं० लखा ---लाहुजी सा० फाकन प्रमुख कुटुंब युतेन

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन।

(712)

संवत १५८— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा० उमला भ्रातृ पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर।

(713)

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वर्त्यु समापुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा० नायकाभ्यां भावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोल्या मेघनादाभिधो मंडपः कारितः स्व श्रेयोर्थं ॥ सूत्रधार समल मंडप रिचनाद विरचितः॥

दूसरे आंगनमें।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत १६२७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्रपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भट्टारिक श्री श्री श्री ५ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

खेता नायकेन वह्लां पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्सत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात्। संवत १७२८ वर्षे शाके १५९३ प्रवर्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे कालुह गोत्रे दोसी श्री मूजा भार्या रूपनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे भट्टारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी चेला रतनसी

(716)

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन रायकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने ---।

(717)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य भट्टारक श्री श्री चतुर सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता श्री फलद नगरे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्रीरस्तु ॥

(718)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनेश्वराणां परसंनु। पं० शिवसुंदरः समागतः।

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे २ कोस पर है ।

(719)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री– अथ श्रीनृ—विक्रमादित्य समयात्-- १६९८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साह श्री भारमल गृहे भार्या वहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र वहू श्री तारादे १ वह श्री त्रिभवणदे २ वहू श्री असहयदे ३ वहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी–परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

(720)

संवत १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

(721)

-- संवत १६३८ आषाढ़ सुदि २ गुरुवार ---।

(722)

संवत १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार ---राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये --।

([illegible])

संवत १६६६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-
नाथ प्रासाद भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज्ये आचार्य श्री
सिंह सुरि राज्ये श्री संघेन लिखितं।

([illegible])

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ अषाढ़ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्ल पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे [illegible] श्री
श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे भट्टारक श्री
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसीजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन [illegible]
श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना घटजोगेन कृतं ॥ [illegible]
सामा मेघा कला पुत्र कल्याण ॥ भानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर श्री [illegible]
शुभं भवतु — — —

([illegible])

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवासरे [illegible] श्री
तेजसिंहजी राज्ये श्रीतपागच्छे भट्टारक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये।

([illegible])

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च। संवत १६६८ वर्षे शाके [illegible] प्रवर्तमाने [illegible]
द्वितीय आषाढ़ सुदि ८ दिने रविवारे राउल श्री [illegible] विजय राज्ये श्री [illegible]

गच्छे भट्टारक श्री यशोदेव सूरिजी विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु। उपाध्याय श्री कनक शेखर शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजड़ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र धारः ऊजल भात् भाक्ता घटिता भवन कचरा--।

छत्रीमें।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां वुजाभोदया। धन्याचार्यपदावदात-वदिताः श्री कीर्त्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रश्मणि विभा प्रोच्छासितां हि द्वया। राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखवालान्वया ॥ - - - - - -

---

वालोतरा।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्त्तियों पर।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात बाहड़ वीरदे श्रे यार्थमकारि प्र० देव सूरिभिः।

(729)

सं० १४०१ वैशाष ९ श्री आदित्य नाग गोत्रे सच० कुलियारनज्ञा सा० [illegible] पुत्र [illegible]
स - - पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंबं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० [illegible] पु
वीरुछा भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंबं कारितं श्री उकेश गच्छे कक्कुदाचार्य
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० हीरा पुत्र सा० नाथ - - -
सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंबं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभि

(732)

सं० १५०९ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वंशे बहुरा गोत्रे सा० - - - पुत्र
हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० [illegible] स्वपि
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

(733)

सं० १५०९ वर्षे - - उपकेश वंशे बहुरा गोत्रे सा० - - - श्री सुमतिनाथ बिं
कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष वदि ९ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञातीय श्री दूगड़ गोत्रे सं० पनरपाल पु० वछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाभ्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पट्टे भ० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने सा० कुशा भार्या लषमादे सा० डाहृत्य श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मेरा जीवा देवादियुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः॥

भावहर्ष गच्छके उपासरेमें केशरियानाथजी का देरासर।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०९—वैशाख वदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० यूहड़ भा० नापाई पुत्र थुलाकेन भा० - - कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री -।

(738)

सं० १७१८ सा० रामजी सुत तेजसी श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री विजय गच्छे थापणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - -।

बाड़मेड़ ।

गोपोंका उपासरा ।

धातुके मूर्त्तियों पर ।

(७३९)

सं० १५२७ व० माह सु० १३ उ० सा० साल्हा भा० [illegible] पुत्र सा० [illegible] भा० गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री [illegible] सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(७४०)

सं० १५८० वर्षे वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० [illegible] भा० [illegible] हेमा भा० हमीरदे मं० सचाकेन भा० वर्मा सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री [illegible] बिंबं श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पट्टे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

(७४१)

सं० १५१२ वर्षे वैशाष सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० [illegible] भा० [illegible] पुत्र जिन-दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं का० आगम गच्छे श्री [illegible] सूरीणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(७४२)

सं० १५१९ मा–सु० – प्राग्वाट ज्ञा० [illegible] सा० [illegible] पुत्र सा० [illegible]

बणादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० आंपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ।

सभा मण्डप ।

(743)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ संवत १८५९ वर्षे माह सुदि ५ शुक्र पक्ष प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउल श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका नगर - - - राज्ये कुपा – श्री त्रां – कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग प्रधान श्री पता श्री धर्म्म मूर्त्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

(744)

सं० १९०२ माह वदि ५ शुक्रे श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्त्र फणा पार्श्व-नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त मोणक थाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थं कारापितं तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्टितं च ।

दुसरा मंदिर ।

(775)

संवत १५१० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० वस्ता पितामही कोल्हणदे सुत पितृ स० पत्ना मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

(१७९)

धरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यचतुर्विंशति पट्टः कारितः [illegible] [illegible]
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित गच्छति [illegible] ।

([illegible])

सं० १५२० श्री मूल संघेन भट्टारक श्री विजय कीर्ति श्री०

सभा मंडप ।

([illegible])

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुदि १५ रवि वासरे खरतर गच्छे भट्टारक श्री [illegible]
रत्न — — पुष्य नक्षत्रे राउल श्री उदयसिंहजी विजयि [illegible] राज्ये [illegible] श्री
सुमतिनाथ रउ नवचु कीउ श्री संघ करायउ सूत्रधार [illegible] ।
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

([illegible])

सं० १८२८ वर्षे भद्रपद कृष्णपक्ष ७ बुध — — वृहत्खरतर गच्छे भट्टारक [illegible]
सुर रावलजी श्री [illegible]दासजी — — । [illegible] विजय राज्ये [illegible]
शिणगार कीधा — — ।

([illegible])

॥ ॐ ॥ संवत १३५२ वैशाख सुदि ? [illegible] महाराज [illegible]
देव कल्याण विजय राज्ये [illegible]
[illegible] प्रयच्छति यथा । [illegible]

क्षेत्रपाल श्रीमंडंड राज देवयो उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभयादपि उष्ट्रं सार्थं प्रति द्रम्मो देवयोः पाइला पदे प्रियदत्त विशोप का- अर्द्धोर्द्धेन प्रदातव्याः । असौ लागो महाजनेन सामतः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डागियोंका मुहल्ला।

(750)

संवत १६७७ वर्षे ॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ शनि रोहिणी योगे श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पाताणी गोत्रीय सं भोजा भार्या भोजलदे पुत्र प संघपति पेतसीकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रे य से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर बद्ध श्री ऋषभदेव विहार मंडन सपरिकरं श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठापितंच प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच तपागच्छे श्रीमदकब्बर सुरत्राण प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक भट्टारक श्री हीर विजय सूरि राज पट्टोदय पर्वत सहस्र किरण समान युग प्रधान भट्टारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पट्ट प्रभावक श्री श्री मद्र जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महातपा विरुद्धारक श्री महावीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित श्री सुधर्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

सर्व धातुकी मूर्त्तियों पर।

(७५१)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरौ भंडारी गोत्रे सा० धांगड़ा संताने म० मायर भार्या सुहदे पुत्र स० अरका भार्या रूपमादे भ्रातृ सांपायने श्री कुंथुनाथ बिंब कारितं श्रेयसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रोईश्वर सूरि पट्टे श्री शांति सूरिभिः।

तपगच्छका उपासरा।

(७५२)

सं० १६५२ वर्षे वै० शु० ४ श्री कुंथनाथ बिंबं गांदि गौत्रे श्री --स० [illegible] सवीरदे पुत्र सादूल --- श्री तपागच्छे श्री विजयसेन सूरि -- पं० [illegible] प्रतिष्ठितं।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

(७५३)

सं० १५२८ वर्षे फा० वदि १२ श्री मालो श्रे० मनना भा० [illegible] पु० श्रे० [illegible] भा० सं० काका भा० फाट पुत्री लाघू नाम्न्या पु० सांगा भा० [illegible] श्री शांति बिंबं का० तपा श्री क्षेम सुन्दर सूरि ---।

(७५४)

सं० १६७७ वर्षे अक्षय तृतीया दिने श्रीमाल [illegible]

लापा भा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-सेन सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसधर भार्या गागी सुत मदन द्रमा जिनदास गीया पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ स० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

(757)

सं० १२५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे ऊ० गुगलिया गोत्रे सा० चीरा प० सोहाकेन श्री आदिनाथ बिंबं स्व श्रेयसार्थे संडेर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शांति सूरिभिः ।

(758)

सं० १२६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ऊकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे पुत्र रूपमा भार्या लाखण दे पुत्र दीलहा भार्या चीलहणदे पुत्र धहसी सकुटुम्बेन श्री

वासपूज्य बिंबं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री [illegible] सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ दिने श्री ऊकेश वंशे [illegible] गोत्रे सा० [illegible] जाया सुहयादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रुपादे पुत्र [illegible] प्रमुख परिवार युतेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५१० वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० पन्ना पुत्र सा० [illegible] पुत्राभ्यां सा० देवराज [illegible]राजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंब कारितं प्रति-ष्ठितं तपागच्छ भट्टारक श्री [illegible] पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५२७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ [illegible] दो० गिया भार्या [illegible] सुत दो० [illegible] केन भा० सलपू सु० दो० दासा नंना [illegible] पौत्र [illegible] भार्या [illegible] प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल बिंबं कारितं श्री [illegible] ---।

([illegible])

सं० १५५६ वर्षे पौष सु० ६ सोम प्राग्वाट ज्ञातीय सा० [illegible] भार्या [illegible] पुत्र कोला सा० पोमा भा० [illegible] --- [illegible] श्री [illegible] बिंबं का० [illegible] गच्छे श्री [illegible] सूरि [illegible] सुपदेशेन प्रतिष्ठित [illegible] ---।

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा० भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थं श्री श्री श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सु० २ सोमवारे पट यद गोत्रे सा० सा-र--- श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे भट० पुण्यकीर्त्ति सूरि पट्टे भट्टा० श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं ।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे ऊकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जोगाव श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारित --।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५ -- पार्श्वनाथ बिंबं श्री विजय जिनेन्द्र सूरि --।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

(767)

सं० १५०७ वर्षे फा० ब० ३ बुधे । ओश वंशे वहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० चेता

भा० पैतलदे पु० व० हियति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(२५८)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्रे श्री माल ज्ञातीय पितामह [illegible] पितामही [illegible] सुत पितृ डाहा मातृ जानू श्रेयोर्थं सुत राजा [illegible] ठाकुर [illegible] श्री विमलनाथ मुख्य चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संघेन आंबरणि वास्तव्यः ।

([illegible])

संवत १५३८ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थ वासी [illegible] ज्ञातीय सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा० जहुता भार्या [illegible] पुत्र सा० सीधा [illegible] भा० [illegible] पुत्र सा० पदलिक भा० कमला पुत्र सा० जीराकेन भा० पूनी द्वितीय सा० [illegible] कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पट्टे श्री हेम विमल सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हंस गणि प्र० परिवार परिवृतैः ।

([illegible])

संवत १६११ वर्षे वृहत खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राज्ये श्री श्रीमाल ज्ञातीय पापड़ गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र [illegible] श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं -- पर्व सुंदर गणिना प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

(771)

सं० १६७१ ज्येष्ठ वदि ५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० सामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या माल्हणदे पु० टेका भा० देवलदे पु० कचरा भार्या कउडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री अर्बुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सत्कर्म कर्म करण सम्प्राप्त संघपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संघरूप जी कारित शत्रुंजयाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारित प्रवर विहार शृंगार हार श्री आदीश्वर बिंबं कारितं पितामह वचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोजा रताना समुख पूर्वज नाम्ना प्रतिष्ठितं श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रवधारक प्रतिबोधित साहि श्रीमदकबर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान पदधारक श्री जिन सिंह सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार श्री भाणवट नगर श्री शांतिनाथादि बिंबं प्रतिष्ठा समयनि—रत्नधार श्री पार्श्व प्रतिहार सकल भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटोपमान प्रधानैः ।

(772)

सं० १७०० व० द्वि० चै० सित ८ गुरौ गोलकुंडा वा० सा० मेघा भा० मीहणदे सुत सा० मानजी नाम्ना श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरू भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार पातिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप बिरुध धारि श्री विजयदेव सूरिभिः ।

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

([illegible])

सं० १६६८ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे महाराजाधिराज महाराज श्री सूर्य सिंह विजय राज्ये श्री उपकेश ज्ञातीय छाड़ा गोत्रे सं० दादा तत्पुत्र सं० राम [illegible] भार्या [illegible] तत्पुत्र सं० टापाकेन भार्या दाड़िमदे पुत्र ॥ धनपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीबृहत्खरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि [illegible] मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

([illegible])

सं० १४७१ वर्षे माघ सु० १२ बुध दिने उपकेश वंशे आपणा गोत्रे सा० [illegible] पुत्र दाद भा० -- ण पितृ -- निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० [illegible] गुप्त सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५१० ज्येष्ठ सु० ३ दिने प्राग्वाट पोपटिया [illegible] [illegible] सा० [illegible] डुंगर भ्रातृ सा० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भार्या [illegible] कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत [illegible] बिंब का० प्र० तपा श्री [illegible] सूरि [illegible] सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(776)

सं० १५२९ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ ऊकेश ज्ञातीय श्री दूगड़ गोत्रे सा० भीम भा० मरमादे पु० – – – दि कुटुंब युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

(777)

सं० १५३२ जेष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर भा० मरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर सूरि पट्टालंकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(778)

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काष्टा – – – भ० श्री सोम कीर्त्ति आ० श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय बोरठेच गोत्रे सा० पेड़ुपा भा० खेडू पुत्र सा० भीमा जा० भटी श्री आदि – – कारापितं नित्यं प्रणमति ।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र – सोमकेन भा० गोरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलश सूरिभिः ।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे ऊकेश वंशे लोढ़ा गोत्रे संघवी टोहा भार्या तेजलदे पुत्र सा० रायमल्ल भार्या रंगादे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

भगिनी सुश्राविका चोरा नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चतुर्विंशति जिन बिंबं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि [illegible] श्री जिनहंस सूरि तत्पट्टालङ्कार विजयमान श्रीजिनचन्द्र सूरिभि सकल [illegible] आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर ।

(७३१)

संवत १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे सघ हरपा भा० सीरा दे तत् पु० संघवी अम-चंद भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० [illegible] नामकरण कारित प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

महावीरजी का मंदिर ।

(७३२)

सं० १६५६ वर्षे वै० सु० ४ बुधे श्री शांतिनाथ बिंबं नाहटीआ गोत्रे सं० [illegible] भा० हर्षमदे पु० सं० हांसा भा० लाडमदे पु० पदमसी कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री हीर विजय सूरि पट्टे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय सुन्दर गणिः प्रणमति ॥ श्री रस्तु ॥

(७३३)

॥ ॐ ॥ संवत १६६६ वर्षे वैशाख सु० ८ [illegible] श्री मेड़ता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे [illegible]

मंणादि सपरिवार – श्री सुमतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेड़ता वास्तव्य ऊ॰ ज्ञा॰ समदड़िआ गोत्रीय सा॰ माना भा॰ महिमादे पुत्र सा॰ रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छाल भा॰ केसरदे पुत्र जईतसी रुपमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं का॰ प्र॰ तपा गच्छे भट्टारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार भ॰ श्री विजय देव सूरि सिंहैः ।

(715)

सं॰ १६७७ ज्येष्ट वदि ५ गुरौ श्री ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स॰ कचरा भार्या कउड़िमदे चतुरंगदे पुत्र स॰ अमरसी भा॰ अमरादे पुत्ररत्न स॰ अमी-पालेन पितृव्य थांपसी वृद्ध भ्रातृ स॰ आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूरवदे पु॰ गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ बि॰ का॰ प्र॰ वृ॰ खरतर गच्छा-धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पट्ट प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षाषाढीया ष्टाहिकादि षाण्मासिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री–स्तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री शत्रुंजयादि तीर्थंकर मोचकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा॰ हंस प्रमोद वा॰ समय सुन्दर वा॰ पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

([illegible])

संवत १६७५ ज्येष्ठ वदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहिजादा साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० नाखा भार्या नवलादे पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० माल्हणदे पु० देका भा० देवलदे पु० जगा भा० जड़ावमदे पु० अमरसी—भा० अमरादे पुत्ररत्न संग्राम भा० अर्बुदाचल [illegible] संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पद नंदि महोत्सव विविध धर्म्म कर्त्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचन्द स्वभार्या अजाइयदे पु० ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण श्री योर्धं स्वयं कारित मम्मांणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ बिंब कारित प्रति-ष्ठितं श्री महावीरदेव – – – परंपरागत श्री बृहत्खरतर गच्छाधिप श्री जिन चंद्र सूरि संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री अकब्बर प्रदत्त युग प्रधान पदधारक श्री जिन चंद्र सूरि विहित काबिल काश्मीर विहार द्वार सिंधुर गजणा विविध देशामारि प्रवर्त्तक जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पट्टालंकार श्री अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठित [illegible] प्रतिष्ठित श्री पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहित्थ वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन [illegible] चक्रवर्त्ति श्री राजनराज सूरि द्विन फरैः ॥ आचार्य श्री जिन सागर सूरि प्रमुख परि-राजैः ॥ सुत्रधार नुजा । प्रतिष्ठितं भट्टारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरन्दरैः श्री मेड़ता नगर मध्ये ।

ओसियां।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है। यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्त्ति चिन्ह विद्यमान है। शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके अनशनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है।

मंदिर प्रशस्ति।

(७८८)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्वविश्वैकदर्शी। ससुर मनुज राजाभीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्यः स्मर्यते योगिवर्य्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकराक्रान्तस्य सद्बोध दृग्दृष्टा विष्टप-मुद्भवद्भ घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृपया नीति मरीचिभिः कृत युगस्याद्यो महत्वां गुणग्रामः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां भद्रं स नाभेः सुतः ॥ २ ॥ यो गीर्वाण सर्व सिद्धिहितां शक्ति मथव्रृधा नः क्रूरः क्रीडा चिकीर्षा कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया यस्याहतो सौ मृति मित इयता नामरत्वं यतो भूरपुण्यैः सत्पुण्य वृद्धि वितरतु भगवान्वस्स सिद्धार्थ सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वन्निवासालय वन समयोस्माक माहे - - - - नस्याथमाने - - - उत महती काचिदन्याय देषा इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति भवतः सुस्त जेतास्य नीचैर्यस्पादांगुष्ठकोद्याकनक नगपती प्रीतये स्तांस्त वीरः ॥ ४ ॥ श्री मानाभीरप्रभुरिह भुवि - - - यैक वीर स्त्रैलोक्येयं प्रकट महिमा राम नामाद्युत्रैन चक्रे

श्रीकं दृढतरसुरो निर्द्दयालिङ्गनेषु स्वप्नेयस्या [illegible] [illegible] [illegible] वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या कापरिकृत प्रेम्णाल्लक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवन् प्रतीहार [illegible]-राम समुद्भवः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सवशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत् कीर्त्तिर्यस्य तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नास्मिन्मामि सुखेन [illegible] [illegible] [illegible] तस्माद्बहिर्निर्गन्तुं दिग्गिजेन्द्र दन्त मुसल व्याजाद् कार्पोन्मनुः ॥ ७॥ समुद्रा [illegible] महता चमूः पुरा पराजिता येन---समदा ॥८॥ --समदारण तेनायनोशेन कृता [illegible] सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः। समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मृकेशनामानित पुरं गरीयः ॥९॥ ---सक्रान्तं परैः----मिव श्री मरपालितं यन्महोभुजा। [illegible]स्य प्रथनं विशुद्धं शं शुभ्रतामभ्रस्पृम्तुङ्गराज कुंजर युतं सद्वैजयन्ती [illegible] [illegible] हिम---सुत रति---॥ १० ॥ तद् कान्दं तान्यं यच्चसा संसार---[illegible] ॥ ११ ॥ क्वचित्--- स्वुद्धयोधिकम धोयते साधवः क्वचित्पट् परीयसौ प्रकटयन्ति [illegible] स्थितिम्। क्वचिन्तु जगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे- - - - - - - ध्वनिमदेव गान्धारयंत ॥ १२ ॥ वीक्षणे क्षणदां रवस्य वर्णक्रमो विपश्चितान्। [illegible]-भंवत्यवशात्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ [illegible] [illegible] ---[illegible]---मुच्चैः सद्भाव ---- पदार्थः प्रतिध्वान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन्तारलोये भूयः प्रकट महिमा [illegible] [illegible] ॥ १४ ॥ --- [illegible] ------ यिकार त्रैव -------------[illegible]। तारापितं येन सुवेश [illegible] [illegible] [illegible] मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सोम्यो वणिग्जनदृक् [illegible]। [illegible] --- [illegible] ॥१६॥ ---चतुल्लरा --- [illegible] [illegible] [illegible] सार्गणावात ---- तरवा ॥१७॥ [illegible] [illegible] --------- ॥ १८ ॥ यन्नाकारि [illegible]--[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न्नातिथं जनरपि प्रतिगतं [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] --- नीर नीर दलित .... ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्मं [illegible] [illegible] ...... [illegible]

.... नाये .... कुमतेर्म्मनागपि । मि .... । वंसतोपिहि मण्डपेपवान सम्मर्वा
मवतीह काचला .... ॥२०॥ यदि यादि .... संक्षिता
ाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ग्रहन वी रयगी सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गाया प्रतिमा कारि स
.... ग्रधामनि ॥ २२ ॥ आम्रकारसर्य्दे रथातु .... यत .... देवदत्त
.... मियागमे ॥ .... प्रति दिनमिति ....
॥ कार्यं प्रति त्रिद्यते यद्वदधिकं ॥ स्वैर्व्वन्तो पिये स्वन्तं भीरय: परलोकतः । भोगि
.... हिको .... स्य दूरगाः ॥ .... ति .... बला
रतत्स .... त्रिः पुन्रयं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिभारा
वकलः सन्गोष्ठिकानु .... जिन्द्रक .... मतदु .... रुप
तोय .... नेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मरस दृग्दृश्यते ....
जयश्री भूजयन्त .... ॥ संवत्सर दशशत्यामधिकायां वत्सरै स्त्रयो दशभिः
ाल्गुन शुक्ल तृतीया भाद्र पदाजा .... सं० १०१३ ....
ाम ॥ प्राजापत्यं दधदपि मना गक्षमालो पयोमी शंसं चक्रं स्फुटमपिव ....
ोवः पाया .... भुवन गुरुर्नाभ .... ॥ भावद्गोगंग्रं त वन्हिरंगं क
र विन मन्मूर्द्धमिद्धांच्यते धोयावन्मेरुर्म्मर्हीन्नि .... ति युते .... ।
गिरमुग्यच्छेद .... श्री मद्व .... दशा पुण्य .... नित्यमस्तु ॥ अथनु
गर्वासताय .... कीर्त्तिर्न्नि रीति वपुः सदा ॥ यस्मादस्मिन्निजम्मन्यवरि पति
ति श्री .... समा .... प्रकट सुतारजो .... सूत्रधारस्य ....
ाति .... दित मिदं ।

तोरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ़ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापितमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ वांघल पुत्र यशोधर बोहित्थ मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५९ कार्तिक सु० १२ सुचेत गुत्री सहदिग पुत्रैः गगु दरटो सुमदी सुमन मुखे प्रसादै चतुर्विंशति जिनः मातृ पट्टिका निज मातृ जन्हव श्रेयार्थं कारिता श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्त्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन वदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वामदेव सूरि संघ नामिलिहल श्रेयार्थं राखदीय कारिता।

(793)

सं० १२३४ वैसाख सुदि १४ मंगल। नागदेव भार्या शामपद पनाय श्रोयं । भार्या यशोदेव्या भामर्थे पार्श्व पदे ।

(794)

सं० १२३२ वैशाख शुक्र १४ मंगलवार साध्यदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पार्श्व जिन तुम्बिल सादेव मणि कृतेन।

(795)

सं० १२३८ वर्षे आषाढ़ सुदि ८ शुक्रे मोढ़ वास्तव्य सा० श्री-भार्या यसमादे भार्या सुमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन।

(796)

सं० १४८२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष वालेचा गोत्रे सा० वाल माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूरांयाम्रो पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः।

(797)

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसवा से० भार्या माणिकदे सुत रणाय्र भार्यायां ३० पिथा भार्या षां सुतयो याति जूखाण श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहद् तपापंकज श्री विजय तिलक सूरि पट्टे श्री विजय धर्म्म सारि श्री भूयात्॥

(798)

सं० १५३२ वर्षे माघ सुदि ५ दिने मोढ़ ज्ञातीय मंत्रि देव बकु सुत मंत्रि सह भाइ-भाभ्यां श्री धर्म्मनाथ बिंबं पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठितं श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रभु सूरि मंडलिराभ्यां कृतः।

(799)

सं० १५२९ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-भार्या माणिकदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० धर्म्मादे धर्मादे नाम्नी पुत्रेन स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय सागर सूरिभिः।

(800)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूणं करापितं।

(801)

स० १६८३ ज्येष्ठ सु० २ कडुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजबाई केन श्री समस्त बिंबं सा० तेजपालेन प्र०।

(802)

संवत् १७५८ वर्षे आषाढ़ सुदि १३। रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन राज सूरि। गणे शिष्य ---।

नींवमें प्राप्त मूर्त्तिके टूटे चरण चौकि पर।

(803)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ -------- कारीभद्र -------- ईय तस्यं श्रेयोर्थं कारित जिनेन्द्रिकम् ---।

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्येह श्री केल्हण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र श्री कुमर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती - - - दधिकान्वीय कीर्ति पाल राज्य वाहके तद्भुक्तौ श्री उपकेशीय श्री सच्चिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुंहल गो क्षय विषयी धारा वर्षण श्री क सच्चिका देवि भक्ति परेण श्री सच्चिका देवि गोष्ठि-कान् भणित्वा तत्समक्ष तद्वयं व्यवस्था लिखापिता । यथा । श्री सच्चिका देवि द्वारं भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्घाट्य द्वार स्थितम् स्थातव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश वर्षीयोत्परः । तथा गोष्ठिकैः श्री सच्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा ।०॥ घृत कर्ष १ भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः ॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ धोर मड्डांगु गोत्रे साधु महुदा सुत साधु जाल्हण तस्य भार्या सूहवं तयोः सुतेन साधु माल्हा दोहित्रेन साधु गयपालेन-सच्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चंद्रिका शीतला श्री सच्चिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पाल्हिया धीय देव चन्द्र वधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रे यार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा समन्वेन स्वगृह दत्तं ।

(४०७)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - - - पाल्हिया श्रीत देव चंद्र वधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थे समस्त गोष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्ग्ग समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

डूंगरीके चरण पर ।

(४०८)

सं० १२४६ माघ वदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्ग्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके जैन पण्डित रामानन्दजीने संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

(४०९)

संवत् ११४४ वैशाख वदि ७ पल्लिका चैत्ये वीर ।

(४१०)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ श्रीधरेल - - - ।

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्हं साजिताभ्यां कारयाप्र कृतः श्री ब्राह्मी गच्छे प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः ।

(812)

संवत् ११५१ आषाढ़ सुदि ८ गुरौ ---।

(813)

॥ॐ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनौ श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये श्री मद्योतनाचार्य महेश्वराचार्याम्नाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार मधण देवौ तयोर्मध्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं मोक्षार्थं च मंगलं महाश्रीः ।

(814)

ॐ। संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य श्री आनन्द सुत महामात्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त नाथ देवस्य ।

(815)

ॐ। संवत १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य श्री आनन्द सुत महामात्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल नाथ देवस्य ।

(८१६)

सं॰ १५--- सुदि ३ सा----का॰ सा॰ मघा---स्व श्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंबं का॰ प्र॰ श्री जिन्नमाल गच्छे।

(८१७)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ ---।

(८१८)

सं॰ १५१३ माघ सुदि २ दिने उकेश सा॰ मदा भा॰ वाल्हदे पुत्र सा॰ खेमा [illegible] भा॰ सेलखू भ्रातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विंबं का॰ प्र॰ तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः।

(८१९)

सं॰ १५२९ वर्षे माह सु॰ ५ रवौ ऊ॰ सोगर गो॰ सा॰ राणा भा॰ रत्नादे पु॰ [illegible] भा॰ रडणे पु॰ खरहथ खादा खात खना पितृ श्री नेमिनाथ विंब कारि॰ श्री नागेन्द्र गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः।

(८२०)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ऊ॰ नुगलिया गोत्र सा॰ सीमा पुत्र [illegible] भा॰ रतनादे पु॰ धरसा नरसा याद्रा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सू--।

(८२१)

स॰ १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री [illegible] वंशे [illegible] गोत्रे [illegible] भार्या ऊलमादे पुत्र सा॰ सोना सुश्रावकेण भ्रातृ सा॰ पद्मा तत्पुत्र सा॰ [illegible] प्रमुख परिवार

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं॰ १५३१ वर्षे फागुन सु॰ २ गुरौ ऊ॰ चूडालिया गोत्रे च ऊ॰ सा॰ सिवा भा॰ सुहागदे पुत्र सा॰ देवाकेन भार्या दाडिमदे पुत्र आसा भार्या ऊमादे इत्यादि कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का॰ प्रति॰ श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फोफलिया गोत्रे सा॰ मूला पुत्र देवदत्त भार्या साहू पुत्र सा॰ थरु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ बिंब श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वदि १ शुक्रे उकेस ज्ञातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल पु: ऊदा चांपा ऊदा भा॰ रूपी पु॰ वाला संतावाला भा॰ वहरङ्गदे सकुटुम्ब श्रे॰ उदा पुण्यं पु॰ श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः।

(825)

सम्वत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह विजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजित तत्प्रसाद पात्र चाहमान वंशावतंस श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

माल ज्ञातीय सा० सोहिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा० डूंगर भ्रातर नाम भ्रातृ द्वयेन सा० डुंगर भा० नायकदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रतन सा० पौत्र सा० डूंगा सा० भाखर भा० भायलदे पुत्र डूंसर अखेल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवप्रासाद प्रसादोपरि श्री पार्श्वनाथ बिंबं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितम च प्रति-ष्ठायां प्रतिष्ठितंच श्रीमदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तपा गच्छाधि-राज भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर परिकरितैः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे श्रद्धो भादा सादा श्री लघो दीयाते लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारिता ॥

(४०८)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे अष्टम्यां दिवसे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० हंसर हदा सा नामेन पुत्र रूपा पोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केशवादि परिवार परिवृतैः स्वश्रेयसे श्री महावीर बिंबं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० डूंगर भाखर कारित प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री श्री श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

(४०९)

सं० १६८६ वर्षे वैसाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे अष्टम्यां दिवसे महाराजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये तत्पुत्र युवराज कुमार श्री अमर सिंह वाक्येन तत्प्रसाद पात्रे चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नाम्नि श्री पालि नगर राज्य धुरीणे तन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० सोहिल भा० सोभागदे पुत्र रतन सा० भाखर नाम्ना भा० भावलदे पुत्र सा० डूंसर अखेल प्रमुख परिवार युतेन स्व श्रेयसे श्री

सुपार्श्व बिंब कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकबर शाह प्रदत्त जगद्गुरु बिरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन सूरि ।

(८२८)

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय मुहणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुत्ना पु० ताराचन्द भाज राजादि युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्ति स्फूर्त्ति मत्कोशं विश्रान्ति जिन बिंब विराजित दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजय देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः ।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

(८२९)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - - हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे पुत्र सा० जसवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं स्थापितं च । महाराणा श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरीश्वरोपदेशतः घाघरला । वास्तव्य समस्त संघेन । शिखरिरायां उपरि निर्मापितेन बिंबेन प्र० श्री प्रतिष्ठितंच तप गच्छाधिराज भट्टारक श्री मदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु बिरुद धारक भ० हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्यं श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिकरितैः ।

लोढारो वासका मंदिर ।

(८३०)

ॐ ह्रीँ श्रीँ नमः ॥ श्री पातिसाह पुष साहजी विजय राज्ये । संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सिताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगंनाथ जी राज्ये ऊपकेश ज्ञातीय श्री श्री माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० डुंगर भ्रातृ सा-आपर -- नामभ्यां - डुंगर भार्या नायलदे पुत्र रूपसी राइं स्वघर मना आपर भार्या आपलदे पु० हंसर जायेल रूपा - पु० टीला युतेनं स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरि तत्पट्टे श्री रत्नचन्द्र सूरि सा० तिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलपा० प्रासादे जीर्णोद्धार कारापित मूल नायक श्री पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां बिंब० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश ----- सहस्र ५ द्रव्य व्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरुतर ----- कृता श्री पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(८३१)

संवत् ११२५ आषाढ़ सुदी ९ - - - - ।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(८३२)

संवत् १२०८ द्विं ज्येष्ठ वदि ९ सदो ----- पल्लिकायां ----- प्रतिष्ठापि[illegible]

समस्त राजावली विराजित परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर लब्ध -------- निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी भूपाल श्री मत्कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये -----।

नाडोल।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे चौमाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं ॥ बृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना प्रतिष्ठितं ॥

(834)

ॐ। संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे चौमाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री मद्देव सूरि विनेयेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना। यावद्रवि चन्द्र सौम्यानां धर्मोजिन प्रणीतोस्ति। तावज्जाया देव जिन युगल वीर जिन भुवने।

([illegible])

संवत् १२३२ वर्षे पोह सुदि-पंचम जैना श्रावि० [illegible] पुत्र नागसी [illegible] पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री [illegible] सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १२८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्रे० समरसी सुत दो० धारा भा० [illegible] दो महिपाल भा० माल्हणदे सुत दो० सूडाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० [illegible] च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री [illegible] सूरिभिः ।

([illegible])

श्री चन्द्रा प्रभु बिंबं । सं० १६८६ प्रथमाषाढ़ वदि ४ गुरौ राजाधिराज श्री गज सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जैसा सुत जयमल्ल जी नाम्ना श्री चन्द्र प्रभु बिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पट्टालंकार भ । श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पट्ट प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवारितैः राणा श्री जगत सिंह राज्ये नाडुल नगर राय विहारे श्री पद्म प्रभ बिंबं स्थापितं ॥

([illegible])

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ४ गुरौ राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य मणोत जैसा सुतेन । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ बिंब कारित

प्रतिष्ठापित स्त्र प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्रो ५ श्री विजय देव सुरिभिः स्त्र पट्टालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख: च परिवारः॥

ताम्र शासन ।*

(९३७)

ओं॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । त्रिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षपिष्ठः परिहृत मद मार क्रोध लोभादि वारः। दुरित तिमिर सूर्यः स्वो वर्गीयं च वन्द्य त्रिभुवन कृतसेवः श्री महावीर देवः॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासीत नड्डूले नृपः श्री लक्ष्मणाह्वो॥२॥ तस्मात् बभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः। श्री बलि राजो राजा विग्रह पालोनु च पितृव्यं॥३॥ तस्यानुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः। तत्तजः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूर पृथुल तेजः॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद हृदयजनो पार्थिव श्रेष्ठः। तद्भ्राताऽभूत क्षितिपः सुभटः श्री जेंद्र राजाख्यः॥५॥ श्री पृथिवी पालोऽभूत् तत्पुत्रः सौर्य वृत्ति गो साहपः। तस्मादनवरतजाता श्री जोजलो रणरसाकुला॥६॥ तदैव राजा भूरश्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः। तत्पुत्रः क्षोणिपः श्री अल्हण देव नामाभूत्॥७॥ यस्य प्रताप ज्वाले संकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं। सिंचंति मुद्रिताहित गण ललना नयन सलिलौघैः॥८॥ सोय महा क्षितिपः सारमिदं बुद्धिमान् चिन्तयत। इह संसार असार मध्ये जन्मादि जन्तूनां॥९॥ यतः। गर्भे क्लिष्ट कुक्षि मध्ये पल रुधिर वसा मेदसा मद्ध पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्यान्नु जन्मा धर्माद्दानामवेला भवतीह नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्थविर भाव स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः॥१०॥ सद्योसोयाति तुच्छः क्षणः मिह सुभद्राः सत्वग्री वृष्ट नरः प्राणिस्थं चंचलं स्याद्गलमुपरि यथा तोय बिन्दुर्नलिन्याः सारमेव च

* यह ताम्रपत्र [illegible] गुप्ताजीने प्राप्त किया है।

पित्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्म्मं कीर्त्तिं देशान्तो राज पुत्रान् जन पद [illegible]
घोषयस्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ [illegible]
चतुर्दशी पर्वणी । स्नात्वा धौत पट्टे निवेश्य दहने दत्वाहुतीन् पुष्प कृतं [illegible]
तमः प्रपात्नु पट्टोः सम्पूर्ध्य चार्यजलिं । त्रैलोक्यस्य प्रभुं [illegible]
पंचामृतैः ईशानं कनकान्न वस्त्र नद्वनैः सम्पूज्य विप्रां गुरं ॥१२॥ [illegible]
तोदकः प्रगुणो भूत्वा पसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छत यावत् चंद्रार्क भूपाल ॥१३॥
श्री नड्डूल महास्थाने श्री संडेरक गच्छे श्री महावीर देवाय श्री नड्डूल [illegible]
मंडपिकायां मासानुमासं धूप वेलार्थं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् [illegible]
भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिभिंर्वि प्रोक्तिभिरपरैश्च परिपंथाना न कार्या । यतः सामा-
न्योयं धर्म्म सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः [illegible]
पार्थिवेन्द्र भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मद्वंशजा भूपा [illegible]
भूपतयश्च ये । तेपामहं करे लग्नः पालनीयं इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परे [illegible]
कश्चित् नृपति र्भवेत् तस्याहं करे लग्नोस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ [illegible]
सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥
षष्टि वर्ष सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरकं
वसेत् ॥१८॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत यः स विष्टायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः
सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटव्या स्वतोयासु शुष्क कोटर वासिनः । कृष्णा [illegible]
देव दायम् हरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महा श्रीः । प्राग्वाट वंशे [illegible]
मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः [illegible]
आसीत् [illegible] नैगमानां [illegible]
[illegible] वासलः । पुत्रस्तस्य वभूव [illegible]
[illegible] रचयांचकार लिखितं चेदं महा शासनं [illegible]
[illegible] देवस्य ।

ताम्रपत्र (महाजनों के पास)

([illegible])

ॐ स्वस्ति ॥ श्रिये भवंतु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरी नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा । राजा महाराज नतांह्रि युग्मः ख्यातो धनो वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समानूनदाय तनयः श्री लक्ष्मणो भूपति स्तस्माद्स्वर्य गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभि-ताख्यः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो महो ख्यातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽ भवत् ॥३॥ तस्मिन्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुर्द्धर वैरि कुंजर घय प्रोत्ताल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलीकृताखिलजग च्छ्री आशाराजो नृपः ॥४॥ तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे दवापास्य सौराष्ट्रकान् । शौचाचार विचार दानव सति नं ड्डूल नाथो महा संकपोरपादित वीर वृत्तिरमलः श्री अल्हणो नृपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रौड वंश जव रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । धामेण ये जनकजेव विवा-हिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगाधयो रूप सौंदर्य युक्ताः । शस्त्रैः शास्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुण गणास्त्यागवन्तः सुशीलाः ज्येष्ठ श्री केल्हणाख्य स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्त्ति पालो । यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वद्यामीजने वंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमीषां परिवार नयो ज्येष्ठोऽगजः क्षोणि तले प्रसिद्धः । कुमारः कुमारो निज राज्य धारी श्री केल्हणः सर्व गुणोरुपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आल्हण देव कुमार श्री केल्हण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य प्रसादे दत्त नड्डूलाई प्रतिबद्ध द्वादश ग्राम नतोराज पुत्र श्री कीर्त्तिपाल । संवत् १२१८ श्रावण वदि ५ सोमे । अद्येह श्री नड्डूले स्नात्वा धौतवाससी परिधाय तिलाक्षत कुश प्रणयिन दक्षिण कर

(२११)

देवानुदकेन संतर्प्य । बहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसो निःशेष पातक पङ्क प्रक्षा-
लनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम
द्रव्याहुती र्हुत्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिक पारत्रिकं
च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाईं स्वामि
श्री महावीर जिनाय नडूलाईं द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रम्मौ स्नपन विलेपन [illegible]
धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति भाद्रपद मासे चंद्राष्टं तिथि कार्य चातुर् प्रदत्तौ ॥
नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । [illegible] । [illegible]
सुवं । देवसूरो । नाडाड मडयड़ो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु [illegible]
शासने दत्ती । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं एगिरथा सर्व्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे [illegible] ।
अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्त्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रांते योऽन्य कोपि भविष्यति
तस्याहं करे लग्नो न लोप्य मम शासनं । षष्ठि वर्षं सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः ।
आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति
पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्थ साढनम्ना गुप्त करः दामोदर सुतो [illegible]
शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

([illegible])

संवत् १२१३ वर्षे मार्गा वदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल पाटके समस्त राजा वली
समलंकृत परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर लब्ध प्रसाद प्रौढ़
प्रताप निज भुज विक्रम रण गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव
कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री [illegible] देव श्री श्री
करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने चौहित्थ
चौहाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदे हर्षीय पुत्र [illegible] महाराज० श्री [illegible]

राजस्तद्दस्य सुत संजात अनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिंह शासन प्रयच्छति यथा। अद्य नद्दूल डागिकायां देव श्री महावीर चैत्ये। तथाऽऽरन्हु-नेमि चैत्ये गील वंद्डी ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्वीय धर्मा-र्थं वर्द्धं मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारक ब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त भिद्दाद्रूको रूपक १ एक दिनं प्रति प्रदातव्यामिदं। यः कोपि लोपयति सो ब्रह्महत्या गौ हत्या सहस्रेण लिप्यते। यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं। बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः। यः कोपि पालयति तस्याहं पाद लग्न तिष्ठामीति। गौडान्वये कायस्थ पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं।

नाडलाई।

वर्त्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिलेके नाडोलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और यही स्थान है कि-

संवत दश दाहोत्तरे वदिया चोरासी वाद।
खेड़ नगर थी लाविया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्त्तमान हैं।

श्री आदिनाथजी का मंदिर।

(८४२)

संवत् ११८९ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री षंडेरकान्वय देवी चैत्य देव श्री महावीर दत्त। मोरकरा ग्रामे धाणक तैल पल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्नंपा सुत विग्रहराजेन कडुआ दत्त ॥ रा० आसराज समेत। ब्राह्मिण प्रपडो भाग विउ। ऊठिबरा

यीह्लु रा पोसरि । लष्मणु । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । [illegible] [illegible] यदा भूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

([illegible])

ॐ ॥ संवत् ११८९ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज रायपाल । देव तस्य पुत्रौ रुद्रपाल अमृत पालौ । ताभ्यां माता श्री राज्ञी [illegible] देवी तया नदूल डागिकायां ॥ सर्वां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । [illegible] प्रति धर्म्माय प्रदत्त सं० नागसिव प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० [illegible] [illegible] [illegible] वणिक पोसरि । लक्ष्मण एते साक्षिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो [illegible] [illegible] स्त्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ छ ॥

([illegible])

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव [illegible] ---हाउ--समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । [illegible] । [illegible] [illegible] सर्वं साउत पुत्र विंसोपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तेल पल मध्यात् । [illegible] [illegible] पलिका द्वयं । पली २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद समस्त [illegible] [illegible] विंसोपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना [illegible] ब्रह्म हत्या [illegible] । [illegible] [illegible] भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

([illegible])

संवत् १२०० कार्त्तिक वदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव [illegible] । [illegible] नद्दूल डागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नद्दूला [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । पूजा हेत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नमपि तद्रोणं प्रति मा० ऱ्कपास लोह गुढर पाड हींगु माजीठा तौल्ये घड्डो पूति । पु०।
पूगहरी सकि प्रमुख गणितैः। सहस्रं पृति । पुगु १ एततु महाजनेन चेतरेण धम्मीय
प्रदत्तं लोपकस्य जतु पापं। गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः॥

(846)

ॐ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुके। श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव राज्ये प्रवर्त्तमाने। श्री नटूल डागि कायां। रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्शमानेन। श्री महावीर चैत्ये साधुतपोधन निष्टार्थे। श्री अभिनव पुरीय वट्टायर्या। अत्रे पु समस्त बणजारकेषु। देसी मिलित्वा वृषभ भरित। जतु पाइलाल गमाने। ततु वीसं पृति। रुआ २ किराड उआ। गाडं पूति रु० १ वणजारकैधर्म्माय प्रदत्तं॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या सहस्रेण॥ ब्रह्म हत्या सतेन'। पापेन। लिप्यते सः ।

(847)

संवत् १२८६ वर्षे अपाढ़ वदि ९ नाडलाई रीमाउहीत को-विसति को तेल सेर०॥ दोधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ प्रत देस।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्ष

(849)

सं० १५६९ वर्षे। कुतबपुरा पक्ष तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात् मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात्॥

(850)

सं० १५७१ वष कुतबपुरा तपागच्छाधिाज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद सुन्दर सूरिराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्गं श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात्

(८३१)

सं० १५७१ वर्षे कुनथपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद सुन्दर सूरि गुरूणामुपदेशात् पत्तनीय श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरं नंदतात् ॥

(८३२)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५९७ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्र वासरे पुनर्वसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संडेर गच्छे कलिकाल गौतमावतारः समस्त भविक जन मनोम्बुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः षष्टि सुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः । श्री षंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर नभो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति चक्र चूडामणिः भ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः तत्पट्टे श्री चाहुमान वंश शृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री बदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशो वादः भ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः । एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूरीणां वंशे पुनः श्री शालि सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पट्टालंकार हार भ० श्री शांति सूरि वराणां [illegible] विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मेदपाट देशे । श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री बप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर श्री षेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वंशोद्योतकार प्रताप मार्तंडाव तारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुंभकर्ण पुत्र राणा श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात् । श्री उकेश वंशे राय भंडारी गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० मयूर सुत मं० सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० सीहा समदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसीह धारालादि सुकुटुंब

सुताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ९६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां त० सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वस्यां श्री आदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पट्टे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० श्री ईश्वर सूरिभिः। इति लघु प्रशस्तिरियं लि० आचार्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(853)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे• सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लपा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान गम भार्या तत् पु०। भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाछा पुत्र संकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद आदव। मं० सिवा पुत्र पूंजा जेठा संयुतेन श्री आदिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि ततपटालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः।

(854)

महाराजाधिराज श्री अभय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ श्री नहुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृ० सा। जीवा भार्या जसमादे सुत सा। नाथाकेन श्री मुनि सुव्रत विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च। भट्टारक श्री हीर विजय सूरिभिः।

(855)

संवत् १७६९ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ऊकेश ज्ञात १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर सी पुत्र ठाठा हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेट पूजा गुहिलेन संप्रति प्रतप (प्रतिष्ठितं) माणिक्य विजै शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात शुभं भूयात्।

([illegible])

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगीरी महा तपा विरुद् धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरीश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्मापित श्री जूं खल पर्व्वतस्य जीर्ण प्रासादोद्धारेण श्री नडुलाई वास्तव्य [illegible] श्री श्री आदिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री अकब्बर शाह [illegible] द्गुरु विरुद्धारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री नडुलाई मध्ये श्री जूं खल पर्व्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंबं ॥ श्रीः ॥

श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

([illegible])

ॐ नमः सर्व्वज्ञाय ॥ संवत् ११९५ आश्वयुज वदि १५ कुजे ॥ अद्येह श्री नड्डूलडागिकायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयी राज्यं कुर्वन्तस्ये तस्मिन् [illegible] मद्गुर्जित तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजाद्यर्थं [illegible] । राउत उधरण सूनुना ओक्कारि १ ठ० राजदेवेन स्व पुण्यार्थं [illegible] गच्छता नामा गतानां वृषभानां शेकेषु यदा भाव्ये भवति [illegible] चंद्रार्कं यावत् देवस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न कर्त्तव्या ॥ अस्मद्दत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ [illegible] करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ [illegible] राउ० राज देवेन मतु दत्तं ॥ [illegible] पटा० पाला पूर्विंगा १ सांगुला ॥ देवसा । रापसा ॥ [illegible]

(८५८)

ओं ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्त्तिक वदि १४ शुक्रे श्री नडुलाई नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्थ स्वच्छ श्री मदवृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि भिरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद् विषादः प्रसाद समुद्धघे आचंद्रार्कं नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी ।

(८५९)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३९४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्रे श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत याला राउत हापा कुमर लुभा नीया समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं ढिकुय उवाढी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्कं यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ यहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

घानेराव ।

(८६०)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक वैजल्ल देव राज्ये श्री वंब

गत्तीय राउत महण सिंह भुक्ति चंतंह उग्राट मध्यात श्री महावीर देव वर्ष प्रति द्राम ४ खाज सृणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांसत्य । सेठ रायपाल सुत राय राजमल महाजन रल पाठ विनाणि यस्स दियहिं ।

बेलार ।

मारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

([illegible])

ओं संवत १२३५ वर्षे श्रे० साधिग भार्या साल्ही तत्पुत्रा आयवीर पदाक आवधर आयवीर पुत्र साल्हण गुण देवादि समन्वित आत्म श्रं यसे ष्टनिकां कारितवान ।

([illegible])

ॐ संवत १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ प्रौढ प्रताप श्री महाराज देव कल्हण विजय राज्ये वाघल दे चैत्ये श्री नाणकीय गच्छे श्री शांति सूरि गच्छाधिपे श्रावक । आसीद्द धर्कट वंश मुख्य उक्तः धाहुः पुरा गुरुधीसद्गुणोत्तम निपुणो ममतेति श्रेष्ठि तपात्यांतिधः । पुत्रो तस्य चतूनतुः लिलितमै विनयान कीर्ति रूप पूर्णन्दु प्रथमो वभूव सगुणी रामाभिधश्चापरः ॥ तयान्वः ॥ श्री सर्पेज्ञ पदार्चने कृत मतिः द्वितीय स्तमु स्मुंतु राशादेव इति निती समनवत पुत्रोस्य धांधाभिधः । तत्पुत्रो मति मांतिः आंत दिनं गोसाक नामा सुधीः विष्टाचार विचारदो जिन गृहोद्धारोद्यतो ओरजति श्रो

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं। गोष्ट्याच राम गोसाभ्यां कारितो रंग मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु।

(863)

संवत १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः।

(864)

अ ॥ संवत १२३८ पौष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पा।

(865)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांयां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्यां लक्षा श्री पाल्हाया --- माल्हा ---- भार्या श्री ति ---- भार्या ---न भार्यां पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि।

(866)

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिख्ये सुधर्म्म सुत वल्हणः। अनुच्चारित्र संयुक्तो बाल भद्रो मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राह्वो मुनिचन्द्र -- परः। तदन्वये धनदे -- पार्श्व दे। चौस सोमको ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः। लगिकां कारयामास गुरु कंद विवृद्धये ॥ ३ ॥

(867)

ओं संवत १२६५ वर्षे धर्क्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्यां सुखमति तत्सुत थांयां काल्हा राल्ह घोर सीह पाल्हण प्रमुख गोसा पुत आमृ

वीर आम जाल काल्हा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर राल्हण पुत्र जाजो [illegible] [illegible] पुत्र देव जस पाल्हण पुत्र घण चंडा रथ घंटादि कुटुम्बसमन्विताः [illegible] लगामिमं कारापयामासुः ।

([illegible])

ओं संवत १२६५ वर्षे उसभ गोत्रे श्रेष्ठि पासदे भार्या दुर्लभदेवि [illegible] [illegible] भार्या राजमति राल्हू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार [illegible] कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादि कुटुम्ब सहितेन [illegible] माकारितेदमिति --- ।

([illegible])

ॐ संवत १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धर्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत सांतु भार्या थिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमदादि [illegible] [illegible] [illegible] कारयदात्म श्रेयसे ॥छ॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

([illegible])

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देव्याश्चैत्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री प्राग्वाट वंशीय रोपि मुनि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्री जिनचन्द्रसूरि [illegible] सहितं चन्द्रकों मंडपः शुभं भवतु ॥

(871)

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मट्ट कारिते । मंडपो मंडनं लक्ष्म्या कारितः कंच प्रास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा यालकाः स्याताश्च-तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्ट श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद्भ भूतं ॥३॥

कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(872)

ॐ॥ संवत् १२३० आपाढ़ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण वास ददिवा रावधो विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

(873)

ॐ॥ संवत १२३० आपाढ़ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनंद सूरि देशनया श्रे० धाधल श्रे० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख श्राक - - ।

(874)

ॐ॥ नमो वीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वस्ति श्रियामास्पदमापसिद्धिजगत्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदनंत रिद्धिरादीश्वरः शारद प्राप्त दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्व्वेऽप्यमी

मोद मूर्त्तो मजते । युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दृश्यो प्रसार [illegible] । [illegible]
प्रसारो व्रजसि प्रसारः । इमे मये कोटिसमेऽपि [illegible] प्रसारस्य न [illegible]
गीर्वाण सालो नहि काष्ठ भावान् । तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः । [illegible]
न्नहि काम कुंभश्चिंतामणिर्न्नैव च कर्कुरत्वात् ॥३॥ कूर्मो न [illegible] ।
सुधाकरोनैव कलंकवत् स्यात् ॥ सुवर्ण शैलो न कठोर भावात् । [illegible]
मुपैति ॥४॥ दुग्धो दधौ संस्थित नाय विंदून । [illegible] ।
करोत्करान् शारद चन्द्र सत्कान् । कश्चिन्निमीलेन गुणान् युगादिः [illegible]
प्रभवंति विद्याः । सुपंचलोकादिव काम गव्यः । [illegible] ।
पुष्णातु पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यत्तीतरामा [illegible] । [illegible]
मार्गाः पूगाः । यद्वा मयूरादि वले [illegible] । स [illegible]
वंश व्रतति प्रताना नीकोपमो नीक निकाय नेता । [illegible] ।
स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ८ ॥ [illegible]
पनकदर्पन पर्व्व राहुः । श्री [illegible] नृप [illegible] । [illegible]
नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कन्न धज कुल दीपः कांति [illegible] । [illegible]
सौम्यता कौमुदीपः । नृपतिरुदय सिंह [illegible]
निरया मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेपामय [illegible] । [illegible] ।
यस्येति [illegible] । [illegible]
पट्ट शोभा । सर्वोन्नरत्नप्रति [illegible] । [illegible] । [illegible]
कपिताक्तिंतालिः ॥१२॥ राजत [illegible] । [illegible] ।
संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पतौ राजति [illegible] ॥१३॥ [illegible]
स्य सूर्यं । सिंही [illegible] च [illegible] । [illegible] ।
[illegible] प्रसिद्धं ॥१४॥ [illegible] । [illegible] ।
पतौ दया [illegible] । [illegible] ॥१५॥ [illegible]

शुद्ध वंशो। धारे चकं तृप्ति युतो विशेषात्। स्वयं हतारातिं वसुन्धरा स्वां परिग्रहात्म द्वहुता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः। स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः। वहंति भक्तिं स्व कुटुंबलोका। अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्मं। सुरेष यद्वन्मघवा विभाति। यथैव तेजस्विषु चंड रोचिः। न्यायानुयायि ष्विव राम-चन्द्र। स्तथाधुना हिन्दुषु भूधवोयं ॥१९॥ द्रव्यं जिनार्चोचित कुंकमादि दीपाय मा आद्यममारि घोषं। आचामतोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना पुत्र वित्ताहरणं न चौरी नन्या समोपो न च मद्य पानं। नाखेटको नान्य वधा निषेव। स्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्दधानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो गजसिंह नामा। गत्या गजोऽतीव बलन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री ओसवालान्वय वार्द्धिचन्द्रः। प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः। विज्ञ प्रगेयो षितवाल गोत्रः पणेष्वपिस्वेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासी नगरांतरेच। प्रायः प्रभूतैर्द्र-विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदीश सेवा। हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां युग्मं। विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां। करे पुरे योधपुराभिधाने। दत्तं प्रमाणावरवया जगाख्यः सएप तुर्यं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमोदः पुण्यात्मनां पुण्य सहाय भावात्। विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो। नाथा भिधो नाथ समाप्त मानः ॥२६॥ तस्योज्वलस्फार विशाल शीला। भार्या भवद् गूजर दे सुनामा। रुपेण वर्या गृह भार धुर्या। श्री देव गुर्वोः परिचर्यं चार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व दिगेव सूर्य। मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः। वज्रांकुरं रोहण भूमि केव। न्नापाभिधानं सुत राज रत्न ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः। लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विश्वक। तदर्थिनोभ्येपि समर्ज्जयंतु। गुणान्सपुण्यान्वियुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्याभीन्नवलादे। धनिता अनितार सार रूप गुणा। शीलालंकृत रम्या गम्या नापाह्वये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोहामृता-भिधश्च। सुधर्म्म सिंहाप्युदयाभिधोपि। सादूल नामेति च संति पंच। तयोस्तनूजा इय दाहु कुन्त्यांः ॥३१॥ आसा भिधानस्य बभूव भार्या सरूप देवीति तयोः सुतौ द्वौ।

नयोरमुद्गांदिम वीर दासौ। [illegible] ॥३३॥ [illegible]
सद्मितस्य। मृगे पणाऽस्मिल्लक देशिप्पाना। सुना [illegible]
पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा सुदृं [illegible] शिप्याना। [illegible]
कुटुंयिनी साउळ रंगदेयी। प्रिया [illegible] सद्मितस्य ॥३४॥ [illegible]
श्चोज्जयंत शत्रुंजये प्रकृत यात्रां। [illegible]
पाकृपः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च [illegible]
पद। कला १६६४ मितवर्दे चकार पुनः ॥३६॥ [illegible]
गते फाल्गुन शुक्र पक्षे। नी दुंपनी स्वौ [illegible] ॥
दानं च शीलं च तपोपकार। [illegible]
मुक्ये। यथाहिलोके गुरु पुष्प पूर्णा ॥३८॥ [illegible]
जिलायाः [illegible] ॥ [illegible] १६६५ [illegible]
स्तेनहि मूल मंडपः ॥३८॥ चतुष्किके द्वे अपि पार्श्वयो र्द्वयो। [illegible]
शुभे। पित्रोवंशः कीर्त्ति कार्य इव स्वयोः। [illegible]
यादि मत्त गज केसरी। कपट पंजर [illegible] ॥
[illegible] हरिवंशनेदरी ॥४१॥ [illegible] ॥
विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राट। विजयते जय [illegible] ॥
[illegible] विजयते विजय [illegible] ॥
[illegible] ॥४३॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥४४॥ [illegible]
[illegible] ॥४५॥

सेवाड़ी ।

मारवाड़के गोड़वाड़ इलाकेके वाली जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीर जी का मंदिर ।

(875)

ॐ ॥ सं॰ ११६७ चैत्र सु॰ ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक राज युवराज्ये । समी पाटीय चैत्ये जगती श्री धर्म्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं । महा साहणिय पूअवि - - - पौत्रेण ऊशिम राज पुत्रेण उप्पल राकेन । मां गढ आंवल ॥ वि॰ सल खण जोगरादि कुटु'ब समं । पद्रांडा ग्रामे तथा मेद्र'चा ग्रामे तथा छेछड़िया मद्दड़ी ग्रामे ॥ अरहट अरहट प्रति दत्तः जव हारक: ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते स्मदीय धर्म्म भागयाः सदा भविष्यंति । इति मत्वा प्रतिपालनीयं । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ॥१॥छ॥

(876)

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परितोपकारिणी शांतिः । विबुध पति विनुत चरण: स शांति नामा जिनो जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाढ्यः श्री मदण हिल भूपतिः । येन प्रचंड दोर्द्दंड पराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति सद्गृहः । जिन्द राजाभिधो राजा सत्यस शौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत्त नूजस्ततो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः । अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूभृतां वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले । जज्ञे स त्याग सौभाग्य विख्यातः पुन्य विस्मितः ॥५॥ तद्भुक्ती पत्तनं रम्यं शमी पाटी ति नामकं । तत्त्रास्ति वीर नाथस्य चैत्यं स्वर्ग्गं समोपमं ॥६॥ इतश्चासीद् विशुद्धात्मां

यशोदेवो बलाधिपः। राज्ञां महाजनस्यापि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री षंडेरक गच्छे बंधूनां सुहृदां सतां। नित्योपकुर्व्वता येन न श्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः। विश्व कर्म्मेव सर्व्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः ॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म्म परायणः। उत्पन्नः बल्लको राज्ञः प्रसाद गुण मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्ध्यान संयुतः। श्री मत्कटुक राजेन यस्य दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येत्र्यंबक संप्राप्तो वितीर्ण्णं प्रति वर्षकं। द्रम्माष्टक प्रमाणेन बल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजार्थं शांति नाथस्य यशोदेवस्य खत्तके। प्रवर्त्तयतु चंद्रार्कं यावदादनमुज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाद्यां जिनालये। कारितं शांति नाथस्य विंबं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्म्मेण लिप्यते राजा पृथ्वीं भुनक्ति यो सदा। ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

(877)

ॐ ॥ संवत् ११९८ असोज वदि १३ रवौ अरिष्ट नेमि पूर्व्व दिसायां लपथरिका अग्रे भित्ति द्वार पत्रे वर्तुलजाते कर्त्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं पं० अश्वदेवेन।

(878)

सं० १२४४ आसाढ वदि ९ रवौ श्री संभव देव फागुण सुदि ८ चवण - - - तर - - पधर - - - ॥ - - - - सुदि १४ जंतो - - - हेकर जिस देव ॥ - - - सुदि १५ गिरधार - - - - हेतु श्री वहेव ॥ - - - कार्त्तिक वदि ५ माणु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि ५ रवौ - - - ण शांवव ॥

(879)

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्त्तिक वदि १ रवौ जय घारसा नालिकेर ध्वजा स्वार्द्धी मूल्यं

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्त्तिं पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः। प्रदत्तात् बलाः ५ मास पाटकेने चके व्ययनीयाः ॥छ॥

(८८०)

॥ ॐ ॥ संवत् १२९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ थासहड़ वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि थांदा सुत नाना ----देव सघीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव सायूदेव पूसदेव सुत घण देव सहड़ भार्या शील पुत्रिका साजणि जाल्ह सती रण भार्या राहीअर्ह ----सेहड़ भार्या अह्लहव सूमदेव भार्या मदावति सावदेव भार्या प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़ेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेद्र पुत्रिका देह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के पाली जिलेमें है।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(८८१)

श्री पंडेरक चैत्ये पंडित। जिन चन्द्रेण गोष्टियुतेन धीमता देव नाग गुरो मूर्त्ति कारिता थिरपाल मुक्ति वांछता सं० ११९९ वैशाख वदि-- ।

(८८२)

सं० १२-- वर्षे फागुण सुदि ११ गुरौ अद्येह श्री पंडेरक निवासी श्रेष्टि गुणपाल पुत्रीकाया गो---सा--सुखमिणि नामिकाया। श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका कारापिता ।

(३६३)

ॐ ॥ संवत १२२१ माघ वदि २ शुक्रे अद्येह श्री केल्हण देव विजय राज्ये । तस्य मातृ राज्ञी श्री आनलन देव्या श्री पंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि १३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्यांः हाएल एकः प्रदत्तः । तथा राष्ट्रकूट पातू केल्हण तद्भ्रातृज उत्तमसीह सूद्रग काल्हण आहड आसल अणतिगा-दिभिः तला राज्ञाव्ययस ? गटसरकात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री पंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा आमियपाल जिसहड-देल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्यांः हाएल एक १ प्र - - - -

(४४४)

सम्वत् १२३६ कार्त्तिक वदि २ बुधे अद्येह श्री नडूले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जाल्हण देवि भुक्तौ श्री पंडेरक देव श्री पार्श्वनाथ प्रतापतः थांथा सुत राल्हाकेन भ्रा भ्रातृ पाल्हा पुत्र सोढा सुभकर रामदेव धरणि यशोहीप वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगडा ? रासां धीरण हरिचन्द्र वर देवादिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थं विदित निज गृहं प्रदत्तः ॥ राल्हाग ... मानुषे वसद्भिः वर्ष प्रति द्रा० एला १ प्रदेया । शेष जनानां वसतां साधुभिः गोष्ठिके सारा कार्य्या ॥ संवत १२६६ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ शनी जीर्ण मातृ धारमति पुनः स्तंभको उधृत । थांथा सुत राल्हा पाल्हाभ्यां मातृ पद श्री निमित्त स्तंभको प्रदत्तः ।

नाना

मारवाड़के गोढ़ी जिलेमें यह ग्राम है ।

(३४५)

[illegible] १२०२ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महंत मुनिसिं. [illegible] ॥

(886)

संवत १२२९ माह बदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोढ ज्ञा० ठ० रतन ठ० अर्जुन ठ० सिहणा पुत्र मोल्द देव श्रेयसे भ्रातृ टाहाकेन श्री पार्श्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उद० देव सूरिभिः।

(887)

सं० १५०५ वर्षे माह बदि ९ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर बिंबं प्र० श्री शांति सूरिभिः - - - - पभ ण जिन - - - भवतं

(888)

सं० १५०६ वर्षे माघ वदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

(889)

सं १५०६ वर्षे माघ बदि १० गुरौ गोत्र वेलहस ऊ० ज्ञातीय सा० रतन भार्या रतना दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः।

(890)

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत्सरे नृप विक्रमादित समयात संवत १६५९ भाद्रपद मासा शुक्ल पक्षे ७ सातमी तिथौ शनिवारे। श्री वैद्य गोत्रे। श्री सविया किणगोत्रजा। मंत्रीश्वर त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० चेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १ चाइमल २ बीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागत सिवाणे साको करी मूउ। पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिंघा ४ सहसा ५ मुहता श्री नारायण नु राणा श्री अमर सिंघ श्री मया करेने गांव नाणो दीयो मुहतो नाराइण अरहट १ साइमल देव श्री महावीर नु सतर भेद पूजा सारु केसर दीयेल सारु दीयो

हींदूनां थरोस। उत्थापे तियेनु गाईरो--सुंस। तुरक उत्थापे तियेनं सुगरी सूंस
वले -----को उथाप जो ---गांव नागारो पड़ियो गांव धीयलाणी--धी-भि-पु
इ जाएन - गांव - दम १ चेटियो ----तको उथाप जो। वीजोको उथापणी सिफनु
गदहउ गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे तत्पुत्र मु० श्री राज-- जणमल ---
दा पुत्री जपमी ----नाराइण विजो भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री ---
गच्छे भट्टारक श्री सिद्ध सूरि विद्यमाने ---। ० श्री ----चंद शिष्य पांचा लिखितं।
ए ---जको ---सिणु ----।

लालराई।

मारवाड़के बाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन सुंदर जैन मंदिरमें
यह लेख है।

(८०१)

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय
पाल तस्मिन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवड़ा पड़ि देह थसो सू० आसधर समस्त सीर
सहितैः खाड़ि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्तं श्री शांति नाथ देवस्य
दत्ता पुण्याय यः कोपि लुप्यते स पापो न छिप्यतेमंगल भवतू॥ तथा भड़िया उत्त
अरहट्टे आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हारोपु १ गूजर तृयात्रांहि श्रीशांतिनाथ
पुण्यार्थं ॥ १ ॥

(८०२)

ॐ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ वदि १३ गुरौ अद्येह श्री नडूले महाराजाधिराज श्री
केल्हण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्ति पाल देव पुत्रे सिनाणकं भोक्ता राज पुत्र लाखण

पाल्ह राज पुत्र अन्नय पाल राज्ञी श्री महियल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा निमित्तं भढ़िया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल समक्षि एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - -द्रगण - - - सो० देवलपे० समीपाटीय - - - पाजून आम्र - - - समक्ष आदान - - - - मितस्य २ त - - - हत्या पातकेन लि - - - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२९९ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण चन्द्रोपाध्यायैः रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्येह समीपाट्टी । मंडपिकायां भां पाहट उभां वां । पयरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाम्रचयं ? वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चतु विंशति । द्रम्माः वर्षं वर्षं प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं शुभं भवतु ॥

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्टिको नाग श्र। श्रे -- त्नर सोहेन सप पक्षे द्रम द० उमर्ग द्र ३१ समीपाटी मडपिकायां व्याप्टपृय माण पंच कुलेन वर्ष वर्षं प्रति आचंद्रार्क -- यावत् दातव्याः । शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो वीतरागाय संवद् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने महेड़ा ग्रामे महादपाल लखारावा कर्म सीहपा ----।

माताजीके मंदिरके स्तम्भ पर।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो वीत रागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ९ शुक्र दिने नरदीह श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पंत सिंह देव राज्येस्र संनियुक्त श्री ॥ श्री करणे महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पठया ॥ समी तढ पश्चिम्य मंडपिकायां साधू० हेमाकेन ज्ञाद्वि हाथीउड़ी ग्रामे श्री महावीर देव नेवार्थ वर्षं प्रति दत्तां -- द्र २४ चउवीसि द्रंमा० प्रदत्ता शुभं भवतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि। जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ कपूर विजय लिषतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर।

(898)

--- ॥ विरक्ते - पजे रक्षा वस्या जवसनयः। परिभ्रानस्तु ना -- पदानं नसायना जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना जिनान समके वत्पाद् पदुर्मानमुख प्रिंना नंनय मघुन

शेखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात्। प्राये कान्तश्मिगुणं दधाती शक्रस्य मुक्तद्रुमां कस्य स्योदगुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ -- क्त -- नासत्करोलोव शोभितः। सुरोश्वर -- ली मूर्द्धि कृतो महीभृतां ॥३॥ अभि यिम्बद्रपि कातां बायिग्रौ चतुराननः हरिवर्म्मा वभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज स्फुरदनं युद बाल दिवाकरः। रिपु वधूवदनेन्दु हत द्युतिः समुदपादि विदग्ध नृप-स्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर वचनैर्वासुदेवाभिधाने र्बोधं नीतो दिनकर करैर्नीर जन्मा करो व। पूर्व्वं जैनं निजमिव यशो कारयद्धस्तिकुण्ड्यां रम्यं हर्म्म्यं गुरु हिम गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय। भागद्वयं व्यतीर्यत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्मादभूच्छुद्ध सत्त्वो मंमटाख्यो महीपतिः। समुद्र विजयी श्लाघ्य तरवारिः सदूर्म्मिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन जनित लोचनानंदः। धवलो वसुधा व्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भंक्त्वाघाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज राजे। श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूर्ज्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणेयः सुरणां बभूव ॥१०॥ श्री मद्दुर्लभ राज भूभुजि भजैर्भंजत्य भंगां भुवं दंडैर्भण्डन शौंड चंड सुभटै स्तस्याभिभूत विभुः। यो दैत्यांरव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेंद्रं पुरा सेनानीरिव नीति पौरुष परो नैषोत्परां निर्वृतिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु वलः श्री मूल राजो नृपो दर्प्पांधो धरणी वराह नृपतिं यद्वद् द्विपः पादपं। आयातं भुविकां दिशो कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायामिव रूढ मूढ महिमा कोलो मही मण्डलं ॥१२॥ इत्यं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा --- सुस्थितैराश्रियमीयः। पाथो नाथो वा विपक्षास्त्वपक्षां रक्षा कांक्षे रक्षणे बद्ध कक्षाः ॥१३॥ दिवाकरस्येव करैः कठोरैः करालिता भूर कदम्बकस्य। अभ्रि श्रियं ताप हृतोरुताप यम्मन्मतं पादप वज्र नीचा ॥१४॥ धनुर्द्धर शिरोमणे रमल धर्म्मंमभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुरुरमुष्य पारंदरं। समीयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्ग्गणानां गणाः स्वतां चरितमद्भुतं सकलमेव

[illegible]
लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदीर्ण्णं विपुर्विशेषान् [illegible] [illegible] शिरो-
रजांसि। तेजोभिरूर्जित मनेन विनिर्जित [illegible] [illegible] [illegible] भूपैर्बभ-
भूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् ध - लनां दधौ। अनन्योढ़ार्व [illegible] [illegible] [illegible]
सोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धोदनिः शुद्धया। [illegible] [illegible] [illegible]
वचसा धर्म्मेण धर्म्मात्मजः। प्राणेन प्रलाय निलो यत्नभिदो मंत्रेण मंत्री [illegible] [illegible]
प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये धाल प्रसाद [illegible]
त्परिणतवया निःसंगो यो बभूत सुधीः स्वयं। कृत युग कृतं कृत्या कृत्यं [illegible] [illegible]
ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि [illegible] [illegible]
लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं। पार्थादि पार्थिव गुणान् गणयन्तु [illegible] [illegible]-
द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचरयंति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका [illegible]।
वाचस्पते र्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत्पूर्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो [illegible] [illegible]
कुण्डिका अलका धनदस्येव धनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हरहास हिमांशु [illegible]
[illegible]त्कार वारि भुवि राज विनिर्झराणां। वात्सल्य भव्य जन चित्त [illegible] [illegible]
संपद पहार परं परेषां ॥२३॥ धौत कल धौत कलशाभिराम रामास्तना [illegible] [illegible]। [illegible]
परेभ्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना [illegible] [illegible]
दृशां संदृश्यंते दृशस्तरलाः परं। मलिनित मुखा यत्रोद्वृत्ताः परं [illegible] [illegible] [illegible]
रचना नीवी वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ [illegible] सार्द्रं [illegible] [illegible]
कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्ण्णानि प्रकामं वहं घन जघनैर्द्धवना नंदिनानि। [illegible] [illegible]
शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्र्या जन [illegible] [illegible]
सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पर्व्वाणो हृद्यरूपा रसाधिकाः। यत्रेक्षु [illegible] [illegible]
[illegible]त्क्षाद्विदेलिमाः ॥२७॥ तस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुणभिर्गौरवाढ्यो गुणौघैः [illegible]
त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्त्तिः। नाम्ना श्री शांति [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] समानो कामं कामं समर्या जनित जनमनः संनदा [illegible] [illegible] ॥२८॥ [illegible]
मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः। [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] ॥२९॥

मोद्यत्पद्ममाकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरेः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रुचि वासुदेवाभिधस्य। अभ्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्म्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण संग्रहः। अभग्न मार्ग्गणेच्छस्य चित्रं निर्व्वाण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्व्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्व्विधः। इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं घन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-निलांदोलितं। गरिष्ठ गुण गोष्ठ्यदः समुदर्दी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ कृन्मंदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं। इदं मुख मिवा भाति भास मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन चाहृहनिकं शुभ मुक्ति करोटक युक्त मिदम्। बहु भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन गृहेति जीर्ण्णे पुनः समं कृत समुद्धतावथिह भवांबुधिरात्मनः। अतिष्टिपत सोप्यथ प्रथम तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्ति मिव मूर्त्ततामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्ये स्त्रि-पंचाशे सहस्रे शरदा मियं। माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्ददी सुदान मवदान धारिदम पोपलन्नाद्भुतं। यतो धवल भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघट्टमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष शिरस्थ मेक रजतस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पाताला तुल मंडपा मल तुलामा लंबते भूतलं। तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व्व धीर ध्वनिर्ब्रह्मन्यत्र धिनोतु धार्मिक धियः सद्रूप वेला विधौ ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-सत्तद्धिता ख्यात नामा। सूक्ताढ्या रुचिर विरतिद्गुं यमाधूर्यवर्या सूर्याचार्यै र्व्यरचि रमणी वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्वत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक जिन्दज सशम्म पूरभद्रः नागपोचिस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म्म क्षयार्थं स्व संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपार्जित वित्तेन कारितः ॥ॐ॥ परवादि दर्प्प मथनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्ण्णं। भव्य जन दुरित शमनं जिनेंद्र वर शासनं जयति ॥१॥ आसीद्वी वन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वलो विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्तमांगार्च्चितः। योपित्पीन पयोधरांतर सुताभिष्यङ्ग नन्दालिभी यः श्री मान्हरि धर्म्म उत्तम मणिः सद्वंश हारे गुरी ॥२॥ तस्माद्बभूव भुवि भूरि गुणोपपेतो भूप प्रभूत मुकुटार्च्चित पाद पीठः। श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मम्मिदृदेव नृपतिः प्रकट प्रतापः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तेः परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः। येनास्मिन्विज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्या पुनः पाल्यते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यं विदग्ध नृप पूर्व्विमं समभ्यर्च्य। आचंद्रार्क्कं यावद्दत्तं भवते मया प्रपाल्यते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां चैत्य गृहं जन मनोहरं भक्त्या। श्री मद्बलभद्र गुरोर्यद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ सकल-लोकान्समाहूय नाना देश समागतान। आचंद्रार्क्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्षयं ॥७॥ रूपक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवहणानां। धर्म्म - - - - क्रय विक्रयेन तथा ॥८॥ संभृत गंड्या देयस्तया वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्टः। घाणे घटे च कर्षो देयः सर्व्वेण परिपा-ट्या ॥९॥ श्री भद्दलोक दत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका। पेल्लक पेल्लक मेकद्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्त्ति क - - - प्रवर घट भाण्डा-ढकं तु गोधूम यव पूर्ण ॥११॥ पेल्लुा च पंच पलिका धर्म्मस्य विंशोपक स्तथा भारे। शासन मेतत्पूर्व्वं विदग्धेन राजेन संदत्तं ॥१२॥ कर्प्पासकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि सर्व्व भांडस्य। दश दश पलानि भारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आदानादि समस्याद्भाग द्वय मर्हतः कृतं गुरुणा। शेपस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहित॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र पौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च। गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते दाने फलं दानात्पालिते पालनात्फलं। भक्षिते पेक्षिते पापं गुरु देव धनेस्थिरं ॥१६॥ गोधूम मुद्ग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य। द्रोणम् प्रति माणकमेकं मत्र सर्व्वेण दातव्यं ॥१७॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे। श्री मद्बलभद्र गुरोर्व्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवती समधिकेषु माघस्य कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि भानु भरतं भागीरथी

भारती भास्वद्भानि भुजङ्ग राज भवनं भ्राजद् भवांभोदयः। तिष्ठन्त्यत्र सुरासुरेंद्र महितं जैनं च सच्छासनं श्री मत्केशव सूरि सन्तति कृते तावत्प्रभूयादिदम् ॥२१॥ इदम् चाक्षय धर्म्म साधनम् शासनम् श्री विदग्ध राजेन दत्तं ॥ सम्वत ९७३ श्री मंमट राजेन समर्पितम् सम्वत् ९९६ ॥ सूत्रधारोद् भव शत योगेश्वरेण उत्कीर्ण्णे यम् प्रशस्तिरीति।

जालोर।

मारवाड़का यह भी बहुत प्राचीन स्थान है। इसका प्राचीन नाम जावालीपुर था।

तोपखाना।

(899)

---।----त्रैलक्य लक्ष्मी विपुल कुलगृहं धर्मवृक्षालवालं। श्री मन्नाभेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु। मन्ये मंगल्य माला प्रणत भव भृतां सिद्धि सोध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विलसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान कुलांबर मृगांक श्री महाराज अणहिला न्वयोद्भव श्री महाराज आल्हण सुत ----यावली दुर्ललित दलित रिपुबल श्री महाराजकीर्तिपाल देव हृदयानंदिनंदन महाराज श्री समर सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तत पाद पद्मोपजीविनि निज प्रौढि मातिरेक-तिरस्कृत सकल पीलशाहिका मंडल तस्कर व्यतिकरे। राज्यचिंतके जोजल राजपुत्रे इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने। रिपुकुलकमलेंदुःपुण्यलावण्यपात्रं नय विनय निधानं धाम सौंदर्य लक्ष्म्याः। धरणि तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्ष्मा पतिः सिंह वृत्तिः ॥२ तथा॥ औत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भूप भवनोचित कार्य वृत्तिः। यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाह्वो ----खंडित दुरत विपक्ष दलः ॥३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधु-करेण समस्त गोष्टिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषण श्रेष्ठि यशोदेव सुतेन सदाज्ञाकारि निज-तृयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरथेन श्रेष्ठि यशोवीर

परम श्रावकेण संवत् १२३९ वैशाख सुदि ५ गुरौ सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमण परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ यथा हि ॥ नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पुंसवर्गै र्मुहु र्वस्ये -- -- पाय लोकन परैर्नो तृप्तिमासाद्यते । स्मारं स्मारमयो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं सोत्कंठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतल्लीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः । दत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गांभीर्येण पातालं --- ण महीतलं । तुंगत्वेन नभो येन व्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्जद्व्योमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेषाढ्य सकुलीरसिंह मिथुन प्रोद्यद्वृषालंकृतं । ताराकैरवमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नंद्यादसौ मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संघाय ॥

(४००)

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढस्योपरि प्रभु श्री हेम सूरि प्रबोधित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चौलुक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमार पाल देव कारिते श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल बिंब सहित श्री कुवर विहाराभिधाने जैन चैत्ये । सद्विधि प्रवर्त्तनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्रार्कं समर्प्पिते ॥ सं० १२४२ वर्षे एतद्देशाधिप चाहमान कुल तिलक महाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां० यशोवीरेण समुद्धृते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवा चार्य शिष्यैः श्री पूर्ण देवाचार्यैः । सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मूल शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पंन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामचंद्राचार्यैः सुवर्णमय कलशारोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

(900)

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देल्हा सलक्षण झांपाख्याः झांबा पुत्रो बीजाकस्तेन देवड़ सहितेन पितृक्कां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय श्री महावीर जिन चैत्ये करोटि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

(901)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज श्री चंदन विहारे श्री क्षीं व रायेश्वर स्थान पतिना भट्टारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात् मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेचनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(902)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महामात्यः श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महाराज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री मद्धनेश्वर सूरी तैलं गृह गोत्रोद्भ भवेन महं नरपतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव भांडागारे द्रम्माणां शतार्द्धं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्मार्द्धेन नैचकं मासं प्रति करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(903)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्ण्ण गिरौ अद्येह महाराज कुल श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हड़देव राज्य धुरामुद्वहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंबड़ पुत्र ठकुर जस पुत्र सोनी महणसीह भार्या माल्हणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी माल्हण गजसीह तिहुणा पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

पाल सुहडपाल द्वितीय भार्या जाल्हण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन भार्या नायक देवि श्रेयोर्थं देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी यति निमित्त निश्रा निक्षेप हट्टमेकं मरयासिमा दत्तं सत भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षं आचंद्रार्कं पंचमी यतिः कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(९०४)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अद्येह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पट्टे श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये······मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उसवाल ज्ञातीय सा० जेसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुखा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि महादुर्गो परिसिन्ध श्री मग कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल श्री वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नइणसी सुन्दरदास आस करण लघु भार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालदि -- पुत्र पौत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर बिंब श्री प्र महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहितानायकाचार्य विधिविधा-चार कारक साधु क्रियोद्धार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पट्ट प्रभाकर श्री विजय दान सूरि पट्ट शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातसाह श्री अकबर प्रतिबोधक तद्दत्त जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक अमारि अमारि प्रवर्त्तक भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरि पट्ट मुकुटायमान भ० श्री ६ विजय सेन सूरि पट्टे संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शिरोमणि भट्टा-रक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारितम् ॥

(905)

संवत् १६८३ आषाढ़ वदि गुरौ श्रवण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महणोत गोत्र दीपक सं अचला पुत्र सं जेसा भार्या जेवंत दे पु० सं श्री जयमल्ला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय सुहागदे पुत्र नयण[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का[illegible] प्र[illegible] श्री [illegible] [illegible] भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय सेन – – –।

(906)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ सूत्रधार उद्धारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा। दूहा हांराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः॥

(907)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ। महणोत्र गोत्र। प्र० जमल भार्या सरूपदे समर्पित। श्री सुपार्श्व बिंबं। प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० – –।

(908)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित बिंब प्र० त० भ० श्री विजय देव सूरिभिः॥

(909)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय प्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः॥ श्रीरस्तु:॥

(९१०)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरौ ध० ठक्कंक श्री माल चिम्र सा० विजयदेव सूरिभिः।

(९११)

चौमुखजी का मन्दिर।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरौ श्री श्री मालगोत्र। गोत्र सा० खेमा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणां आदेशेन ... सागर गणिना।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है।

(९१२)

संवत् १२३१ मार्गा सुदि ८ प्र० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आरम श्री पार्श्व प्रद०॥

(९१३)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-आ० श्री मुनिशेखर शिष्य दया ... श्री ... त्कया केकृत॥

(९१४)

संवत् १५२७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने सा० श्री ... म० ... -

(915)

श्री श्रीले सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृष्टा वीर देशिते। महिमा कीर्ति लेखा स्या। तस्य देवेषु दुर्लभा ॥

(916)

-- श्री पज्जु वधू असोचय -- वहुया भज्जा सुहंकर वणिस्स। सो भन सरावि-याए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

---- चंदण वाल नासा --- पा मति सिरी सा -- पी -- लगा कारिता

जूना।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री २ करणे मं० चीरासेल वेलाउल भां० मिगल प्रभृतयो धर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा। श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभयादीप ऊर्द्धं सार्थं प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला। पक्षे भीम प्रिय द्रम्मविंशोपक अर्द्धार्द्धेन ग्रहीतव्याः। ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

जूना वेडा (मारवाड)

(९१९)

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ भ्र पतेरं प्रदेश्यास्तु नूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण वज्र मानाद्यै मिलित्वा सर्व बांधवैः ॥ १ ॥ खल्लके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सूरे प्रद्योतनाचस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा भूपिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(९२०)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उकेस ज्ञातीय वापणी गोत्रे मंघर्षा श्रीकु भार्या दीइम दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंद्रा श्री रादुलिया भार्या मन भगोदे पुत्र भोजा भा० ना - - - - श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित तपा गच्छ भट्टारक श्री श्री हीर विज - - - ।

(९२१)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री ऊकेश गोत्रे श्री विद्दा पार्श्व संताने श्रे० वेल्हू भा० देमलतत्पुत्र श्रे० जन सोहेन सकुटुम्बेन आत्म श्रेयसे पार्श्वनाथ बिंब कारित प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(९२२)

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवौ प्र० ग० दोला राजू पु० पेथा भा० मिमलदे पु० डूगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री महाहड़ीय गच्छे श्री मद कीर्त्ति सूरि शि० माणहेणक्लू ग्रामे वास्तव्य ।

(923)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलंकी बाघणे सागासाहा भी दा भा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरसी श्री कुंथुनाथ बिंबं श्री हीर

(924)

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति व्य० चाहड भार्या राणी पु० व्य० वेला प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः धुंपरा ग्रामे

(925)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ बिंबं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

(926)

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढ़ा गोत्र सा० झांझू भा० कपूरी सुत सा० वीरपालेन भा० गांगी पुत्र पनवंत कर्मसी भातृ दिल्हादि युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

(927)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथौ डूंडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय। मं० श्री। टहुआ सुत मं० जसा मं श्री रामा महा साधेन भार्या रंगा। दम० कटुआ

(२२७)

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । श्री तपागच्छे युगप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि दशमी दिन ॥

(२२८)

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ८ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रमनादे पु० आका भा० परमीदे पु० हराजावह मेरादि साहि लिखी मति मसं श्री वास पूज्य बिंबं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(२२९)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

(२३०)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहड़ा गोत्रे - - - - शांतिनाथ - - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजय सूरि ।

नगर गांव (मारवाड)

(२३१)

संवत् १५१६ वर्षे पौष वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राउल राज्ये श्री गोविंद चंद्र पुत्र श्री श्री वच रसलछ नरेश्वरेण बांधव सामंत कल्हा पुत्र इलच सुत सपरिवारेण गोत्र पाट्टे भरतार भाटी महिप पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० गोदराज गणि उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र धावड मंडाही पुत्र नागहा मं० आसा मं० दे० लट प्रमुख श्री संघ समु मसं पटहो वाद्यमानो चिरं जयतात् शुभं भवतु मारुदेव श्रुतं ॥

सांचोर (मारवाड)

(932)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी पाल्हा सुत छोपाकेन वृद्ध भ्रातृ भ० साम वधू चाचकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

रत्नपुर ।

मारवाड़के जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

(933)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० बला० नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रि- कया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(934)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया बला० नागू पुत्रिकया संतोष परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(935)

ॐ ॥ संवत १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पौष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माधव

(२२९)

सुत महं मदन सुत महं धीणा । श्री कुमरसिंह सुत महं [illegible] प्रभृति पंच कुलेन श्री पार्श्वनाथः देव प्रतिबद्ध श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री [illegible] सूरि शिष्य श्री अजित देव सूरीणा मुपदेशेन हट्ट द्वय भूमिः प्रदत्ता [illegible] ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ।

([illegible])

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्न पुरे महाराज कुल श्री [illegible] सिंह । कल्याण विजइ राज्ये तन्नियुक्त महं० कदुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ प्रतिबद्ध महा महणा श्रे० सांता मह० विजयपाल गो० लषण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां विदितं अक्षराणि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर ज्ञातीय ठ० राजा सुत धांधा गांगा सुत मंडलिक मदन प्रभृति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति बद्ध [illegible] द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हट्टात् द्वितीय हट्ट श्रे० गांगा श्रेयार्थं धांधा [illegible] देव कुलिका बिंब पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकै । प्रदिप्तं हट्ट समर्पितं । [illegible] निकट प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री [illegible] शत मेकं प्रदत्तं । हट्ट मिदं चतुर्भि गोष्ठिकैः संमिलनं कृत्वा [illegible] स्वात्मीय परिणा [illegible] कांथ विसैः भाड़ुके हट्टं [illegible] सत्क उत्तपत्ति व्यय कर्ण चाणगोष्ठिकान् विना पुत्रादिकैः न कर्तव्या । [illegible] देव कुलिकाया विधानां नैत्यकप देयं० द्र २। [illegible] हट्टे पतित द्रुसित पड़े कमठाय कारापनीया । [illegible] कल्याणक दिने देव कुलिकाया बिंब भोग करणीय । [illegible] नाठि कार्यां धर्म । [illegible] गोष्ठिकै [illegible] महणा मतं [illegible] सांता मतं [illegible] विजय पाल मतं । गोष्ठिक लषणा मतं ॥ स

बिलाड़ा (मारवाड़)

(937)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अभयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जी विजय राज्ये वृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे। भट्टारक श्री जिन कीर्त्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति। श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको श्रमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरख चन्दाभ्यां कृतः कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नायं श्री सुमतिनाथ जी देव श्री जातः – – – – द्रघर भीयन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रतापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव–श्री भवतु।

बोईया (मारवाड़)

(938)

संवत् १२५० आषाढ़ वदि १४ रवा मुद्दपट्ट वास्तव्य श्रावक सामण भार्या जिसवई सुत रोहड़ रामदेव प्रावदेव कुटुंब सहितेन राम्यदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्रा० २०।

(939)

ओं० संवत् १२५० आसाढ़ वदि १४ रवो महुविध वास्तव्य र० रोहिल सुत धांधल तत्सुत गुण धर साल्हणाभ्यां मातृ थिरम्मति श्र मार्थे स्तम्भ लता – – – – – द्रां० २० प्रदत्ता।

कोटार (गोड़वाड़)

(३१०)

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्येह समाण .... मउ ... ... या प्रा० इनउ .... पयरा महं मज्जन ठ० मह सा ... ठ पणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च कुलेन श्रीधात ... निधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्षं स्थितके द्रम द्र २४ अनुविंशति द्रम्मा: वर्षं वर्षं प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्या: ॥ पालनीया ... ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि: सगरादिभि: यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ।

(३११)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठि को सीहन षयपने द्रम्द्र १२१ - यद्र ३६ स - प - १ मुं श्रा - या स्वस्ति पमाण पञ्चु कुलेन वर्षं वर्षं प्रति - - - - या दातव्या: ॥

किराडू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दुओं के समय में इस स्थान का नाम किराट कूप था और जैनियों के प्रसिद्ध नृपति कुमार पाल ने इस स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कईएक बहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया था । काल के चक्र से इस समय उन देवालयों की बहुत बुरी हालत है और मन्दिर भी नष्ट हो गये हैं ।

(३१२)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गम्याय वेधसे । विश्वरूपाय शुद्धाय देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जगंति शंभोः स (ग) स्थम् कपाल

विधु (भस्म) विभूषणस्य । गर्वः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गौरी जितं स विर-वल्कल वपं दुर्गात् ॥२॥ अस्ति - - - - - - - भूपिते र्बुद भूधरे । सुरम्याः परमाराणां वंशो - - - नष्टं कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु घिराजो महाराज - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गोल मिलद्वैरि - - - - - प्रतापो ज्वलद्भूतलः ॥५॥ शंभुवद्भ भुवि भूमीशाभ्यर्च्यमीयो भ - - - -सुः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो रवण वैरिहं भवः ॥ - - - - ॥७॥ सिधु राज वरा धार धरणी धर धाम वान ॥ मा - - ॥८॥ जो भवत्त रमात् सुर राजो दुराशया देव राजेश्वर- - - - ॥९॥ - - - मपहाय मही मिमां । मन्ये कल्प द्रुमः प्रायाद् दृश्यक - - - ॥१०॥ - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि राजेंद्रो रंजितो - - - ॥११॥ - - - धंधुक - तः । येन दुर्वार वीर्येण भूपितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द त्रिभूषितः ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोछ्छ राजाख्यः स्य - - - स्व - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा दुदय राजाख्यो महाराज- - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्रासोढ़ गौड़ कर्णाट मालवोत्तर पश्चिमं । - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्रारभ्य सिंधु राज भूपालात्पित् पुत्र क्रमा-त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण मपि यो राज्य मुद्दध्रे भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - अतश्च नत्र गत वर्ष ११९८ १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा ज्जयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर राजेन सिंधु राजपुरोद्भवं । भूपो निर्व्याज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्धृतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश संख्येषु पंचाधिक शते १२०५ प्ब्द । कुमार पाल भूपालात् सम्प्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥ किराट कूप मात्मीयं शिव कूप समन्वितं । निजेन क्षत्र धर्म्मेण पालयामास यश्चिरं॥२२॥ अष्टा दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशकेऽश्विने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते दिनात् ॥ २३ ॥ दंड सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात् । सह पंच नगांश्चैवमय-त्रादिभिरप्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोट् नवसरो दुर्गौ सोमेश्वरो ग्रहीत् । उत्थांगयच्चा सादयां चक्रे चैवात्म सात्तौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः । पुनः

संस्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रशस्ति सकलो देवाँ नरसिंहो नृपाङ्गणात् । लेखको श्रय (णे] देवः सूत्र धारोस्तु जगोधरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१८ [illegible] सुदि १ गुरौ ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

सूंधा पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तर्फ पहाड़ीके ढलावमें सूंधा माता नामक चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं।

(३४८)

ओं ॥ श्वेतांभोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तटिन्या गवाक्षः किंवा [illegible] या महिम मुख महाछिद्र देवी गणस्य । त्रैलोक्यानंदहेतोः किमुदितममलं [illegible] नक्षत्र मुख्यैः शंभोर्भालस्थलेंदुः सुहृति कृतनुतिः पातु वो राज लक्ष्मीं ॥ १ ॥ [illegible] कादंबिनिरनुपमानंद संदोह मूला चंचद्दासोंबल दलनगी नृपम मोह पुष्पा । [illegible] यपयोदय मुफलिनी पार्व्वती प्रेम वल्ली लक्ष्मीं पुष्णातयनु दिन [illegible] नतानां ॥ २ ॥ विकट मुकुट माणरेजसा व्योम्नि दैत्यानिव भुवि [illegible] क्रमेण । अनणुरणित लीला हंसहैरस्त्रासवंशी फणि पति मुक्तां [illegible] ॥ ३ ॥ श्री मद्वत्समहर्षि हर्ष नयनो द्भूतांबु पूर प्रभा [illegible] रालंकार तिग्मद्युतिः । पृथ्वी त्रातु मपास्त दैन्य तिमिरः श्री [illegible] समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो भवत् ॥ ४ ॥ [illegible] तायां धर्मसंस्थान प्रकर करण प्राप्त पुण्योन्नतायां । श्री [illegible] लक्ष्मणो नाम राजा लक्ष्मीलीला सदन सदृशाकार शाकंभरीश: [illegible] समर जलधि मद्दो यस्य खड्गो [illegible] निर्म्मथ्योम्बुधेः सपदि कमलां लीलयोद्धृत्य [illegible]

॥ ६ ॥ तस्माद्धि माद्रि मथनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य तनूद्भवोथ । गां-
भीर्यधैर्य मदन श्रील राज देवो यो मूलराज बल भंगमथीकरत्तं ॥७॥ वाक्प्राउपाधा क रेणु
रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जह्रे यस्त्वङ्गी गंध हस्ती समर रस भरे विश्व शीलाय
माने । मुक्ता शुक्तींदु कांतोज्ज्वल रुचिषु पुसरकोपि रेवातटेषु प्रोद्दाने दीपचारो लवण
मूलकतति: पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तत्पितृव्य जनयाय बांधव: श्री महींदुर जनिष्ट
भूपति: । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायया विरहितं मुखं द्विषां ॥९॥ जज्ञे कांतस्तदनु
च भुवस्तत्तनुजो श्वपाल: काल: क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्ण चंद्रायमान: । य: संलग्नो न खलु
तमसा नैव दोषाकरात्मा तेजो मत्त: क्वचिदपि न य: किंच मित्रोदयेषु ॥१०॥ केयूराग्र
निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाडंबर व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मी: श्रिता ।
वीरेषु प्रसूनेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लब्धो पाययशापि निर्म्मल गुणैर्यस्या
प्रशस्या कृति: ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन स्रष्टा यस्य व्यधित
यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंभतश्चारु चेले मध्यस्यापि
ध्रुवमिव लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुज: सैन्य पूर मजय-
द्रणेषु य: । शंभुवत् त्रिपुर संजयं बलं वाडवानल इवांबुधे जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल
वसुमती मंडलस्तत्पितृव्य: श्रीमान् राजा समवद्य जितारातिमल्लो णहिल्ल: । भीम
क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्रे हृद्यायां भोनिधि रघु कृते वद्दे पंक्ति: खलानां
॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण
स्यापार पारगमा । पानानि प्रसन्नं शुभानि गिम्बरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य
नरेश्वरस्य तुलनां सेनांबु राशेर्दधो ॥ १५ ॥ उर्व्वीरुह् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दृष्ट्वा
दृग्गं च्यालास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायन: । भूस्फोटानि वनांतरेषु चित-
नान्या लोका हाहेति वाक् स्वस्मारा तपवारणानि शतशो यद्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥
पुत्र: किं नं चतुर्भुज: स समरे शाकंभरी यो बलाज्जग्राहानुजघान मालव पतेर्भोजस्य
साढाह्वयं । दंडाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च य: साक्षाद्विष्णुर साधनीय य-
शसा शृंगारिता येन भू: ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमक्ष्मा-

भूश्चरण युगली मर्द्दन स्याजनो यः । कुर्वन्पीडां नति [illegible] मोक्षदामाम [illegible]
राद्भूमी पति मपि तथा कृष्णदेवा भिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्णो जगदुत्तमं [illegible]
यारसा यानर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पत्रा यावा मगाउ लिर्ध । [illegible]
शस्यानुकारं च ते मल्लीनानि च कोकिलारव नुत्रां विभ्रो नु मापं [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
स्तस्याजनि नर पति धौ धयो जिंदुराजो यः संहेरेऽर्कं इव तिमिर वैरि [illegible] ।
यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विपः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा [illegible]
मध्या श्रितास्तत ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूरुहाणां प्रयाणे [illegible]
र्घनतति तुलां बिभ्रतीनामरण्ये । दूर्वां भ्रांतिं मरकत मणि [illegible]
भ्रममिव चिरं चक्रिरे पत्र रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पांचर नतिमान् यः [illegible]
णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद धवला न्यानंद हृद्याननः । [illegible]
पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येकोन निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य [illegible] ॥ २२ ॥
यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं स्रवंती पयः [illegible]
स्तृणी कुर्वती । धर्मं वत्समिव स्वकीय मनघं गुहिं नयंती मुदा [illegible]
भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री वीजको भूपतिरस्य [illegible] ।
श्वेतात पत्रेण विराजमानः [illegible] पुरोपि रेमे ॥ २४ ॥ [illegible]
केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पल्यंका भुवनं [illegible]
रि क्षितिपाल वाल ललनाः शैले घने निर्झरे [illegible]
श्रियं ॥ २५ ॥ श्री लाखा राज नामा समजनि वसुधा नायक [illegible]
लक्ष्माणां भुवि वहति हृतं धोहय क्षितिपराजः । [illegible]
मस्य [illegible] नैव शक्ता [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]
गिरि शिरः [illegible] किं सहस्रांशु बिंबं [illegible]
सुभग ताया उद्गता मंजरी किं [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]
र्णित्र शरीरः शीलसाराभिरामः [illegible]
सुताया मंदिरे [illegible] सूरिः ॥ २८ ॥ [illegible]

तड़ाग-कानन-हर्म्यप्रासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्म्ममे द्विज जनानंदी क्षमा मण्डले। धर्म्मस्थान शतानि यः किल बुध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शैल धवलं स्तोतुं यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः शुभ्रयां चंचन्मौक्तिक-भूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि। प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुभ्राणि वस्त्रोकयां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मीं श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रियं बृहद्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः॥ भिषग्वि जयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता। सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्ण्णा ॥

(344)

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छुभ्र प्रकर इव नम्रेषु नृपतां। प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तया तया या देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाह्वो जज्ञे भूमद्भुवन विदित श्चाहमानस्य वंशे। श्रीनड्डूले शिव भवन कृद्धर्म्म सर्वस्व वेत्ता यस्मा ह्यार्य्यं प्रति पद महो गूर्ज्जरेशा श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्साली तमाला गुरु स्फूर्ज्ज-च्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्र कम्रे गिरौ। सौराष्ट्रे कुटिलोग्र कण्टक भिदास्यद्दाम कीर्त्तिस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तया सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांसलस्यांगज इह नृपः केल्हणो वाल्लिणा शायोशोद्यद्विलिम नृपते मान हृत्सैन्य सिंधुः। निर्भि-न्नौर्च्चैः प्रबल कलितं च स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वस्तोरणं कांचनस्य ॥३४॥ भ्रातास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद्ध भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-वांबु वाहो पमः। यत्खड्गा बुनिधौ हतारि करिणां कुंभस्थलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो मराल ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥३५॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भित्वा शरैरासलं तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरं जित्वा रण प्रांगणे। श्री जावालि पुरे स्थितिं व्यरच्यच्च-डडुल राजेश्वर स्थिता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्तत्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः । इन्द्र इव विबुध [illegible]
पोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले त्रिनयनो येनेह पुण्यात्मना [illegible]
मनोज्ञ कोष्ठक ततिर्वंद्याधरी शीर्षवान् । किं शेषः फण पुंडरीकुर [illegible]
हारः किं भ्रमण भ्रमादुडु गणः किं येप भेजे स्थितिं ॥ ३८ ॥ कमल [illegible]
लि दंभान्निखिल विपुल देश श्री समा कर्षणाय । त्रिजग विजयि विष्णु [illegible]
वैरि क्षितिपति त्रिफला जिस्तोम संरूपा निर्मितं ॥ ३९ ॥ सोऽयमासाम यः [illegible]
त्मानं सोमपर्वणि । आराम रम्यं समरपुरं यः कृतवानय ॥ ४० ॥ [illegible]
भूपति पुत्रो जावालि पुरवरे चक्रे । श्री रुद्रल देवी शिव मन्दिर युगलं [illegible]
श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्य रमणीयः । श्री उदय सिंह भूपतिर [illegible]
दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नड्डूल-श्री जावालि पुर-माण्डव्यपुर-वाग्भट मेरु-सूराचन्द्र-
राटहृद-खेड—रामसैन्य श्री माल-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देशा नामय मधिपतिः
॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्रबन्ध रसना भारः समन्तात्स्फुरत् क्षीराब्धिः परिवर्त्तत् कुटुम्बभृत्
कल्लोल माला मिषात् । द्रष्टुं यानि निशानि-पंकज वनी श्रावली पत्रिकेय श्री
विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां कीर्तिं सितांशूज्ज्वलां ॥ ४४ ॥ [illegible]
यस्यां गर्भ प्रसूते स्म । श्री चाचिग देवात् नवीन चान्द्रराज्यमाग ॥ ४५ ॥ [illegible]
दात्तस्तुरुष्काधिपमद्दलतो गूर्जरेन्द्रेर जेयः सैन्याना सिंधु [illegible]
राजान्तको यः । प्रोट्टामन्याय हेतु र्भरत मुख महा ग्रन्थ तत्त्वार्थ वेत्ता श्री [illegible]
संज्ञे पुरि शिव सदन द्वंद्व कर्ता कृतज्ञः ॥ ४६ ॥ तस्याद्गोदय शैल [illegible]
क्रिया निष्णातः कलनीय रूप निलयो दानेश्वरः प्रभुः । [illegible]
सद्यः साक्षाद्विबेन्द्रः स्वयं श्री चाचिग देव एव जयति [illegible]
भ्रूभंगेन भयंकरेण विजित प्रत्यर्थि भूमी पतिः श्री चाचिगदेव [illegible]
दुरितं भुवं । द्वैजिह्व्य द्विरदस्य [illegible]
निचकः संघात सौख्यं पर ॥ ४८ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]

रत्नं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेशा दलनो यः शत्रु शल्य द्विषदृर्पंसर्पातुक पातनैकरसिकः संगस्य रंगा यहः। उन्माद्यद्यवहरा बल स्य कुलिशाकार स्त्रिलोकी तल स्माम्यत्कीर्त्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोल्वणः ॥ ५० ॥ श्री मालेद्विज जानुयात्रिक कर स्यागो मया विग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे निःशेषसंनार्यं प्रदः। प्रोत्तुंगेस्य पराजितेश भवने सौवर्ण-कुम्भध्वजारोपी कल्पज मेखला वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला सभास्यां रवः कैलाश प्रतिमस्त्रिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः। येन क्षोणि पुरंदरेण कृतिना मानंद संवित्तये भाग्यं वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥ कर्णौ दान कथिर्वलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम मधुराकारश्च चिन्तामणिः। श्री मत्त्वाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णंति यत्तत्कीर्त्तेरपि नूतनस्य मन्मथद्भूमीभुजां सद्मसु ॥ ५३ ॥ स्फूर्जन्निर्झर झांकृतेन सुभगं तस्केतकीनां वनं मिश्री भूतमनेक कम्र कदली वृंदेन घत्तेऽत्र यः। आम्राणां विपिनं च देव ललना वक्षोरुह स्पर्द्धये योद्यस्त्रोत फलावली कवचितं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरौ मेरो स्तुल्यस्त्रिदश ललना केलि सदनं सुगन्धा द्रिर्नानातरु निकर सन्नाह सुभगः। नृपेणेंद्रेणेव प्रसृमर तुरङ्गोच्चय खुर प्रकं प्रोर्व्वी पीठ रतिरस वशात्तेन ददृशे ॥ ५५ ॥ तन्मूर्द्धिन त्रिदशेंद्र पूजित पदां भोज द्वयां देवतां चामुंडा मघटेश्वर ऋति विदिताम भ्यर्च्यंतां पुष्पांजलिः। नत्वा भ्यर्च्य नरेश्वरोय त्रिदशेस्या मंदिरे मंडपं क्रीडत्किंनर किन्नरी कल रवो न्माद्यन्मयूरी कुलं ॥ ५६ ॥ सम्वत् १३१९ त्रयोदश शते कोन विंशति मासि माधवे। शुक्रेऽक्षय तृतीयायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ संपल्लाभं घटयतु गुरुं कुंजि वक्त्रो गणेशः सिद्धिं देयादन्नि मत तमां चंडिका चारु मूर्त्तिः। कल्याणाय प्रभवतु सतां धेनु वर्गः पृथिव्यां राजा राज्यं भजतु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥ स श्रीकर्ण सप्तक वादि देवा चार्यं स्य शिष्योऽजनि रामचन्द्रः। सुशिष्यिनेयो जय मङ्गलो ऽस्य प्रशस्तिमेतां सुकृतां व्यधत्त ॥ ५९ ॥ भिषग्वर-विजय पाल-पुत्रेण नाम्यसीहेन लिखिता ॥ सूत्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसर्वायणोत्कीर्णा ॥

घटियाला ।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था यहां यथा वत प्रकाशित किया जाता है।

(९४५)

घटियाला ।

ओं सग्गापवग्गमग्गं पढमं सयलाण कारणं देवं । णीसेस दुरिअ दलण परम गुरु णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहुतिलओ पडिहारो आसी सिरिलक्खणोत्ति रामस्स । तेण पडिहार वंसो समुणइं एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विप्पो सिरि हरिअन्दो भज्जा आसित्ति खत्तिआ भद्दा । अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि रज्जिलो एत्थ ॥ ३ ॥ तस्सवि णरहड णामो जाओ सिरि णहडोत्ति एअस्स । तस्सवि तणओ ताओ तस्सवि जसवद्धणो जाओ ॥ ४ ॥ तस्सवि चन्दुअ णामा उप्पणो सिल्लुओ वि एअस्स । झोडोत्ति तस्स तणओ तस्सवि सिरि भिल्लुओ जाओ ॥ ५ ॥ सिरि भिल्लुअस्स तणओ सिरि कक्को गुरु गुणेहि गारविओ । तस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिविआसं हसिअं महुर भणिअं पलोइअं सोम्मं । णमण जस्स ण दीणं रोसो थोओ थिरा मेत्ती ॥ ७ ॥ णो जम्पिअं ण हसिअं ण कयं ण पलोइअं ण संभरिअं । ण ठिअं परिब्भमिअं जेण जणे कज्ज परिहीणं ॥८॥ सुत्था दुत्था वि पया अहमा तह उत्तिमा वि सोक्खेण । जणणि व्व जेण धरिआ णिच्चं णिअ मण्डले सव्वा ॥ ९ ॥ उवरोहराअ मच्छर लोहेहि णाअ वज्जिअं जेण । ण कओ दोण्ह विसेसो ववहारे कावि मणयं वि ॥ १० ॥ दिअवर दिण्णाणुज्जेण जेण जणं रंजिऊण सयलं पि । णिम्मच्छरेण जणिआ दुट्ठाण वि दण्डणिट्ठवणा ॥ ११ ॥

घनरिट्ठ मन्तिट्ठाणं थि पउराणं णिअकरस्स अब्भहिअं । लक्खं सयञ्च सरिसं तणं व सहु जेण दिट्ठाइं ॥ १२ ॥ णवजोव्वणरूअपसाहिएण सिंगार गुणग रुएण । जणवयणिज्ज मलज्जं जेण णेह संचरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरु तरुणाण तह सही गय वयाण तणओ व्व । इय सुचरिएहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेण सया सम्माणं गुण थुई कुणंतेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण धणनिवहं ॥ १५ ॥ मरु माडवल्ल तमणी परिअंका अज्जगुज्जरत्तासु । जणिओ जेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिऊण गोहणाइं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ जेण विसमे वडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धा रम्मा मायंदमहु अविंदेहि । वरइच्छुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्ठारसु समग्गलेसु चेत्तम्मि । णक्खत्ते विहु हत्थे बहुवारे धवल बीआये॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण हट्टं महाजण विप्पपय इवणि बहुलं । रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किति विद्धिए ॥२०॥ मद्दोअरम्मि एक्को बीओ रोहिन्स कुअगामम्मि । जेण जसस्स व पुंजाए एयथम्भा स-मुत्थविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिद्दलणं । कारविअं अचल मिमं भवणं भत्तीए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेएं भवणं सिद्धस्स धणेसरस्स गच्छम्मि । तह सन्त जम्ब अम्बय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नवं यौवनं । सौभाग्यं गुण भावन शुचि मनः क्षांति यशो नम्रता ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गापवर्गं मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं । निःशेष दुरित दलनं परम गुरुं नमत जिन नाथम् ॥१॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार वंशः समुन्नतिमत्र समाप्तः ॥२॥ विप्रः श्री हरिश्चंद्रः भार्या आसीत इति क्षत्रिया भद्रा । अस्य सुत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट नामा जातः श्री नाग भट इति एतस्य । अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंदुक नामा उत्पन्नः भिल्लुकोपि एतस्य । कोट्ट इति तस्य तनय. [illegible]
जातः ॥ ५ ॥ श्री भिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्विष्ठः । [illegible]
दुर्लभ देव्यामुत्पन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाशं हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं [illegible]
यस्य न दीनं रोषः स्थैर्यः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न [illegible]
न संस्मृतम् । न स्थितं न परिभ्रान्तं येन जने कार्यं परिहीनं ॥ ८ ॥ सुखिता दुःखिता [illegible]
अधमा तथा उत्तमा अपि सौख्येन । जननीव येन धृता नित्यं निज मण्डले [illegible]
उपरोध राग मत्सर लोभैरपि न्याय वर्जितं येन न कृतो [illegible]
मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञ येन जनं रंजयित्वा सकलमपि । [illegible]
नामपि दण्डनिष्ठापनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्ध समृद्धानामपि पौराणां [illegible]
लक्षं शतं च सदृशत्वेन तथा येन दृष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन [illegible]
गुणज्ञ कक्ककेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नैव संचरितम् ॥ १३ ॥ [illegible]
तथा सखा गत वयसां तनय इव । प्रिय गुणरितैर्नित्यं येन जनः पालितः [illegible]
येन नमता सदा सन्मानं गुणस्तुतिं कुर्वता । जल्पता च [illegible]
नियहः ॥ १५ ॥ मरुमाड वल्लत्र मणी परि [illegible] । जनितो येन [illegible]
सच्चरित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ नवीनत्वा योजनानि निरो [illegible]
येन विषमं वटनाणं [illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]
वृन्दैः । वेरल्लु पर्णाढ्या पुरा भूमिः कृता येन ॥ १८ ॥ [illegible]
ग्रहेषु चैत्रे नक्षत्रे विधु [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
महाजनं विप्र प्रकृति वणिज बहुलम् । रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं [illegible]
मण्डोवरे एको द्वितीयो रोहिन्स कूप ग्रामे । येन [illegible]
॥ २१ ॥ तेन श्री कक्कुकेन जिनस्य देवस्य दुरित निर्दलनम् । [illegible]
प्रतिपा सुख जनकम् ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible]
पौढनं । सौभाग्यं गुण प्राप्तं [illegible] ॥ २४ ॥

पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है। यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं।

(946)

ओं ॥ संवत १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोवंद भार्या धनी पुत्र केल्हा भार्या चापलदे गुरदे पुत्र जीवा जिणदास केल्हा पींडरवाड़ा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। साः जीवा श्रेयोर्थं सा० जीवा दिने २० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सीरोही नगरे। रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या वेलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास ---- बाई लाछल दे श्रेयोर्थं पींडरवाड़ा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं। श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आणंद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्रा० बा० लाछलदे श्रे०।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या वेलदे।

([illegible])

लाछलदे ममारदे पुत्र कोठारी तेज पाल [illegible] रतन श्री रामदास [illegible] दोहाला ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल [illegible] श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आणंद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान [illegible] प्रभवतु कल्याणमस्तु ॥

([illegible])

ओं ॥ संवत् १६०२ वर्षे माह वदि ८ गुरु श्री सिरोही नगरे [illegible] श्री दूदा [illegible] श्री विजय राज्ये प्राग वंशे सा पाचा भार्या गांगादे पुत्र सा — [illegible] भार्या [illegible] पुत्री [illegible] श्री पींडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं पाई गांगादे [illegible] श्री तपा गच्छ श्री कमल कलश सूरि शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

([illegible])

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे फागुण वदि ११ गुरु श्री सिरोही नगरे [illegible] श्री [illegible] सिंघ जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी [illegible] भार्या [illegible] पुत्र कोठारी [illegible] भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण श्री [illegible] करण — — — पींडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे आणंद विमल सूरि — — — —

([illegible])

ओंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारिः । श्री [illegible] पूर्ण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भट्टारक [illegible] — — — — [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] भवरकामद देवि नाम्नी ॥ २ ॥ [illegible] । [illegible]

(२६१)

समयो विनयो विर्ता खणो विजयते तनयौ तयोरिमौ ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्न रत्नाभिधो धनं । अनाथदुप जन मूलु – राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्विती- येंदु कांति कांत गुणोच्चयः । धरणः शरणं धीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी धारल देव्यौ जाये तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यो ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५—तेजा पासल वास जाल्हणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिता गुण बरु मल्याः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार शेखरः । पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला भिधः सुनु स्त- त्पुत्रो भावठोऽग्रठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सुचित्तः । लीलाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ मयणा देवी नाम सु देवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते द्वयो पेते शीलाद्युत्तम गुण कलिते ॥ ११ ॥ मयणा देवी तनुजो मनुजो चित चारु लक्ष्मणो पेतः । अमरो भ्रमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे धरा धीशे प्राज्य राज्यं – रीक – ॥ १३ ॥ आस्यामुभाभ्यां धनि पूर पाल लीलाभिधाभ्यां सदु- पासकाभ्यां । ग्रामेऽत्रिमे पींडर वाडकाख्ये प्रसाद --- विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥ विक्रमाद्बाण तर्काब्धि भूमिते वत्सरे तथा । फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिथौ ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्ध्य भ्युदयैक दायकः, श्री वर्द्धमान श्चरमो जिनेश्वरः । श्री सत्तपः संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आचर्यींदु समयादनया श्री वर्द्धमान जिन नायक मूर्त्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंत्र चैत्यं ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

(७११)

राज श्री अमर सिंह जी उपाश्रता देहनारा देहपी आरोहतो – कमनइ कायोछइ । आजक – वान देरा माहि घोलइ तिनइ गचइ र – गाल छइ संवत् १७२१ वर्षे मगसिर सुदि – ॥

वीरवाडा (सिरोही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

([illegible])

सं० १२१० वर्षे श्रे० महणा भा० कपूर दे० पु० जगमादेन भा० [illegible] पु० [illegible] देल्हा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः [illegible] गच्छे श्र० श्री [illegible] सूरि पट्टे श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगलं [illegible]

वसंत गढ़ (सिरोही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्त्ति पर ।

(लवन के दोनो तरफ पीठ पर)

([illegible])

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये वसंत पुर [illegible] [illegible] कारको प्राग्वाट व्य० झगड़ा भा० मेघादे पुत्र व्य० [illegible] भा० [illegible] पुत्र [illegible] पौत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट व्य० धणसी भा० हीरी पुत्र व्य० [illegible] भा० [illegible] पुत्र जायदेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] सोम सुन्दर सूरि तत्पट्टालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री [illegible] सूरि पट्टे प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेखर सूरि गुरुभिः ।

पाटडी (सिरोही)

([illegible])

सं० १२८८ वर्षे माघ सुदि १० गुरौ [illegible] श्री [illegible] [illegible] देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री जयत सीह देवो [illegible] ... [illegible]

श्रीमय ब्राह्मण प्रभृति पंच कुलेन महं सूम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर प्रकृत द्र० १ पाइलुकी मध्यात्। बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सागरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वर्षे जेठ सुदि १० सोमे अद्येह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आल्हण सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री पेता प्रभृति पंच कुलं शासन मभि लिख्यते यथा महं श्री पेताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - - श्री पार्श्व नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ साक्षि राउल० श्री अडिणक ब्राह्मण उव - ब्रजव - सोहण - - - वणारे सणा - - - - - - - - - कल्हा।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ॐ। श्री जिलमार्ग निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्मो ल (क्ष्मी) - राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां बंधु पद्म दिवाकरः वज्जुकस्तस्य पुत्र स्यात् नम्मराम्मे ततो परी ॥ अज्जु सुत गुणाढ्य वामनेन प्रसादनम्। दृष्ट्वा चक्रे यह जैनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्वत १०९१ - - - - सपुने -।

टयमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ़ वदि ५ गुरौ श्री नाणकीय गच्छे उयण सन्निधाने। श्रीपार्श्व-नाथ चैत्ये ॥ धनेश्वर पुत्रेण देव धरेण धीमता। संयुक्तेन यशोभद्र आल्हा पाल्हा

सहोदरैः । यसो अटकय पुत्रेण । कारितं यश धर्मेण सा पुत्र पौत्रादि युक्तेन धर्मार्थ हेतु सह मंना ॥ भगनी धारमदयाख्या । भ्रतश्चैव यशो भटः । कारितं संपर्के मार्भर्ता । रक्तोद्धृकृता मंडप ॥ छ ॥

वर्माणा (सिरोही)

(५५९)

संवत् १३५९ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - छ देशे वाप संघग्रामे महाराजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काले वर्त्तमाने सोलं० पाल्हण पु० रूपरसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोल० सी माट पु० कुमारपाल सो० माला पु० सोढ़ण त्रिभुवण पद्मा सोढ़रपाल सो० धूमण पर्व पायत् वणिन् सोढ़ा सर्व सोलंकी समुदायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० १ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ तथा धूलिया ग्रामे सो० नवण सोढ़ पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति गोधूम सेई १ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ तेलिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महोत्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दानत्वं पालनीयं च । आचंद्रार्कं । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

डाजनीतोड़ा (सिरोही)

(५६०)

संवत् १२ वर्षे ११ माह सु० १ श्रे० जिनू आम्बड प्रति धर्मगिक कूजर कोर्ड पतिना । पाऊ रतु ।

(५६१)

मन्दिर पर लपन लिंपेन करायी ।

नोदिया (सिरोही)

(962)

संवत् ११३० वैसाष सुदि १३ नंदियक चैत्य वाले वापी निर्म्मापिता शिव गणैः।

(963)

ॐ॥ सतिणि सील यंता च। सद्भाव भक्ति संयुता॥
जिन गृहे सेल स्तंभा द्वौ। मंडप मूले थापिताः॥ १॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर।

(964)

ओं॥ संवत् १२०१ भाद्रवा सुदि १० सोम दिने निवा भार्या वरा पुत्र मोतिणिया स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते॥ संवत् १२९८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुत रा० कमण श्रेयोर्थं पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः॥ श्री ---- सुरि श्री --।

कोटरा (सिरोही)

(966)

॥ पूर्वं कीरिटा ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय श्री विजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात वीर पल्या प्रा० साह सहदेव कारित प्रसादे पिप्पालचार्य श्री वीर प्रभ सूरिभिः स्थापितः। संवत् १२१५ वर्षे।

वरमांण (सिरोही)

([illegible])

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० [illegible] पुत्र सीह भा० २ पद्मल जाल्हू पुत्र पद्मसेन भा० [illegible] पुत्र [illegible] जिन युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

([illegible])

ओं० संवत १२२६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्माणीय गच्छे [illegible] सूरि पट्टे श्री नंदिश्वर सूरि पट्टे श्री विजय सेन सूरि पट्टे श्री [illegible] सूरि पट्टे श्री हेम तिलक सूरिभिः पूर्व गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरोही)

([illegible])

संवत १३०८ वर्षे उदे सीह सुत पद्म सीह ।

नाकरोडा [सिरोही]

([illegible])

श्री सुविधि जिन प्रासादात् नाकोड़ा मध्ये । संवत् [illegible] भट्टारिक श्री सत् रत्नसूरि प० कमल विजय [illegible]

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-न्नाथ सा० रुपमा सा० राजा लाधा संघा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रणछोड़ देवा देवा भगवान रामजी राजा जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई बांपी बाई अगी समस्त श्राविक श्राविकाई सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ॥

धवली [सिरोही]

(971)

॥ सं० । १९६१ वैशाख शुक्र ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंबा उमा सा । तलका वाला प्रमुख कारापितम् तस्यो परी ध्वज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश भट्टा० । श्री विजय महेंद्र सूरिश्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० डुंगर विजय वां० । नघु प्रमुख, इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरोही]

(972)

संवत् १६६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुसल कातिक चोमासु कीधु ठाणा: २ सीवेरा ग्रामे ।

जीरावल पार्श्वनाथ [सिरोही]

(973)

संवत् १२८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुंग सूरीणां पट्टोद्धरण श्री जय कीर्त्ति सूरीश्वर सुगुरूपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

(९७३)

हीरा सा० संग्राम सुत सा० सालहण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा० हीरा सा० पीमा सा० पूना सा० काला सा० गांगा सा० हीरा सुत सा० मान राज सा० काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर सिंह भार्या फउनिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ स्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्द्धमान भद्र मांगल्यं भूयात् ॥

(९७४)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कछ वर्या नगरे कोठारी धारउ भागत ग मानि श्री सरपति भा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उपकेश ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ श्रीं कटारिया गोत्र वरं महीपं नाम्नं पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर सुगुरु प्रदेयाः श्री छाजल नंदन मात्र भाई ॥ १ ॥

(९७५)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कछवर्या नगरे श्री उकेशवंश ज्ञातीय सा० धणकड़ भार्या सा० जयता भा० धा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोदसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात् ।

(९७६)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलूकी संताने सं० रतन भार्या श्रा० वीरू सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता। शुभं भवतु श्री पार्श्वनाथ प्रसादात ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज।

(977)

स्वस्ति श्री संवत् १४=१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे भट्टा० श्री रत्नाकर सूरी-णामनुक्रमेण श्री अभयसिंह सुरीणां पट्टे श्री जय तिलक सूरीश्वर पट्टाभरण भट्टा० श्री रत्न सिंह सूरीणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्वय मंडन श्रे० पेत सीह नंदन श्रे० देपाल सीह पुत्र श्रे० पोपा तस्य भार्या सं० प्रणउ देव्ये तयोः सुता सं० वादा सं० दादा सं० मूदा सं० दूधाभिधै रेतैः कारि।

(978)

स्वस्ति संवत १५०८ वर्षे आषाढ़ सुदि १२ गाने सु० झाला सुहडा नरसी भीमा मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांचा सूरा नित्य प्रणम्य अष्टांग सद्भुद्भ।

(979)

ॐ॥ सं० १८५१ वर्षे आसाढ़ सुदि १४दिने श्रीजीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार कारापितः सकल भट्टारक पुरंदर भट्टारक जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ – श्वर राज्येन जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया परचीवी माल लीयो श्री जीरावल वास्तव्य सु०। भजा। को। दूला। सा० कला। सा० रमा। सा० सचा। सा० जोपन सा० कपला। सा० वारम। सा० रामल। – – – पकी काम कारापितः। जोसी तुरगा। भ्रात राजा आभा सकलः॥

श्री अंझारा पार्श्वनाथ ।

(६६७)

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ बुधे येषां [illegible] सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री [illegible] भिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडले बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश [illegible] पुस्तक कोश समर्पण डावराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारण प्रमि [illegible] प्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंज तीर्थ मुंडकाभिधान कर निवर्त्तनं [illegible] निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनं [illegible] निवारणं [illegible] प्रवर्त्त तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद [illegible] निर्वाणां शरीर संस्कार स्थानासन्न फलित सहकारणां श्री हीर विजय सूरीश्वराणां प्रति दिनं दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दर्शनादि [illegible] स्तूप सहिताः पादुकाः कारिताः पं० मेघेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठिताश्च [illegible] भट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः श्री श्री विमल हर्ष गणि श्री [illegible] श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पूज्यमानाश्चिरं नंदतु [illegible] पद्मानंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं भवतु ॥

श्री कापड़ा पार्श्वनाथ ।

([illegible])

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथौ सोमवारे महाराजाधिराज [illegible] गजसिंह विजय राज्ये ऊकेश वंशे भाण्डागारिक गोत्रे [illegible] भार्या [illegible] पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोढा पौत्र [illegible]

परिवार सहितेन श्री श्रीकर्पटहेटके स्वयंभु पार्श्वनाथ चैत्ये श्री पार्श्वनाथ ... ...
... ...सिंह सूरि पट्टालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः सुप्रसन्नो भवतु ।

अलवर ।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है ।

(982)

सं० १२५५ माघ सुदि ६ - - - - ।

(983)

सं० १२८४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - - वंशे पिता महो प्याऊपिउ पितृ सीला श्रेयोर्थं पुत्र नाग त्रिन् - न भ्रा० जागश्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्श्वनाथो बिंबं कारितः । प्रतिष्ठित श्री पार्श्वदेव सूरिभिः ।

(984)

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानंदित गच्छे श्रे० १ साला भार्या सिंगारदेवी पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री सिंहदत्त सूरिभिः ।

(985)

सं० १३२४ वैशाख सुदि ३ धरुपति कुलेन साणे छोता - - - - -

(986)

सं० १३५८ जेष्ठ वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग - । गोत्रे - - - सा० भिंम भा सिर पाल भार्या पश्र जीन्हा मणि चंद्र साहड वाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थे श्री शांतिनाथ बिंब का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० - - उ० [illegible] गोत्रे सा० [illegible] पु० [illegible] भा० सोनादे - - - - - - - शांति नाथ बिंब - - - - - - -

([illegible])

सं० १४९९ वर्षे मागसिर सुदि ५ [illegible] गोत्र सा० [illegible] [illegible], सा० [illegible] श्री आदिनाथ बिंबं करापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

([illegible])

सं० १५०१ पोष वदि ६ बुधे श्री [illegible] [illegible] [illegible] गोत्रे ठ० [illegible] भा० [illegible] सुत ठक्कुर पीमा भा० रुपिणी - - सुश्राविका पीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० [illegible] सुत लखमा धरमा धना वना देवी। करमा भा० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ बिंब कारापि [illegible] [illegible] प्र० [illegible] सर्व सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञातौ [illegible] गोत्रे सा० [illegible] [illegible] पु० [illegible] केन निज पूर्वजा [illegible] माता [illegible] श्री आदिनाथ बिंब कारि० [illegible] गच्छे भ० श्री देव सुंदर सूरि पट्टे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

([illegible])

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० [illegible] गोत्रे सा० [illegible] भार्या पाल्हादे पुत्र सं० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्री सुमतिनाथ बिंब कारि० प्र० श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः।

(९९२)

सं० १५१८ वर्षे अषाढ़ वदि ९ थानी भरतपुर ज्ञा० डीपोहीया --- सा अमली सा० हूर श्री पु० स० हापा स० धर्मा हापा धर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु० नाथ थांदा युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः।

(९९३)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे पेता पु० रूपा भार्या रजलदे पुत्रांपर अमरा ---- श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः।

(९९४)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० बाफण गोत्रे सा० -- दे पु० राउल पु० सुर जल सीहा --- मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पूज्य बिंबं करापितं प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः।

(९९५)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि २ गुरौ श्री माल ज्ञातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रूनू सुत हेमा हरराजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री मडूकर गच्छे श्री धन प्रभ सूरिभिः। मेडिपुर नगरे।

(९९६)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ़ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० मेहा पुत्र सा० हेकाकेन भ्रातृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः।

([illegible])

संवत् १५५८ वर्षे --सु० ११ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्री [illegible] गोत्रे [illegible] फहेन महराज सहित -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री ककसूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे छोड़ा गोत्रे [illegible] मेघ्राणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयार्थं श्री [illegible] सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ बिंबं का० प्र० श्री र --

([illegible])

सं० १६६१ वै० सु० जा० भ० सपटी ---।

([illegible])

सं० १९३१ माघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथौ १२ बुधे श्री ऋषभ जिन बिंबं कारितं [illegible] नगर वास्तव्य श्री संघेन भट्टार पूर्णिमियां विजय गच्छे [illegible] चंद सागर सूरि पट्टालंकार शोभित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं मधुबन मध्ये।

पटना म्युजियम।

([illegible])

संवत् १८०९ शाके १६७४ प्रवर्त्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे [illegible] तिथौ [illegible] श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठित भट्टारक श्री [illegible] सूरिभिः ।

(८७४)

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ५ दिने श्री शांतिजिन पादन्यासः। प्रतिष्ठितः खरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पान कुमारजी ॥

उपसंहार।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह "जैन लेख संग्रह" एक सहस्र लेख सहित सर्वप्रथममें समाप्त हुआ। इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है। जैनियोंकी प्राचीन कीर्त्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है। मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं। प्रार्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें। और पाठक जनोंसे निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान हैं, जिसको सुधारा नहीं गया है। पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है। जिन सज्जनोंने "संग्रहमें" मदद दी है उन सभीका मै कृतज्ञ हूं। यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा। अलमिति विस्तरेण।

कलकत्ता
ई० सं० १९१८

संग्रह कर्त्ता

श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची।

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
ओसवाल—	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ओसवाल (लघुशाखा)		[illegible]	[illegible]
गोत्र		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ओसवाल (वृद्धशाखा)	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ओसवाल (गोत्र)		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जाति-गोत्र	लेखांक
गांधि ...	५१-६२, ३५, २८८, २४७, २४१-२५५, २५१, ४२०, ६२२, ७०२
गुणिया ...	५४१, ५७३, ८२०
गोखरू ...	८६, ९३, ४८५
गोठिया ...	१४२, ३४०
[illegible]िया	१८
[illegible]ोया	५८१
[illegible]िया	४५८
[illegible]ेडिया	५५८
[illegible]ोया ...	१८९, ३०१, ४८१
[illegible]िया, ...	८२२
[illegible]ड़ा	५०१
[illegible] ([illegible]) ...	७०१, ३२४, ५८३
[illegible]	३१, ४२१, ४३६
[illegible]	६८७
[illegible]	५३३, ३१२
[illegible]	२८२
[illegible]िया	१२०, ४८७
[illegible]िया	३३
[illegible]	२४०
[illegible]	४८०
[illegible]	६२७
[illegible]िया	४
[illegible]	४६८, ६३८, ३०८
[illegible]	१३१
[illegible]	४१७
[illegible]	४३
[illegible] ...	१६८, ४२२, ५३१
[illegible]	१३५
[illegible]	५५७
[illegible]	७३६
[illegible] ...	३१, ४४, ५७, ६८, ८५, १४६, १४८, १५३-१६४, १६५, १६८-१७०, १७४, १७७, १८२, १८४, २०४, ३०४, ३२६, ३३६, ३४१, ३५२, ४३४, ४७३, ७१४
[illegible]िया	२४, ११२
[illegible]	२७०
[illegible]िया	५३८
[illegible]िया	१८१
[illegible]	३०३
[illegible]	३०७
[illegible]	११४, ३४१
[illegible]	४३१, ४११
[illegible] ...	५, ४६६, ५१२, ६१४, ६५४, ६११, ७११
[illegible]	५३७
[illegible]	४०९
[illegible]	६११
[illegible]	४६७
[illegible]	३६४, ४६०
[illegible]	६३२, ६९१
[illegible]	६३
[illegible]	१३३
[illegible]	१२१
[illegible]	६७१
[illegible]िया	४७

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
बहुरा	१८१, ४८८
बुहरा	५३६
बाप(फ)णा	२८१, ७३८, ७३९, ८८०
बाफेला	४३६
बांठीया	११८
बांभ	५२
बैताल	५६४
भणसाली	१८
भं०	५६८
भांडागारिक	३८१
भंडारी	१७, १४०, ५८३, ५१६, ६११, ८०१, ८८३
भुरि	५४८
भोर	१८८
भोटा	४६१
भोगर	८११
मंडोरा	३३६
मंडोवरा	६०१
मिठडीया	६०१, ६८१
मु(म)णोत	[illegible]
	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
[illegible]	[illegible]

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
श्रीमाल—	१, ३, ४, २४, ५०, ६६, १४८, १९४, १११, ११६, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], १८०, [illegible], ३८३, ४२७, [illegible], ४२३, [illegible], ४३८, ४३३, [illegible], ४४४, ४४६, ४८१, ४४४, ४५८, ५८६, ५१०, ५१६, ५३२, ५३६, [illegible], ५६१, ५६२, ५७४, ६०६, ६०८, ६१४, ६३८, ६५३, ६५३, ६७१, ६८२, ६६०, ६६१, ६०२, ६१०, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], ८६३, [illegible], [illegible], [illegible]
श्रीमाल (लघुशाखा) ...	४५, ६२८
श्रीमाल (वृद्धशाखा) ...	[illegible], ६८४

श्रीमाल (गोत्र)

ज्ञाति-गोत्र			लेखांक
[illegible]	...	...	४१२
[illegible]	...	...	२८४, ४१३
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	७२
[illegible]	...	...	३८
[illegible]	...	...	४३
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
फोफलीया	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
भांडिया	...	...	४२, ३२८, [illegible]
[illegible]	...	...	४१४
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
[illegible]	...	...	[illegible]
सिंधूड	...	...	[illegible]
श्री श्री	...		[illegible]
,, ,, [illegible] (गोत्र)	...	...	[illegible]
प्राग्वाट (पोरवाड)			[illegible]

ज्ञाति-गोत्र	शिलांक
प्राग्वाट (वृद्धशाखा)	[illegible]
[गोत्र]	
कोठारी	[illegible]
शुक्ल	[illegible]
दोसी	[illegible]
भंडारी	[illegible]
मुंडलिया	[illegible]
[illegible]	[illegible]
अग्रवाल [अग्रोतक]	
[गोत्र]	
गांगल	[illegible]
गोयल	[illegible]
मित्तल	[illegible]
सिंघल	[illegible]
[illegible]	
[गोत्र]	
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
खंडेलवाल	[illegible]
[गोत्र]	
[illegible]	[illegible]
सोहलवाल ...	[illegible]
ओसवाल	[illegible]
[गोत्र]	
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

ज्ञाति-गोत्र	शिलांक
[illegible]	[illegible]
नागर	[illegible]
नरसिंह	
[गोत्र]	
[illegible]	[illegible]
मीना ...	[illegible]
पल्लीवाल	[illegible]
पापडीवाल	[illegible]
श्रीश्रीमाल (श्रीमाल)	[illegible]
[गोत्र]	
[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
मुंहणोत	१३१, १५२
[illegible]	११०
[illegible]	२१६
[illegible]	१९
[illegible]	११२
[illegible]	८०
[illegible]	५४०, ८८६
राजपूत	
[illegible]	८४४
[illegible]	१४२
[illegible]	१४५
[illegible]	३४२
[illegible]	९५१
रघुग्राम्या	२११
बघेरवाल	२६८
[गोत्र]	
[illegible]	४३८
[illegible]	३२७
[illegible]	१२८
[illegible]	८४३
[illegible]	३२८
हूमड़	१४, ४२५, ५०१, ५३७, ८१६, १४८
[गोत्र]	
[illegible]	५२३
[illegible]	१६
[illegible]	१५

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
[illegible]	[illegible]
गोत्र (ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है)	
[illegible]	८८०
[illegible]	५४३, ७१५, ८१३
[illegible]	[illegible]
[illegible]	७१८
गोठी	५१०
[illegible]	८०१
[illegible]	[illegible]
[illegible]	६३०
[illegible]	६८१
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	१६२
[illegible]	[illegible]
[illegible]	५८६
[illegible] ()	[illegible]
[illegible]	५३१
[illegible]	१०२
[illegible]	१८७
[illegible]	[illegible]
[illegible]	७१५
[illegible]	६११
[illegible]	७११

आचार्यों के गच्छ और संवत की सूची।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	अंचल गच्छ।		[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४४७	मेरुतुंग सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	जयकीर्ति सू०	[illegible]		**तपागच्छ।**	
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	जयकेसरि सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]		**उपकेश गच्छ।**	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१५१७	देवगुप्त सू०	३३८
१५११	कक्क सू०	२११।४३१
१५१६	,,	९३
१५१९	,,	४०१।६२३
१५१९	,,	९३४
१५१९	,,	९४८
१५२४	,,	५८।२२६
१५३०	सिद्ध सू०	५०१
१५३६	कक्क सू०	३३४
१५३८	देवगुप्त सू०	६३५
१५४६	,,	३०
१५४७	,,	६७६
१५४६	,,	७१८
१५५८	,,	३३७
१५५७	,,	५६६
१५६१	कक्क सू०	६०४
१५६०	देवगुप्त सू०	१५८।४८७
१५६३	,,	२७
१५७१	सिद्ध सू०	९४
१५७५	,,	१२६
१६३४	देवगुप्त सू०	३२८
१६५७	सिद्ध सू०	८८८
१६८१	कुकुम सू०	७३८

द्विवंदणीक गच्छ ।

(उपकेश)

संवत्	नाम	लेखांक
१५२९	सर्व सू०	१८
१५६६	कक्क सू०	६६७

संवत्	नाम	लेखांक
१५०३	देवगुप्त सू०	११८
१५८३	कक्क सू०	७१७

उत्राध गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६८०	[illegible]	११०

[क] छोटीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०४	विजयराज सू०	७४४

कदुआमति गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६८३	... ...	४०१

कमलकलशा गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५७७	राज सू० कमलविजय गणि	१३०
१६११	विजयचंद्र सू० कुंवरविजय गणि	३०१

कृष्णर्षि गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३०७	नागचंद्र सू०	४०६
१४८२	जयसिंह सू०	५७६
१४८६	जयसिंह सू०	६०।३१८

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४७	नन्नसू० शि० कक्कसू० शि० सर्वदेव सू०	११०
१४८०	सर्वदेव सू०	४१६
१५०१	,,	४७७
१५१३	... ...	३७
१५०१	कक्क सू०	६०१

संवत्	नाम	दिनांक	संवत्	नाम	दिनांक
	खरतर गच्छ ।				

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	जिनचन्द्र सू०	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	जिनहर्ष सू०		[illegible]	,,	[illegible]
	साह अनूपचन्द	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
	साह पुण्यचन्द		[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	जिनचन्द्र सू०	[illegible]	[illegible]	मु० [illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	जिनविजय सू० [illegible]	
[illegible]	जिनहर्ष सू०	[illegible]		जिनदास सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]		भीरि:	
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	जिनचन्द्र सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	जिनदत्त सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	आचार्य [illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	जिनसौभाग्य सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible] सू०	
[illegible]	,,			साह [illegible]	[illegible]
	पं० [illegible]	[illegible]			
[illegible]	जिनसौभाग्य सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	जिनदत्त सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	जिनकीर्ति सू०	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	साह [illegible]	[illegible]	[illegible]	जिनकीर्ति सू०	[illegible]
				[illegible]	
		[illegible]		[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	जिनमुक्ति सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]			
[illegible]	जिनचन्द्र सू०	[illegible]	[illegible]	मु० [illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१८८८	जिनभद्र सू० पट्टे जिनचंद्र सू०	३४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८९७	जिनमहेंद्र सू० मुक्तानंदगणि	१००,३०५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
				[illegible] गच्छ।	
१९००	जिनमुक्ति सू० भा० जिनकीर्ति शिष्य पं० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९११	जिनमहेंद्र सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९१२	,,	२५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]
,,	सू० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९२८	जिन[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९७२	जिनरत्न सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चन्द्र गच्छ।		[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	पूर्णभद्र सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चंद्रप्रभाचार्य गच्छ।		[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	... ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	पिप्पल गच्छ।		[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible] गच्छ।		[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

সম্বৎ	নাম	শ্লোক
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
	[illegible] মুঃ	
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
,,	[illegible] মুঃ	[illegible]
,,	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]

সম্বৎ	নাম	শ্লোক
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	
	[illegible] মুঃ	[illegible]
	[illegible] মুঃ	
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
	[illegible] মুঃ	
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	
	পং [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
,,	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] মুঃ	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]

संवत्	नाम
[illegible]	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
	त्रिभविया गच्छ ।	
१५[illegible]	[illegible] सू० सं०	
	[illegible] सू०	[illegible]
	द्विवंदनिक गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	धर्मघोष गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
,,	महेंद्र सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	महेंद्र सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	पुण्यवर्धन सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	नागेंद्र गच्छ ।	
[illegible]	... ...	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	नाणकीय गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
—	[illegible] सू०	[illegible]
	नाणावाल गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	निगमा [illegible] गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	[illegible] गच्छ ।	
[illegible]	... ...	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	... ...	[illegible]
[illegible]	... ...	[illegible]
	[illegible] गच्छ ।	
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
	पार्श्वनाथ गच्छ ।	
[illegible]	... ...	[illegible]
[illegible]	... ...	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
,,	[illegible] सू०	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	मडुकर गच्छ।			**[illegible] गच्छ।**	
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
	[illegible] गच्छ।			**[illegible] गच्छ।**	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
	रुद्रपल्लीय गच्छ।			**बृहद् गच्छ।**	
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
	[illegible] गच्छ।		[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
			[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]		**[illegible] गच्छ।**	
[illegible]	[illegible]	[illegible]			
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible] गच्छ।			**संडेरक गच्छ।**	
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
		[illegible]	[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
	विद्याधर गच्छ।		[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत्	नाम	सं०
[illegible]	विजयरत्न सू०	[illegible]
[illegible]	विद्यासागर सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	सुविजय सू०	
	वीरचंद्र सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] गणि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	श्री सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	विद्यानन्द सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] गणि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]		